

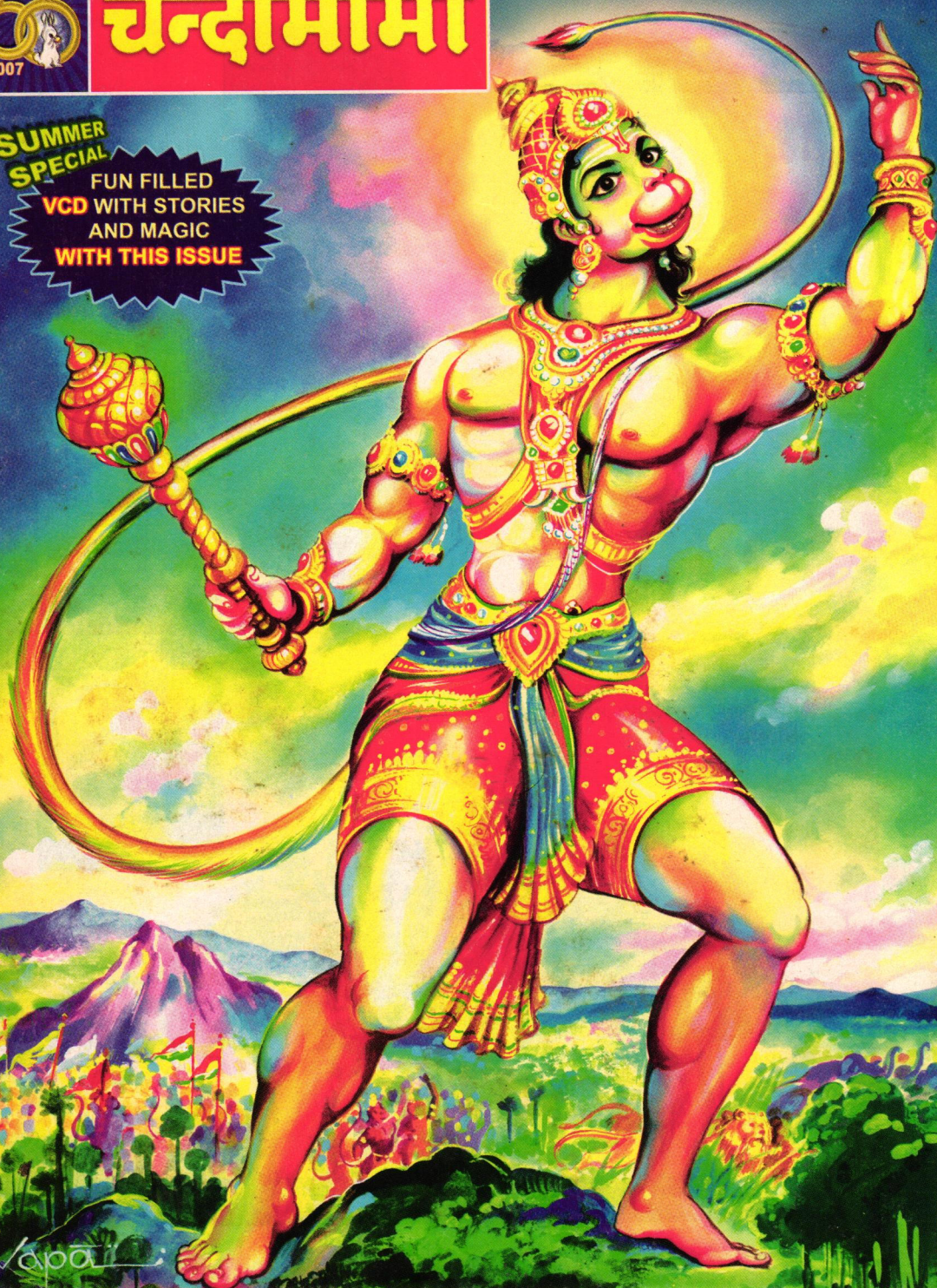
1947
2007

मई 2008 ■ Rs.30/-

चन्दामामा

**SUMMER
SPECIAL**

FUN FILLED
VCD WITH STORIES
AND MAGIC
WITH THIS ISSUE



Vapaa

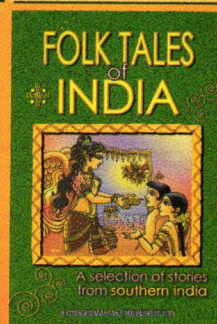
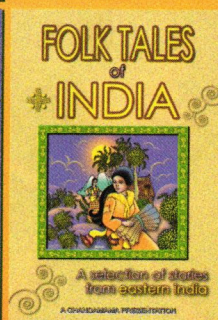
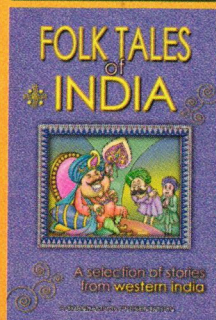
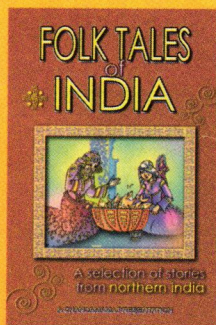


Presents

Folk Tales of India

An exclusive collection from the land of stories.
Stories popularly circulated among the people of
the four regions of our country.
A compendium worth preserving.
Rs. 50 each

Available soon in leading bookstores!



Chandamama India Ltd., JVL Plaza, 6th Floor, 626 Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018



बाटा के स्कूल-उत्पादों को खरीदें अपने साथ बेन १०TM स्कूल ले जायें

*Original MRP of sipper is Rs. 79/-. Offer valid till stocks last Bata school shoes available without this offer also.



अपनी खरीददारी पर
एक बेन १० सिपर*
लीजिए

सिर्फ २५ रु. में



*Terms and Conditions Apply.

Bata
SCHOOL SHOES

**CARTOON
NETWORK**

TM & © Cartoon Network.
(s08)

To win more BEN10 Goodies SMS Bata CM <space> Name <space> Age to 58888



चन्दामामा

सम्पुट-५९ मई २००८ सञ्चिका - ५

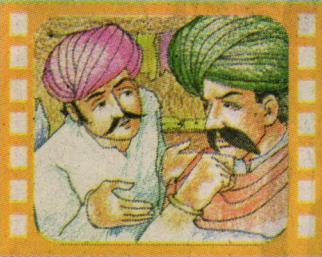
विशेष आकर्षण



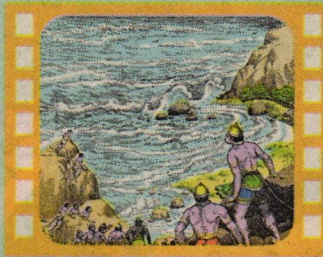
योग्य राजा
(बेताल कथाएँ) ...१९



चिरस्मरणीय ऐतिहासिक
घटनाएँ-८ ...३६



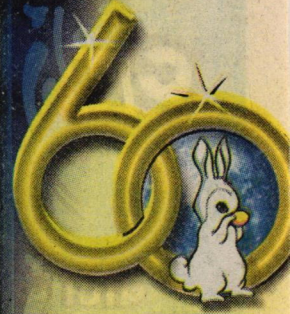
राजस्थान की
एक लोक कथा ...४५



रामायण
(किष्किन्धा काण्ड-७) ...५७

अंतरंग

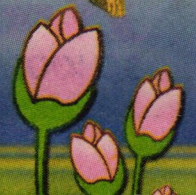
- | | |
|---|------------------------------------|
| * पाठकों का पत्रा ...०६ | * गर्मी और धूल ...४० |
| * ऊँचे घर का दामाद ...०७ | * ओलिम्पिक ...४४ |
| * आधा-आधा ...१२ | * चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१ ...४९ |
| * भयंकर घाटी-३३ ...१३ | * पशुपति निष्कर ...५० |
| * कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी-८ ...२६ | * जातक कथा ...५४ |
| * महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-२८ ...२८ | * सारंग का वैराग्य ...६३ |
| * भारत दर्शक ...३० | * अपराजेय गरुड ...६७ |
| * बीरबल की कहानियाँ-९ ...३१ | * भारत के धरोहर स्थल ...७१ |
| * समाचार झलक ...३५ | * बच्चे अखबार की सुखियों में ...७२ |
| | * आप के पन्ने ...७३ |
| | * चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४ |



संस्थापक
बी. नागि रेड्डी
और चक्रपाणि

अमर वाणी

जो लोकनीति के
ज्ञाता हैं, उन्हें
कोई निंदा करे या
प्रशंसा, संपत्ति
आवे या न आवे,
मृत्यु चाहे इस
क्षण में आवे या
युगों के अंत तक
न आवे, साहसी
व्यक्ति न्याय मार्ग
से एक कदम भी
नहीं हटते।





वन्य जीवन का संरक्षण

सन् १९०० के प्रारम्भिक वर्षों में भारत के जंगलों में ४०,००० बाघ थे। जो भी हो, सन् १९७२ में प्रथम गणना के अनुसार सिर्फ १८२७ बाघ पाये गये जो एक निराशाजनक और विस्मयकारी संख्या थी। वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम तब तक लागू हो चुका था। बाघ को भारत का राष्ट्रीय पशु घोषित किया गया और १९७२ में सरकार ने इसे विलुप्त होने से बचाने के लिए प्रोजेक्ट टाइगर योजना की शुरुआत की।

प्रोजेक्ट टाइगर योजना के अन्तर्गत वन्य पशुओं, विशेष रूप से विलुप्त हो रहे पशुओं के संरक्षण का प्रावधान था। पशु संकटापन्न कैसे हो जाते हैं? एक कारण था अन्धाधुन्ध पोचिंग अथवा अनधिकार शिकार। जो भी हो, वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम लागू होने पर पोचिंग को कानून द्वारा वर्जित कर दिया गया। फिर भी कुछ अंश तक चोरी छिपे शिकार-चोरी होती रही। दूसरा, हाल के दिनों में जंगलों से होकर बहनेवाली नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं। प्रदूषित जल को पीने के कारण होनेवाले खतरों से पशु वाकिफ नहीं होते।

तीसरा, मानव आबादी में वृद्धि के कारण आवासीय स्थलों की खोज में जंगलों का अतिक्रमण किया जा रहा है, जिसके फलस्वरूप अपने स्वाभाविक घरों को छोड़कर वन के पशु निकटवर्ती नगरों में भटक जाते हैं, जिन्हें पकड़कर मार दिया जाता है।

बेशक कुछ ऐसे भी उदाहरण हैं, जैसा कि एक घटना १९८१ में हुई थी, जब एक मुग शावक को गाँववालों ने पकड़ लिया था, पर, उसे मारने की बजाय उन लोगों ने उसे प्रोजेक्ट अधिकारियों को सौंप दिया था। उसे पश्चिम बंगाल के साल्ट लेक स्थित डियर पार्क में रखा गया। अनेक बार ऐसी घटनाएँ सुनने में आती हैं जब जंगल के हाथी, तेन्दुए और चीते शहरों में भटक जाते हैं, और फिर जंगल के अधिकारियों द्वारा उन्हें पकड़कर निकटवर्ती जंगलों या अभयारण्यों में भेज दिया जाता है।

यह निर्विवाद है कि पशुओं का मुख्य लूटेरा स्वयं मानव जाति है। परन्तु, अब हमें यह समझने का समय आ गया है कि मानव जाति की सुरक्षा पूर्ण रूप से पशु और वनस्पति जीवन की सुरक्षा पर ही निर्भर है।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : <http://www.chandamama.com>





चन्दामामा

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

Chief Executive Officer : L. Subramanyan

Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das

Consultant Editor : K. Ramakrishnan

Artists : K.C. Sivasankaran (Sankar)

Gandhi Ayya, P. Mahesh

Layout Design: R. Sudha

Assistants : D. Revathy, B.A. Hemalata Malini

Research : R. Vaasugi

CIRCULATION TEAM :

Chennai : T N Ravi Shankar, *National Sales Manager*

Mobile +91 99620 70014

email : ravishankar.tn@chandamama.com

Fazal Khan, Manager-Circulation & Institutional Sales

Mobile +91 99625 67860

email : fazal.khan@chandamama.com

Mumbai : Rajendra K Jadhav, *Asst. Manager - Circulation*

Mobile +91 9271720669

CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry

Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road

No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093

Phone +91 22 28312872 / 28311849

email : rajendra.jadhav@chandamama.com

New Delhi : Sushil Sharma, *Circulation Manager-North*

Mobile +91 98719 30767

CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre,

C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001

Bangalore : P. Murali, *Asst. Circulation Manager -Karnataka*

Mobile +91 94488 36952

CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street

Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage

Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000

email : murali.p@chandamama.com

Kolkata : Ananth Prakash, *Circulation Manager-East*

Mobile +91 98351 82202

email : ananth.prakash@chandamama.com

Advertisement : email : sales@chandamama.com

Online and Interactive : Surajit Agarwal

Mobile +91 99620 70015

email : surajit.agarwal@chandamama.com

Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,

JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet

CHENNAI-600018, Phone +91 44 2432 2101/02,

Fax +91 44 2432 2103

email : chandamama@chandamama.com

Website : www.chandamama.com

शुल्क:

भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक
१८० रुपये। अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया
लिमिटेड' के नाम भेजें।

पाठकों का पन्ना

पुरस्कृत पत्र :

मैं चन्दामामा का नया पाठक हूँ। मुझे पहले
इसके बारे में पता नहीं था। एक बार अध्यापक
जी ने चन्दामामा के बारे में व उसमें प्रकाशित
कहानियों के बारे में बताया। एक बार किसी कारण से
शहर जाने के कारण बुक शॉप पर मुझे चन्दामामा आसानी
से मिल गई। मेरे दादाजी ने इसके ऊपर का आवरण देखते
ही पत्रिका में प्रकाशित कहानियों को सुनाने के लिए कहा।
मैं अब इसका नियमित पाठक बन गया हूँ। मुझे और भाई
को धार्मिक एवं ऐतिहासिक कहानियों का शौक है। केवल
चन्दामामा में ही ऐसी कहानियाँ प्रकाशित होती हैं। वाकई
में इसकी जितनी प्रशंसा की जाए, वह कम है। गंगा रूपी
चन्दामामा में एक बार डुबकी लगाते ही कुछ अलग सा
एहसास हुआ। ऐसी पत्रिका निकालने के लिए 'चन्दामामा
टीम' को साधुवाद।

-महेन्द्र मण्डा, नयापुरा

बचपन से लेकर आज तक मैं चन्दामामा की पाठिका
रही हूँ। यही नहीं, मेरे माता-पिता भी बहुत चाव से
चन्दामामा पढ़ते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक और साहित्यिक
रंगों से लबरेज इस पत्रिका में मिट्टी की वह महक है जो
आज के बालक-बालिकाओं को उनकी जड़ों की ओर
लौटने में सहायक बनें। पत्रिका के चित्र जितने आकर्षक
और रंगीन होते हैं, उसकी पाठ्य सामग्री भी उतनी ही
समृद्ध और सहज।

इस तकनीकी और भौतिकता के युग में चन्दामामा
को जब हम हाथ में लेते हैं तो ऐसा लगता है कि आज भी
वह सरलता, सहजता और संस्कार जीवंत हैं जो हमें नानी-
दादी की कहानियों में दिखाई पड़ते थे।

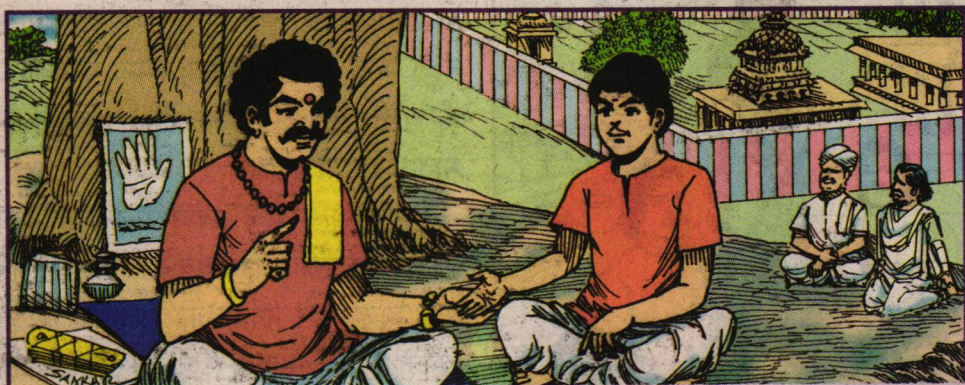
- अदिति गौड़, भोपाल

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

मई २००८

6

चन्दामामा



ऊँचे घर का दामाद

मनोहर देखने में बहुत सुंदर था। थोड़ी-बहुत शिक्षा भी पायी। उसके माता-पिता ने माधवी से उसका विवाह करना चाहा। मनोहर, माधवी को बचपन से जानता था, इसलिए वह भी उससे शादी करने के पक्ष में था। उसने यह बात माधवी से कई बार बतायी भी।

एक दिन एक ज्योतिषी ने उसके हाथ की रेखाएँ देखकर कहा, “शीघ्र ही तुम एक ऊँचे घर का दामाद बनोगे”। मनोहर में धनवान बनने की तीव्र इच्छा थी। ज्योतिषी की भविष्यवाणी ने उसपर बहुत प्रभाव डाला। माधवी के पिता धनी नहीं थे। इस वजह से मनोहर पशोपेश में पड़ गया कि माधवी से शादी करूँ या नहीं। तब उसके माता-पिता ने उसे समझाया, “ऊँचे घर का दामाद बनने की इतनी इच्छा है तो तुम्हें पहले बड़ा बनना होगा। माधवी से शादी करोगे तो तुम

सुखी रह सकते हो। ज्योतिषी की अंतर्संत बातों में आकर जीवन बरबाद मत करो।”

इसके दूसरे ही दिन उस गाँव का भूखामी रत्नाकर उनके घर आया। गाँव भर में वही सबसे बड़ा धनवान था। उसने प्रस्ताव रखा कि मनोहर की शादी उसकी बेटी कल्पना से की जाए तो तीन एकड़ भेंट में दूँगा। मनोहर को ज्योतिषी की बातों पर विश्वास हुआ और उसने कल्पना से विवाह करने का निश्चय किया।

माधवी को यह बात जानकर बहुत दुख हुआ। उस दिन उसने ग्रामदेवी के मंदिर के पास मनोहर को देखा तब उससे कहा, “बचपन से तुम मुझे चाहते हो, पर अब शादी से इनकार कर रहे हो, क्योंकि कहीं और शादी करने से तुम्हें दहेज मिलेगा। पर क्या यह उचित है?”

“बचपन से क्या मैंने तुम्हें चाहा? तुम्हारी

“वसुंधरा”



आँखें बिल्ली की आँखें जैसी हैं। कल्पना की सुन्दरता मुझे बहुत अच्छी लगी। इसीलिए मैं उससे शादी करने जा रहा हूँ”, मनोहर ने कहा।

माधवी में रोष भर आया। उसने क्रोध-भरे स्वर में कहा, “कल्पना के पिता ने दहेज में तीन एकड़ देने का क्या प्रस्ताव रखा, मेरी आँखें बिल्ली जैसी हो गयीं। अगले जन्म में तुम बिल्ली बनकर जन्म लगे।” कहकर वह तेजी से चली गयी।

मनोहर ने, जो हुआ, माता-पिता से बताया। जब उसके माता-पिता को मालूम हुआ कि माधवी खुद मनोहर के जीवन से हट गयी तो उन्होंने पुरोहित को बुलवाकर मुहूर्त निश्चित किया।

इसके दूसरे ही दिन उनके दूर का रिश्तेदार माधव परिवार सहित उनके घर आया। वह लंबे अर्से से राजधानी में राजा के आस्थान में काम

कर रहा था। उसे और उसकी पत्नी को मनोहर बहुत पसंद आया। उन्होंने अपनी बेटी वंदना की शादी उससे करना चाहा और यह बात उसके माता-पिता से कही।

मनोहर के पिता ने जब उनसे कहा कि कल ही उसकी मंगनी है तो माधव ने कहा, “हमें सब कुछ मालूम है। मनोहर की शादी माधवी से होनेवाली थी। जब उसी से शादी नहीं हुई है, तब कल्पना के बारे में सोचने की क्या ज़रूरत है, जिसके साथ मंगनी भी नहीं हुई। रत्नाकर ने तुम्हें तीन एकड़ देने का वचन दिया है न? खेत में काम करना और फसल उगाना कोई आसान काम नहीं है। उसके लिए समय पर वर्षा होनी चाहिए, बाढ़ आनी नहीं चाहिये। मैं मनोहर को राजा के आस्थान में नौकरी दिलवाऊँगा। चाहे बारिश हो या बाढ़, उसका वेतन तो हर महीने बराबर मिलता रहेगा। मेहनत ज़्यादा करनी नहीं होगी। इसके अलावा इसकी, बड़े-बड़े लोगों से दोस्ती होगी। खुद सोचिये।”

मनोहर के माता-पिता निश्चय कर नहीं पाये कि क्या किया जाए। किन्तु ज्योतिषी की बातों पर अटल विश्वास रखनेवाले मनोहर ने वंदना से शादी करने का निर्णय किया। जब कल्पना को यह बात मालूम हुई तब वह मनोहर के घर आकर वंदना से मिली और कहा, “बचपन में ही यह तय हुआ था कि मनोहर की शादी माधवी से होगी, पर मनोहर ने मुझे चाहा। नौकरी का लालच दिखाकर हमें अलग करना सही नहीं।”

वंदना ने मनोहर से पूछा, “क्या नौकरी पाने के लिए ही तुम मुझे शादी करनेवाले हो?”

“ऐसी कोई बात नहीं। कल्पना देखने में सुंदर है पर तुमने सुन लिया न कितनी घमंडी है। घायल कुत्ते की तरह भौंकती रहती है। तुम मुझे बहुत अच्छी लगी इसीलिए मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।” मनोहर ने कहा।

उस समय कल्पना भी वहाँ मौजूद थी। वह भड़क गयी और बोली, “वंदना के पिता ने राजा के आस्थान में नौकरी दिलवाने का क्या वादा किया, मेरी बातें कुत्ते के भौंकने के समान हो गयीं। तुमने मेरा घोर अपमान किया। याद रखो, अगले जन्म में तुम कुत्ता होकर जन्म लोगे।” यों कहकर वह चली गयी।

जो हुआ, मनोहर की माँ को मालूम हो गया। उसने बेटे को सावधान करते हुए कहा, “तुम जिससे शादी करना चाहते हो, करो, पर कन्याओं के शापों का शिकार बन रहे हो। यह सही नहीं है।”

मनोहर ने इसपर हँसते हुए कहा, “वहाँ राजा जैसा जीवन मेरी प्रतीक्षा में है तो इनके शापों की परवाह क्यों करूँ। उन्हें बकने दो, भूँकने दो, मुझे जो करना है, करके रहूँगा।”

इसके बाद माधव ने प्रस्ताव रखा कि मंगनी की तारीख निश्चित की जाए। परंतु, मनोहर के माता-पिता ने कहा, “मंगनी की कोई जरूरत नहीं है। बेटे को राजा के आस्थान में नौकरी मिलते ही सीधे शादी करा देंगे।” माधव ‘हाँ’ कहकर मनोहर को साथ ले गया।



राजा के आस्थान में माधव छोटा कर्मचारी ही था, पर बड़े-बड़े लोगों से उसका परिचय था जिनमें से एक था, प्रमुख व्यापारी सतीश सक्सेना। माधव मनोहर को लेकर उसके पास गया और पूरा विषय बताकर कहा, “आप राजा को इसकी सिफारिश करके आस्थान में नौकरी दिलवाइयेगा। मेरी बेटी की शादी हो जाए तो मैं सदा आपका कृतज्ञ बना रहूँगा।”

मनोहर को देखकर सक्सेना को लगा कि क्यों न मनोहर को अपना दामाद बना लूँ। उसकी बेटी जलजा भी मनोहर की सुंदरता पर रीझ गयी।

सक्सेना ने जब मनोहर से शादी की बात की तब उसे लगा कि ज्योतिषी की भविष्यवाणी अचूक है। इसलिए मनोहर, जलजा से शादी करने को तैयार हो गया।

इस विषय को जानकर वंदना जलजा के पास गयी और उससे कहा, “बचपन के दोस्त माधवी को इसने ठुकराया, कल्पना से शादी करने से इनकार कर दिया और मुझसे शादी करने के लिए तैयार हो गया। अब वह तुमसे शादी करने पर आमादा है। ऐश्वर्य का लोभ दिखाकर हम दोनों को अलग करने पर तुल गयी हो तुम।”

जलजा ने तुरंत मनोहर को बुलवाया और उससे पूछा, “तुमने पहले ही दो कन्याओं से शादी करने की सहमति दी। फिर इस वंदना पर लड्डू होकर शादी करने का निश्चय किया। क्या मेरे वैभव को देखकर ही मुझसे शादी करना चाहते हो?”

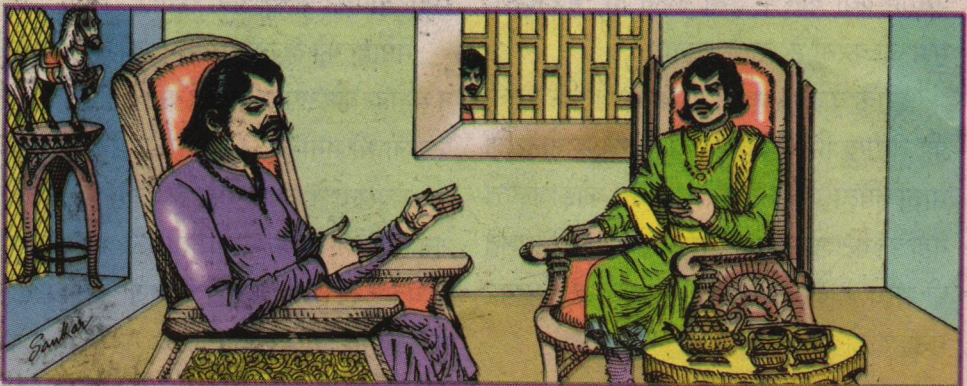
“नहीं, नहीं, मुझे संगीत से बड़ा प्रेम है। वंदना का गाना गधे का स्वर-सा लगता है। तुम बहुत अच्छा गाती हो, इसलिए तुमसे शादी करना चाहता हूँ”, मनोहर ने कहा।

वंदना एकदम क्रोधित हो उठी। “जलजा का ऐश्वर्य देखते ही मेरा स्वर तुम्हें क्या गधे का स्वर हो गया? तुम अगले जन्म में गधा होकर जन्म

लोगे”, कहती हुई वन्दना क्रोधित होकर वहाँ से चली गयी।

इसके बाद अच्छे मुहूर्त पर जलजा और मनोहर की शादी वैभवपूर्वक संपन्न हुई। शादी के बाद रत्नाकर के एक साथी व्यापारी ने पूछा, “तुमने अपनी बेटी की शादी ऐसे कंगाल से क्यों कर दी?” रत्नाकर ने इसपर हँसते हुए कहा, “मेरी बेटी बात-बात पर नाराज़ होती रहती है। उसका स्वभाव ही ऐसा है। कंगाल से शादी हो जाए तो बिल्ली की तरह पड़ा रहेगा। मेरे पास अपार संपदा है। कंगाल से शादी हो जाने पर कुत्ते की तरह भौंकते और घर की रखवाली करेगा। मेरे घर में ज्यादा काम करना पड़ता है। कंगाल हो तो गधे की तरह काम करेगा। यही है रहस्य। अब जान गये मनोहर से मैंने बेटी की शादी क्यों की?”

उनकी बातों को मनोहर ने भी सुन लिया। वह जान गया कि इस घर में उसका क्या स्थान है। तीन कन्याओं के तीन तरह के शाप सच निकले। अब वह पछताने लगा। पर अब पछताने से क्या लाभ!



Spend this summer with your favourite Companions

Follow the adventures of the unknown
Prince Arya with his forest friends.
Read the **legend of Garuda**, the invincible warrior.
Solve mysteries in the jungle with super sleuths,
Eli and Puli, of the Detective Duo
Intelligence agency.

Get your
copies
NOW!

Rs.
40

Rs.
60

Rs.
50

Chandamama subscribers
buying all three titles will
get a 20% discount

Available with vendors and leading bookstores.

आधा-आधा

चावल के बोरो को एक-एक करके पीठ पर ढोता हुआ वह दुकान में पहुँचा रहा था। एक बोरा जमीन पर गिर गया। चावल जमीन पर बिखर गया। चावल को वह बोरे में फिर से भरने लगा। भरे बोरे को वह उठा नहीं पा रहा था। दुकान के मालिक रंगनाथ ने यह देखा और कहा, “लखन, तुम बूढ़े हो गये हो। बोरो को ढोना अब तुम्हारे बस की बात नहीं है। कल से काम पर मत आना।”

“काम न हो तो पत्नी और बच्चों को क्या खिलाऊँगा। इतने दिनों तक आपके पास काम करता रहा। कोई आसान काम हो तो दीजिये।” लखन ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

“इस उम्र में कोई भी काम कैसे कर पाओगे? भगवान का नाम लेकर घर में बैठ जाना।” कहता हुआ रंगनाथ चला गया।

लखन को लगा कि पूरा लोक अंधेरे से भर गया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करूँ। घर लौटने के बाद उसने पत्नी से यह बात बतायी। तब उसकी आँखें आँसुओं से भर गयीं।

“क्यों बेकार रोते हो? जब तक बदन में ताकत थी, हमारा पालन-पोषण किया। आज से हम मिल-जुलकर जीयेंगे”, पत्नी ने कहा। “कैसे?” लखन ने आँसू पोंछते हुए पूछा।

“तुम मजदूरी लाते थे, उसमें से थोड़ा बचाती रही। अब मेरे पास सौ अशर्कियाँ हैं। उनसे एक दुकान खोलेंगे तो गाड़ी चलती रहेगी।” पति को सांत्वना देती हुई पत्नी ने कहा।

लखन को लगा कि उसके मुँह से उन देवी-देवताओं की बातें निकल रही हैं, जिनकी वह पूजा करता है। वह तो समझता था, दिन गुजर जाए तो वही बहुत है। पत्नी की क़िफ़ायत अब उनके उपयोग में आ रही है, यह सोचकर वह शांत हो गया, उसकी परेशानी दूर हो गयी। - कृष्ण भूपति





भयंकर घाटी

33

(केशव और उसके साथियों को भूत भगानेवालों ने पकड़ने की सोची। परन्तु रात के समय उनकी आँखों में धूल झाँककर वे पहाड़ की चोटी पर पहुँचे। कुछ दूरी पर उनको एक भयंकर घाटी दिखाई दी। जब वे एक बेल पकड़कर घाटी में उतर रहे थे तो भूत भगानेवालों का गिरोह आया और वे उन बेलों को काटने लगे। बाद में:)

जब उन्होंने देखा कि भूत भगानेवाले लोग, उस बेल को काट रहे हैं, जिसके सहारे वे नीचे उतर रहे थे, तो केशव, जयमल्ल और जंगली गोमान्ना डर के कारण काँप उठे। परन्तु अगले क्षण ही उनको धीरज भी हुआ। “इतने कष्टों के सहने के बाद, इतनी दूर आने के बाद हम यहाँ मरने जा रहे हैं, इस पर मैं विश्वास नहीं करता।” केशव ने भारी आवाज में कहा।

“तुमने ठीक ही कहा है, केशव, मेरे पैर को टिकने की कोई जगह मिल गई है। तुम बेल पर अपना भार कम करो और देखो कि हाथ को कुछ मिलता है कि नहीं। अच्छा होगा, यदि हम बेल को किसी पत्थर से बाँध दें। तब अगर बेल टूट भी गई, तो हम यकायक घाटी में नहीं गिरेंगे।” जयमल्ल ने कहा।

जयमल्ल अभी कह ही रहा था कि जंगली

चन्दामामा



गोमाना, जो तीनों से ऊपर था, जोर से चिल्लाया, “इन दुष्टों ने बेल काट दी है।” फिर वह सिर के बल गिरा। उसके साथ, केशव और जयमल्ल की भी पकड़ ढीली हो गई। उन्होंने भी दो तीन बार हवा में कलाबाजियाँ खायीं। पर उन में से किसी ने भी, अपने हाथ की बेल नहीं छोड़ी। इस होशियारी ने ही उनको बचाया। पर आँख मुँदते ही फिर उनके शरीर पत्थरों को छू रहे थे। “बेल काट दी गई है, पर सौभाग्य से वे चोटी के नीचे के पत्थर से लिपट गई है। इसलिए बेल अभी तक लटक रही है और उसे पकड़े हुए हमलोग भी जीवित हैं।” जयमल्ल ने कहा।

केशव और गोमाना कुछ जवाब देने जा रहे थे कि पर्वत के शिखर से भूत भगानेवाले, जोर से चिल्लाने लगे, “ये दुष्ट, अब नीचे के पत्थरों पर

गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गये होंगे। जो कोई हमारे पक्षियों के पंख काटने आयेगा, उनकी भी यही गति होगी।”

उनकी आवाज से सारी घाटी गूँज उठी। बड़े-बड़े पेड़ों पर पैर फैलाये खड़े हुए गण्डभैरण्ड पक्षी, गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगे। कहीं एक शेर भी गरजा। इस भयंकर गर्जन और शोर को सुनकर केशव और उसके साथी सम्भले ही थे, कि कोई मानव स्वर, जैसे कोई क्रुद्ध हो उठा हो, सुनाई दिया। “किंकर! क्या यह हो हल्ला हो रहा है? शेर मृगराज भी, लगता है, उठ गया है।”

तुरंत एक और आवाज आयी, “जगभोजी गुरो। भूत भगानेवालों ने किसी को मारकर भयंकर घाटी में डाल दिया है। इसी कारण यह सब शोर हो रहा है।” “जो मरा है, वह ब्रह्मपुर राजा का गुरु तो नहीं है?” जगभोजी ने कहा।

“वे? इस भयंकर स्थान तक आना उनके लिए असम्भव है। यदि आ भी गये तो उनके यहाँ रास्ता मालूम करके आने से पहले ही हम राजकन्या से विवाह करके धन आदि लेकर, अन्तर्धान हो जायेंगे। उसके बाद, वे इस घाटी के गण्डभैरण्ड, अजगर और क्रूर जन्तुओं के शिकार होकर सड़ते रहेंगे।” किंकर ने कहा।

“हाँ, मगर राजकन्या? किंकर, वह तो तुम भूल ही गये हो। अमावस्या अभी तेरह दिन दूर है। तब तक मैं उससे नहीं मिल सकता। कहीं ऐसा न हो, कि वह हँस सुन्दरी, शोर शराबे से उठ गई हो?” जगभोजी ने कहा।

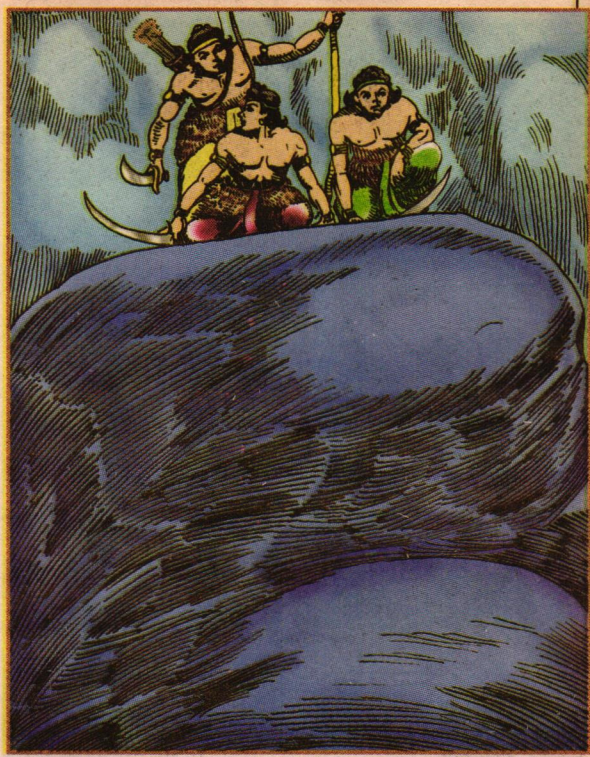
किंकर का जोर से हँसना सुनाई दिया। फिर उसने आवाज ऊँची करके कहा, “गुरु, वह कन्या कल्पकवल्ली, सुन्दर हँस नहीं है। उसका पिता, ब्रह्मपुर राजा और उसका गुरु उसकी रक्षा कर सकेंगे, अभी तक वह इसी भ्रम में है। इसलिए आपको हल्की नज़र से देख रही है। उसका इस भयंकर घाटी से भयभीत हो जाना अच्छा ही है।” किंकर ने कहा।

इसके बाद सब जगह खामोशी थी। घाटी के नीचे से आती हुई बातचीत को सुनकर केशव, जयमल्ल, जंगली गोमाना, आश्चर्य और भय से काँप उठे। उन्होंने आपस में कुछ कहना भी चाहा, पर किसी के मुख से आवाज तक न आयी। आखिर जयमल्ल ने काँपती हुई आवाज में पूछा, “क्यों, केशव, सुना?”

“सुना है। हम से पहले ही यहाँ कोई मान्त्रिक पहुँचा हुआ है, उसके अधीन, हमारे ब्रह्मपुर राजा की लड़की कल्पकवल्ली है। वह भी हम जिस धनराशि के लिए आये हैं, उसी के लिए आया हुआ है।” केशव ने कहा।

जयमल्ल ने कुछ भी न कहा। वह विचार में पड़ गया। सौभाग्यवश उनको नीचे कुछ पत्थर, पहाड़ से आगे की ओर निकले हुए दिखाई दिये। बेलों पर से वे चुपचाप उन पर फिसल गये और अन्धेरे में इधर उधर देखने लगे।

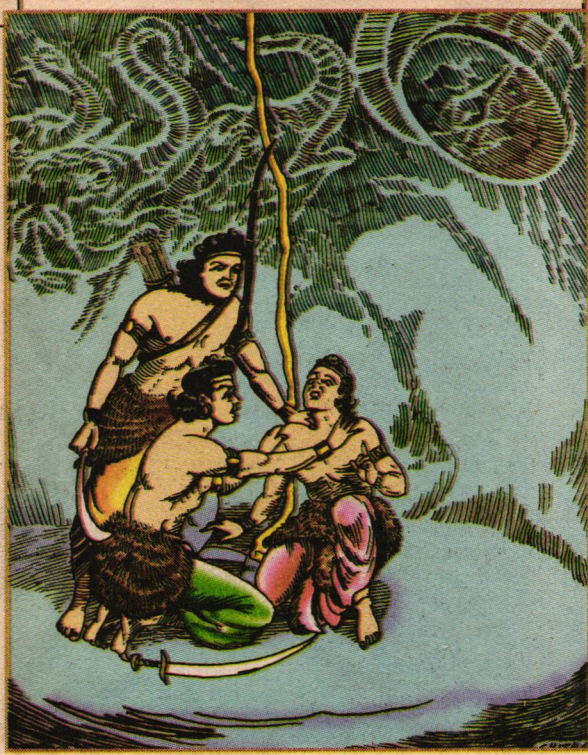
“हमें ब्रह्मपुर छोड़े बहुत दिन हो गये हैं। इस बीच, लगता है, वहाँ बहुत-से परिवर्तन हो गये हैं। राजकुमारी कल्पकवल्ली इस भयंकर घाटी में



कैसे आयी? यह जगभोजी कौन है और वह शिष्य कौन है? वे लोग इस भयंकर घाटी में सुरक्षित कैसे पहुँच गये, इतने दुर्गम मार्ग को कैसे पार कर पाये? उन लोगों ने हो सकता है, मन्त्र-तन्त्र का सहारा लिया हो। यह सब रहस्य है। फिर भी क्या हम राजकुमारी की रक्षा कर सकेंगे जयमल्ल?” केशव ने पूछा।

जयमल्ल की हालत ऐसी थी कि वह केशव की बात का जवाब नहीं दे पा रहा था। वह जगभोजी और किंकर के सम्भाषण का क्या रहस्य है, जानने की कोशिश कर रहा था और जगभोजी ने जो “मृगराज” कहा था, उसका मतलब जानने के लिए वह तरह-तरह के अनुमान कर रहा था।

“क्यों केशव, क्या तुम्हें यह बात याद है? जब ब्रह्मपुर के पास के पर्वतों में थे, तब ब्रह्मदण्डी



मान्त्रिक ने कालभैरव को तुम में बुलाया था। तब तुमने उस बेहोशी में कुछ रहस्य बताये थे। फिर बाद में मैंने तुमको बताया था कि वे क्या क्या थे।” जयमल ने कहा।

केशव ने सन्देह से जयमल की ओर सिर घुमाकर कहा, “वह क्या बात थी, मुझे तो याद नहीं है। इस भयंकर घाटी में बहुत ही बड़ी धनराशि है, यही बात मुझे याद रह गई है।”

तब तक जंगली गोमान्ग ने, जो चुपचाप उनकी बात सुन रहा था, यकायक केशव की ओर सिर मोड़कर कहा, “मेरी आँखों को कहीं घाटी में दीये की रोशनी दिखाई दे रही है, कानों को हाथियों का चिंघाड़ना सुनाई पड़ रहा है। क्या, तुम्हें सुनाई दे रहा है?”

“मुझे तो कोई ऐसी रोशनी या आवाज नहीं

सुनाई दे रही है। मुझे कोई बेहोशी-सी आ रही है। मुझे इस भयंकरघाटी का न सोना चाहिये, न चाँदी ही। मैं ऊब गया हूँ। मैं मरने से नहीं डरता। परन्तु मरने से पहिले यदि एक बार अपने पिता को देख सकूँ, तो कितना अच्छा हो।” केशव आँखें मूँदकर पीछे खड़ा हो गया।

जयमल ने केशव का कन्धा हिलाते हुए कहा, “अरे, धीरज न खोओ, केशव! कितनी ही आपत्तियों का धैर्य से सामना करके यहाँ तक आये हैं, जगभोजी और उसके शिष्य किकर की बात सुनकर तो मुझे ऐसा लगता है, जैसे हमारे कष्टों के दिन लद गये हैं। हम तुम्हारे बूढ़े पिता को ही नहीं, बल्कि ब्रह्मपुर के राजा और राजगुरु सभी को देख सकते हैं। तुम्हारे पिता सुरक्षित हैं और हो सकता है तुमसे उनकी भेंट शीघ्र होनेवाली हो। धीरज रखो यह हमारी आखिरी कसौटी है। इस घाटी की निधियाँ हमारी ही हैं। इनको पाने की शक्ति हम में है। उन पर अधिकार भी हमारा है, इसमें सन्देह करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरा दिल कहता है कि अब हम अन्तिम विजय के बहुत निकट हैं। यह हमलोगों की अन्तिम परीक्षा है। और निश्चय ही परिणाम हमारे अनुकूल होगा, यह हमारा दृढ़ विश्वास है।”

“भविष्य हमारे अनुकूल है, यह तुम कैसे इतने विश्वास से कह सकते हो?” केशव ने पूछा।

जयमल कुछ देर सोचता खड़ा रहा। फिर अपने दबी आवाज में कहा, “जब कालभैरव ने तुम में प्रवेश किया था, तब तुमने ब्रह्मदण्डी

मान्त्रिक से यह कहा था, 'विंध्यारण्य के परे एक बड़ी घाटी है, वही भयंकर घाटी है। उस घाटी में ऊँचाई पर एक पीपल का पेड़, उसके नीचे एक बाम्बी, सूखा पेड़, चाँदनी रात, मृगराज को मारकर, चमड़ा निकालकर, उसे...' इसके बाद ब्रह्मपुर के राजगुरु ने अपनी मन्त्र शक्ति से तुम्हारा मुख बन्द कर दिया था।"

"यह सब तो ठीक है, सिवाय इसके कि हम भयंकर घाटी में आ गये हैं, बाकी बातें कितनी सच हैं, अभी तक हमें इसके बारे में बिलकुल सूचना नहीं मिली है।" केशव ने निरुत्साहित होकर जयमल्ल से कहा।

"कालभैरव के आवेश में जो कुछ तुमने कहा था, वह सच होकर निकलेगा। इससे पहले जगभोजी ने जो कहा था 'मृगराज भी उठ गया है', तो उसका अर्थ यही था कि हम सूर्योदय होते ही घाटी में उतरेंगे। उस मृगराज को हम मारने जा रहे हैं। उसका चमड़ा निकालकर... उसे", जयमल्ल अभी कह ही रहा था कि उनके नीचे के पत्थरों के पास शेर ने भयंकर गर्जन किया। यह ध्वनि सुनते ही तीनों ने नीचे की ओर देखा। उनको अंगारे-सी दो आँखें, नीचे चमचमाती दिखाई दीं।

"यही मृगराज है। यदि हम ये आँखें देख पा रहे हैं, तो इसका मतलब है कि वह हमारी ओर देख रहा है।" जंगली गोमान्ग ने कहा।

"उसने हमें पहचान लिया है, हमने उसे पहचान लिया है। अच्छा है। एक दूसरे को मारने



के लिए किसी को खोजने की जरूरत नहीं है। गोमान्ग! तुम्हारे पास जहर में बुझे हुए बाण हैं न?" जयमल्ल ने कहा।

"हाँ, तो क्या अभी शेर का शिकार किया जाये?" गोमान्ग ने पूछा।

"शिकार के लिए यह अच्छा समय नहीं है। इस अंधकार में, हमारे मारे हुए मृगराज को जगभोजी उठाकर ले जा सकता है। हमें उसे छिपकर मारना होगा। यह तो भय नहीं है कि वह हमें छोड़कर चला जायेगा। क्योंकि उसको हमारी गन्ध मिल गई है, इसलिए हम उसे याद हैं और चूँकि हमने उसकी अंगारे-सी आँखें देख ली हैं, इसलिए वह हमें याद है। कौन किसको मारकर चमड़ा निकालता है, यह सब देख जायेगा। उस जगभोजी की खबर भी लेंगे।" जयमल्ल ने धैर्य से

कहा। गोमाना और जयमल्ल जब बातें कर रहे थे, तो केशव चुपचाप बैठा था। उन दोनों की बात खत्म होते ही, उसने जयमल्ल की ओर मुड़कर, आश्चर्य से कहा, “मल्ल! कहीं मेरी अक्ल तो नहीं मारी गई है? ऐसा लगता है, जैसे मैं जागे ही जागे सपने देख रहा हूँ। घाटी में से यह क्या ध्वनि आ रही है? आश्चर्य हो रहा है।”

“क्या, तुम्हें हाथियों के चिंघाड़ने की ध्वनि सुनाई पड़ रही है?” जयमल्ल ने पूछा।

“हाथियों का चिंघाड़ना ही नहीं, घंटियों का बजना भी सुनाई पड़ रहा है। क्यों गोमाना? क्या तुम्हें ऐसी कोई ध्वनि सुनाई पड़ रही है।” केशव ने पूछा।

“यह सब कोई माया-सी मालूम होती है। मुझे घंटियों की ध्वनि ही नहीं, हवा के सहारे कुछ बातें भी आती मालूम होती हैं। सच कहा जाये तो किसी मन्त्र के प्रभाव से हमें ऐसा भ्रम हो रहा है।” गोमाना ने कहा।

जंगली गोमाना की बात सुनकर जयमल्ल के मन में तरह-तरह की बातें उठने लगीं। जैसा कि

गोमाना ने कहा था, उस घाटी में सभी कुछ मन्त्रग्रस्त था। जगभोजी, ब्रह्मपुर की राजकुमारी कल्पकवल्ली को यहाँ किस प्रकार ला सका? क्या इस घाटी से बिना एक कदम बाहर रखे ही उसने यह काम किया? जयमल्ल जब इन पेचीदे प्रश्नों में उलझा हुआ था तब केशव सोच रहा था कि कितना अच्छा होता यदि इस समय मेरा पिता यहाँ होता। इस घाटी में आते ही उसे पता नहीं क्यों अपने पिता की बार-बार याद आ रही थी। उधर जंगली गोमाना सोच रहा था, यदि उसका सरदार यहाँ होता, तो राजकुमारी, जगभोजी के चंगुल से छुड़वायी जा सकती थी।

भयंकर घाटी के इस तरफ़ ये तीनों मित्र इस चिन्ता में थे, तो उस तरफ़ मैदान में, ब्रह्मपुर का राजा और राजगुरु सेना के बीच गड़े हुए डेरों में बैठकर आगे क्या करना है, इस विषय में सोच रहे थे। उनके सामने समस्या थी, “क्या सारी सेना को लेकर भयंकर घाटी में उतरा जाये? या कुछ अंगरक्षकों को लेकर घाटी में प्रवेश किया जाये?”

(अभी है)





योग्य राजा

धुन का पक्का विक्रमार्क पेड़ के पास पुनः गया; पेड़ पर से शव को उतारकर अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, “राजन,, अनेक रुकावटों का सामना साहसपूर्वक करते हुए तुम अथक परिश्रम कर रहे हो। अपने हठ पर डटे हुए हो। तुम्हारी कितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। विशेष रूप से तुम्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि शासक में आग्रह के साथ-साथ शौर्य-पराक्रम का होना भी बहुत ही जरूरी है। परंतु, कुछ लोगों के पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण तथा योग्यता को सही ढंग से आंक सकने की असमर्थता के कारण वे बड़ी से बड़ी त्रुटियाँ कर बैठते हैं और असली पराक्रमियों को वे पहचान

वेताल कथा



नहीं पाते, जिसकी वजह से उन्हें हानि पहुँचती है। तुम्हें सावधान करने के लिए मैं एक ऐसे गुरु की कहानी सुनाने जा रहा हूँ, जिसका व्यवहार पक्षपातपूर्ण था, इसलिए सही पराक्रमी को पहचानने में असफल साबित हुआ।” फिर वेताल उस गुरु की कहानी यों सुनाने लगा:

राजा सुदक्षण सुसंपन्न सुप्रतीक राज्य का शासक था। उसके शासन काल में प्रजा सुखी थी। उनका जीवन प्रशांत था। परंतु, दुख की बात तो यह थी कि पचास साल की उम्र के बाद भी उनकी कोई संतान नहीं हुई। इसी को लेकर वे सदा चिंताग्रस्त रहते थे।

राजा ने एक दिन मंत्री गंगाधर को बुलवाया और कहा, “मंत्रिवर, राज्य तो वीरभोज्य है। मेरे बाद शासन की बागडोर को संभालनेवाला योग्य

वारिस न हो तो अड़ोस-पड़ोस के राज्यों के राजा मेरे राज्य पर अवश्य ही आक्रमण कर बैठेंगे। मेरे राज्य को अपने अधीन करने का हर प्रकार का प्रयत्न करेंगे। मेरी असमर्थता का वे फायदा उठावेंगे। यह सवाल हमेशा मुझे अशांत करता रहता है कि मेरे बाद कौन मेरी प्रजा को सुख-शांति से रख पायेगा? महारानी ने सलाह दी है कि अपने बंधु बांधवों में से किसी को दत्तक पुत्र बना लूँ और राज्य का भार उसे सौंप दूँ। किन्तु यह सलाह मुझे समुचित नहीं लग रही है। मेरी समझ में नहीं आता कि योग्य वारिस को कैसे चुनूँ?” गहरी सांस लेते हुए राजा ने कहा।

मंत्री ने थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा, “महाराज, आपका दुख, आपकी वेदना सहेतुक है। अवश्य ही इसपर गंभीरता के साथ सोचना चाहिये। मुझे एक उपाय सूझता है।”

राजा ने पूछा कि वह उपाय क्या है?

“हरित वन के गुरु विद्यासागर के गुरुकुल के बारे में आप बखूबी जानते ही हैं। वहाँ कितने ही पराक्रमी क्षत्रिय युवक विद्याभ्यास करते रहते हैं। अच्छा यही होगा कि हम उस गुरुकुल में जाएँ और गुरु विद्यासागर की सहायता माँगें।” मंत्री गंगाधर ने कहा।

दूसरे दिन मंत्री को लेकर राजा विद्यासागर के गुरुकुल में गये और उन्हें सविस्तार विषय बताया।

गुरु ने उनका आदर-सत्कार करने के बाद कहा, “राजन्, अच्छा हुआ, आप सही समय पर आये। विजयदशमी त्योहार के दौरान गुरुकुल में

आज से लेकर तीन दिनों तक प्रतिभा की प्रतियोगिताएँ होंगी। आप स्वयं इन प्रतियोगिताओं को देखकर निर्णय ले सकेंगे।”

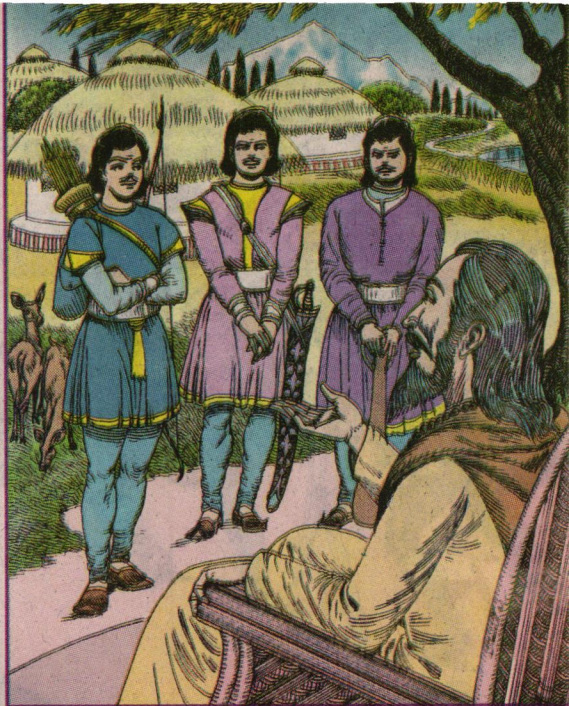
तीन दिनों तक जो प्रतियोगिताएँ चलीं, उनमें धनुर्विद्या में प्रताप, खड्ग युद्ध में प्रचंड, मल्ल युद्ध में प्रशांत प्रथम आये। वे तीनों शेष विद्याओं में भी समान साबित हुए।

राजा सोच में पड़ गये कि इन तीनों में से किससे अपना वारिस बनाऊँ। तब गुरु ने कहा, “इन तीनों के लिए एक और परीक्षा लेने का मेरा विचार है। अब आप राजधानी लौटिये। जैसे ही समाचार ढूँगा, यहाँ आ जाइये। आशा है, आपकी इच्छा पूरी होगी।”

राजा मंत्री सहित राजधानी लौटे। उसी दिन तीनों शिष्यों को बुलाकर गुरु ने उनसे कहा, “देशाटन करके प्रत्यक्ष रूप से लोकज्ञान की प्राप्ति के बाद ही तुम तीनों का विद्याभ्यास समाप्त होगा। तुम तीनों अलग-अलग तीन दिशाओं में, देशाटन करना और चालीसवें दिन गुरुकुल में पहुँच जाना। फिर अपने-अपने अनुभवों का विवरण देना।”

तीनों युवक दूसरे दिन प्रातःकाल ही गुरु का आशीर्वाद लेकर निकल पड़े। राज्य के विविध प्रदेशों में पर्यटन किया और गुरु की आज्ञा के अनुसार चालीसवें दिन गुरुकुल पहुँचे। उस समय राजा और मंत्री भी वहीं मौजूद थे।

“तुम तीनों देशाटन करके सही समय पर सकुशल पहुँचे, इसे देखकर मुझे बहुत ही खुशी हुई। तुमने जो विशिष्टताएँ देखीं, जिन अनुभवों



से गुजरे, उनका ब्योरा एक-एक करके देना”, गुरु ने कहा।

पहले धनुर्विद्या प्रवीण प्रताप ने कहा, “मैं उत्तर दिशा में गया और मेरी यात्रा बिना किसी कठिनाई के पूरी हुई। राज्य में सब जगह अमन चैन है। प्रजा सुखी और सन्तुष्ट है। किन्तु, मैंने राज्य की सरहद के जंगल में देखा कि वहाँ कुछ युवक मारण आयुधों का प्रयोग, छिपकर प्रत्यर्थी पर हमला करना जैसी विद्याओं में प्रशिक्षण पा रहे हैं। मैंने यह भी जाना कि वे पड़ोसी राज्य पुष्कलपुर के वासी हैं। चूँकि उन्हें कोई नौकरी नहीं मिली, गरीबी में पल रहे हैं, इसलिए वे बहुत ही निराश हैं। उनकी एकमात्र इच्छा है, हमारे राज्य की सरहदों में वहाँ की प्रजा की संपदा को लूटना। मैंने छिपकर अर्धेड उम्र के उस व्यक्ति को बाण



चलाकर मार डाला, जो इन युवकों को प्रशिक्षित कर रहा था। मुझे लगा कि अवश्य ही राजा का ध्यान इस ओर खींचूँ। अब मैंने आपसे यह विषय बताकर अपना कर्तव्य पूरा किया।”

“दक्षिण दिशा में मैं गया और राज्य की सरहद पर के कुग्रामों से होते हुए मैंने यात्रा की। जानने में आया कि वहाँ चोर-लुटेरे लोगों को सता रहे हैं, उनकी संपदा को बेरोकटोक लूट रहे हैं। वहाँ की प्रजा भयभीत है। लोग हमेशा डरते रहते हैं। अन्धेरा होते ही वे दरवाजे लगाकर घरों में बन्द हो जाते हैं। युवकों में उनका सामना करने का साहस नहीं है। इसका कारण है, रक्षा व्यवस्था में कमियाँ। एक गाँव से होते हुए जब मैं जा रहा था तो एक लुटेरे का मैंने सामना किया और तलवार चलाकर उसे भगाया। इसके बाद, मैंने वहाँ के युवकों को इकट्ठा

किया और उन्हें खड़ा युद्ध सिखाया। अब वे लुटेरों का सामना करने के लिए सन्नद्ध हैं। मार्ग में मैंने एक चीते को भी मार डाला, जो मुझपर टूट पड़ा था। उसका चर्म भी आपको भेंट में देने के लिए ले आया हूँ। स्वीकार कीजिये।” प्रचंड ने कहा।

“मैं पूर्वी दिशा में गया और मेरी यात्रा लगभग शान्तिपूर्ण रही। क्षत्रिय विद्याओं को प्रदर्शित करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। पंद्रह दिनों की यात्रा के बाद मैं सुप्रसिद्ध सिंधुभैरवी नगर पहुँचा। वहाँ के प्राचीन करिबरद मंदिर में मैंने एक विचित्र दृश्य देखा। अदभुत शिल्पों से भरे उस मंदिर के एक स्तंभ में नक्काशी की गयी एक नर्तकी के शिल्प के पीछे एक छिपकली फंसी गयी। बाहर न आ पाने के कारण बेचारी छटपटा रही थी। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। थोड़ी देर बाद दो छिपकलियाँ अपने मुँहों में आहार भरकर ले आयीं और उस छिपकली को खिलाया। इस दृश्य ने मुझे विस्मय में डाल दिया। बाद, मैंने मंदिर के निर्वाहकों को यह विषय बताया। उन्होंने शिल्पकारों को बुलवाकर छिपकली की जान बचायी।

“लौटते समय, जब मैं विश्रांति अरण्य से होते हुए गुजर रहा था तो मैंने देखा कि एक कुएँ में हाथी का एक बच्चा गिर गया है। उसे बचाने का कोई उपाय न जानने की वजह से बाकी हाथी उस कुएँ के चारों ओर घूमने लगे और रोदन करने लगे। मैंने पास ही के भीलों के गाँववालों को यह समाचार बताया। उनकी सहायता से हाथी के बच्चे को कुएँ से बाहर निकाला। छिपकलियों और

हाथियों के बीच जो प्रेम व एकता है, वे मनुष्यों में पाये नहीं जाते, मैंने भीलों को यह समझाया और जोर देकर कहा कि आपस में लड़ना-झगड़ना अच्छा नहीं है। क्योंकि मैं जानता था कि अक्सर छोटी सी बात को भी लेकर उनके वर्गों के बीच झगड़े होते रहते हैं। उनके बीच स्नेह-पूरित संबंधों की स्थापना भी की।” प्रशांत ने अपने अनुभव बताये।

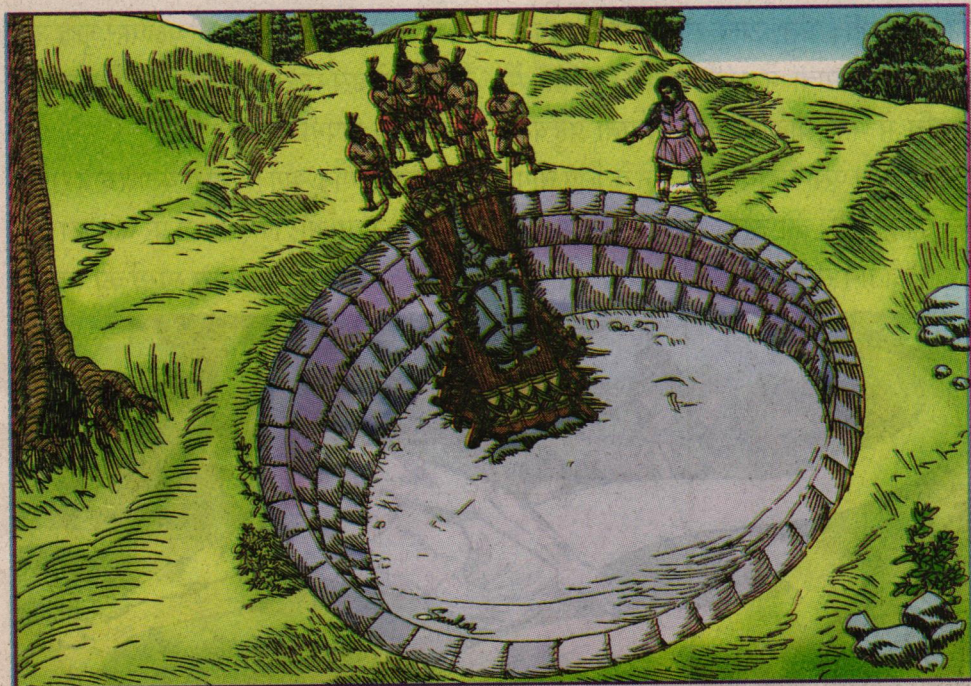
राजा और मंत्री ने आपस में चर्चा की और इस नतीजे पर पहुँचे कि प्रताप और प्रचंड में राजा का वारिस बनने की योग्यता है क्योंकि वे दोनों साहसी और पराक्रमी हैं। उन्होंने गुरु की राय जानने के लिए उनकी ओर देखा।

“राजा, मेरी दृष्टि में आपका वारिस बनने की

पूरी योग्यता प्रशांत में है। वह एक वीर योद्धा होने के साथ शान्त, गम्भीर, विवकेशील और सहृदय भी है। ठीक मौके पर अपनी वीरता का प्रदर्शन करना भी वह जानता है। उसके शासन-काल में सुप्रतीक की प्रजा सुखी और शान्तिपूर्ण जीवन बिता सकती है”, गुरु विद्यासागर ने अपना अभिप्राय बताया।

यह सुनते ही राजा चौंक पड़े। पर तुरंत अपने को संभालते हुए कहा, “आपके अभिप्राय को आज्ञा मानकर हम स्वीकार करते हैं।”

वेताल ने कहानी कह चुकने के बाद कहा, “राजन्, राजा के लिए प्रधान है, शौर्य। अपने अनुभव के आधार पर राजा सुदक्षण इस सत्य को जानते थे, इसीलिए उन्होंने पहले ही कहा, ‘राज्य वीर



भोज्य' है। ऐसे राजा ने यह कैसे मान लिया कि दुष्ट लोगों को मार डालने में पराक्रम प्रदर्शित करनेवाले प्रताप और प्रचंड जैसे योद्धा राजा के वारिस बनने के योग्य नहीं हैं बल्कि वह प्रशांत वारिस बनने के लायक है, जिसने केवल जंतुओं के प्रति प्रेम दिखाया। गुरु विद्यासागर के अभिप्राय को स्वीकार करके क्या उन्होंने राज्य के भविष्य को खतरे में नहीं डाल दिया? क्या यह उचित है? गुरु ने ऐसी सलाह देकर क्या पक्षपात भरी बुद्धि नहीं दर्शायी? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।”

विक्रमार्क ने कहा, “मानता हूँ कि राजा के लिए शौर्य, पराक्रम आवश्यक है, इसमें रती भर भी संदेह नहीं। परंतु, उनके साथ-साथ मानवता व प्रेम उसी मात्रा में आवश्यक है। प्रशांत में विपत्ति में फंसे प्राणियों की सहायता पहुँचाने की तड़प है। ऐसी सहायता पहुँचाने के लिए लोगों को इकट्ठा करने की उसमें प्रवीणता भी है। हर प्राणी को प्रेम से देख सकने की प्रवृत्ति भरी पड़ी

है, प्रशांत में। अगर वह राजा बने तो प्रजा को सगी संतान की तरह समझेगा और शासन चलायेगा। गुरु विद्यासागर से उसने शस्त्र विद्याएँ सीखीं और मल्लयुद्ध में प्रथम आया। इसलिए यह कहना उचित नहीं है कि प्रशांत में पराक्रम नहीं है। ऐसे शक्तिवान में मानवता व जनता को एक करने की क्षमता है। अतः बाकी दोनों का शौर्य - पराक्रम प्रजा के सुख-संतोष के लिए, उनके क्षेम के लिए किसी शांत-चित्त और स्थिर बुद्धिवाले राजा के निर्देशन में उपयोग में लाया जा सकता है। एक योग्य राजा में शौर्य के साथ सहृदयता का होना आवश्यक है। इन सभी बातों पर खूब सोच-विचारने के बाद ही गुरु ने प्रशांत को राजा का वारिस चुना और शासक बनने के योग्य माना। इसमें रती भर भी पक्षपात बुद्धि नहीं है। राजा ने इस सत्य को जाना, इसीलिए उन्होंने इसके लिए अपनी सहमति दी।”

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार: पद्मलता गार्गी की रचना)



Get India's Most Loved Magazine for Children at your doorstep

Subscribe to Chandamama

12 issues for Rs 180/-

- 60 చందామమా
- 60 వందమమ
- 60 కందమమ
- 60 చాందీబా
- 60 చందమమా
- 60 కాలిగిరికావ్యం
- 60 టాడమగా
- 60 బాల్యమీమా
- 60 జిక్, మాజి
- 60 చందమమా
- 60 బాదామమా
- 60 బుద్ధుల బుద్ధులు
- 60 CHANDAMAMA

Junior

Chandamama stories explore our traditions, folk tales, mythology, history and science in an unforgettable narrative style which captures your child's imagination. Generations of children have grown up reading *Chandamama* in their native language. Subscribe today and let your child's quest for knowledge stay alive forever.

I want to subscribe to the following editions of Chandamama: (Tick whatever applies)

☐ English ☐ Language..... ☐ Junior Chandamama

My Name Date of Birth

Send my issues to: Mr/Ms.....

Address

City..... State Pin

Telephone..... Mobile Email

Enclosed Cheque/DD* for Rupees.....

Cheque/DD no..... Favouring **Chandamama India Ltd** on bank. (Send At-par cheques or add Rs. 60 for non-Chennai cheques) Your subscription will start in 4 weeks.

Please mail the subscription form to :

Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai - 600 018.
Tel: (044) 24334455 Telefax: 24322103 Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

*Language/edition for one year is Rs. 180. Only English: Rs. 180 for 1 year. English + any language: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior + any language: Rs. 540 for 1 year.

*Conditions apply.



कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी - ११

सुख्यात उडिया लेखक जयन्त महापात्र की कविताएँ विश्व भर में प्रकाशित हुई हैं। वे उड़ीसा स्थित कटक में रहते हैं तथा एक साहित्यिक पत्रिका चन्द्रभाग के सम्पादक हैं।

आधी रात के दस मिनट बाद

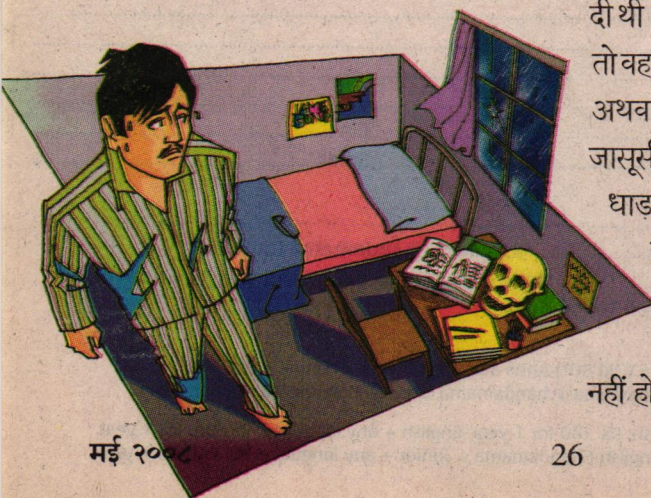
घर के बाहर नम हवा, झूमते निरंकुश और अडियल देवदारों को, टेढ़े मेढ़े मार्ग से पार करती हुई, छटपटा रही थी। अन्धेरे में धीमी-धीमी निरन्तर बारिश हो रही थी तथा इसकी बेसुरी आवाज लगता था हड्डियों में रिस रही है। खिड़की के बाहर अन्धकार की एक काली दीवार खड़ी दिखाई पड़ी जो उस पर हिलते हुए भूरे धब्बों से कहीं-कहीं टूटी लग रही थी; ये धब्बे पास के पेड़ों की रूपरेखाएं होंगी।

उसकी दायीं तरफ करीबन सौ फुट पर एक मात्र बिजली के खम्भे की खण्डित रोशनी से आस पास का अन्धकार थोड़ा पीछे हट गया था पर थोड़ी दूर आगे चल कर उसने रोशनी को जैसे पूरी तरह निगल लिया हो। अचानक खिड़की से

ठण्डी हवा के एक झोंके ने आकर उसकी क्षीण काया में कम्पन पैदा कर दिया। बारिश थमने का नाम नहीं ले रही थी। मोहन ने मुँह बनाते हुए खिड़की बन्द कर छिटकनी लगा दी।

उसका कमरा या माँद जैसा कि वह खुद ही कहता था, मात्र ९ फुट लम्बा और ५ फुट चौड़ा था। पलंग रखने के बाद एक छोटी मेज़ और कुर्सी रखने भर जगह थी। मेज़ के ऊपर पुस्तकें, कागज बिखरे पड़े थे- तथा मोटी बड़े आकार की अनाटॉमी की एक पुस्तक आधी खुली रखी थी। और उसके पास ही रखी थी पीली पड़ी दाँत खिसोरे एक मानव खोपड़ी जिसका वह अध्ययन कर रहा था।

बारिश की सुस्ती ने उसकी एकाग्रता भंग कर दी थी। यदि अगले दिन उसे परीक्षा नहीं देनी होती तो वह किताबें बन्द करके शान्ति से सो गया होता। अथवा यह अधिक सम्भव था कि वह कोई जासूसी किताब लेकर बिस्तर में घुस जाता। मार धाड़ की किताबें उसे बहुत पसन्द थीं और नई जेम्स बाण्ड तो छोड़ा ही नहीं जाता। किन्तु अनाटॉमी के नामों और कामों को याद करने से ज्यादा कुछ और उबाऊ और थकाऊ नहीं हो सकता! जैसा कि उसका मानना था।



घड़ी की टिक-टिक से उसके विचारों का सिलसिला बदल गया। यदि वह सो जाता तो क्या सुनहले जरीदार वेश भूषा में सजी राजकुमारी का सपना आता? दीवार के शेल्फ पर रखी छोटी घड़ी पर उसकी नजर पड़ी। बारह बज कर दस मिनट हो चुके थे। ओह! आधी रात हो चुकी है। इसका मतलब यह है कि वह काफी देर तक ऊँघता रहा होगा!

एक नये संकल्प के साथ किताब पर एकाग्र होने का उसने प्रयास किया। पर शब्द मानों उसकी नजरों से बच कर भाग जाते। उसकी आँखें मेज पर रखी खोपड़ी की ओर घूम गईं। तुरन्त किसी चीज ने उन गहरे खोखलों से अलग जिनमें कभी विस्मृत अतीत में दो जीवित आँखें रही होंगी उसके सामने एक नया दृष्टि पथ खोल दिया।

इन खोखलों ने हमलोगों की ही तरह कभी प्यार किया होगा, जिन्दगी बिताई होगी। घड़ी की टिक-टिक अचानक कुछ क्षणों में तेज हो गई। और विचित्र बात यह थी कि उसे कमरे में किसी और की मौजूदगी महसूस होने लगी, कोई दूसरी शक्ति जिसे वह कोई नाम न दे सका, एक अलौकिक भय की भावना से वह भर गया।

उसके कानों ने निश्चित रूप से, कहीं कमरे में से ही एक अनजानी आवाज सुनी, उंगलियों से दीवार पर खरोंचने की-सी आवाज। उसने जैसे ही डर-भरी एक निगाह चारों ओर फैलाई, आवाज वैसी ही अचानक बन्द हो गई। नीरवता असह्य होने लगी। उसने आँखें बन्द कर यह सोचा कि आवाज उसकी कल्पना मात्र होगी।



उसने किताब बन्द कर सो जाने का निश्चय किया!

तब कुछ ही क्षणों के पश्चात उसने पुनः चारों ओर वही आवाज सुनी, इस बार अधिक स्पष्ट। भय से आक्रान्त हो उसने चारों ओर देखा। ध्यान देने पर उसे पता चला कि आवाज खोपड़ी से ही आ रही है। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। पूरी संकल्प शक्ति लगाने के बावजूद वह अपनी नजर खोपड़ी पर से हटा नहीं पा रहा था। क्योंकि उसके देखते-देखते खोपड़ी अब मेज पर झटके के साथ गति करने लगी, जब कि दाँत पीसता हुआ उसका डरावना चेहरा उसी पर टिका था। वह इतना डर गया मानों अब उसका दिल फट जायेगा। फिर वह भय से चीखता हुआ बेहोश हो गया।

जब मोहन होश में आया तो उसने अपने आस-पास कुछ जाने-पहचाने चेहरों को देखा। उनमें से एक ने मेज की तरफ इशारा किया जहाँ टूटी खोपड़ी के नीचे एक छोटी मृत चुहिया का भोलाभाला-सा शरीर दबा पड़ा था।

अर्ध निशा का अनुसंधान

श्री रामकृष्ण परमहंस (१८३६-१८८६) के यशस्वी शिष्य स्वामी विवेकानन्द (१८६२-१९०२) ने गहन भारतीय दर्शन, वेदान्त की शिक्षाओं का प्रतिपादन कर अमरीकी बुद्धि-जीवियों को एक बड़ा झटका दिया। पश्चिम जगत के लोग सोचते थे कि भारतीयों का धर्म मात्र अन्ध-विश्वासों, कर्मकाण्डों तथा वर्जनाओं का एक गट्ठर है। स्वामी जी के भाषणों को सुनने के बाद उन्हें यह ज्ञात हुआ कि सत्य के लिए मानव की खोज भारत में वेदों के समय से ही आरम्भ हो गई थी। उनके गहरे ज्ञान से प्रभावित होकर सैकड़ों अमरीकी स्त्री-पुरुष उनके शिष्य अथवा प्रशंसक हो गये।

अमरीका से स्वामीजी ने विलायत की यात्रा की। वहाँ भी जिज्ञासुओं के मानस-पटल पर उनकी वाणी की गहरी छाप पड़ी। बहुत लोग उनके शिष्य बन गये जिनमें सबसे उल्लेखनीय थी कुमारी मार्ग्रेट नोबल जो बाद में सिस्टर निवेदिता के नाम से विख्यात हुई। उन्होंने अपना शेष जीवन भारत माता की सेवा में लगा दिया।

स्वामी जी विदेश यात्रा से सन् १८९६ में जब भारत लौटे तब सारे देशवासियों ने बड़े हर्षोल्लास-पूर्ण जयजयकार के साथ उनका स्वागत किया।

श्रीरामकृष्ण परमहंस की पावन स्मृति को निरन्तर बनाये रखने के लिए स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु के शिष्यों की एक संस्था स्थापित



की जिसका नाम उन्होंने रामकृष्ण मिशन रखा। आश्रमवासी संन्यासी होते थे जो अपने आध्यात्मिक लक्ष्य की पूर्ति तथा देश के गरीबों की सेवा करने के लिए एक साथ रहते थे। उन्होंने इस नये संघ का मुख्यालय कोलकाता के उपान्त क्षेत्र बेलूर में बनाया जो बाद में बेलूर मठ के नाम से विख्यात हुआ।

वे कुछ गुरुभाई जिज्ञासुओं के साथ वहीं रहते थे। उनके कमरे के साथ लगे कक्ष में एक अन्य शिष्य रहते थे जिनका नाम विज्ञानानन्द था।

हुगली नदी के तट पर, जैसा कि उस क्षेत्र में गंगा को पुकारा जाता है, एक नीरव निशा का समय था। आधी रात के बाद कुछ ही मिनट बीते होंगे कि विज्ञानानन्द ने एक धीमी पर असामान्य आवाज सुनी। उन्होंने ध्यान लगा कर

उस स्वर को सुनने का प्रयास किया। यह किसी के सिसकने की दर्द भरी आवाज थी। वे अपने कक्ष से बाहर आये और बरामदे में इधर-उधर देखने लगे। पर बरामदे में उन्होंने किसी को नहीं देखा। उत्सुकता वश उन्होंने अपने पड़ोसी स्वामी विवेकानन्द के कमरे में चुपचाप झाँककर देखा, क्योंकि आवाज थोड़ी स्पष्ट-सी बिलकुल पास से ही आती सुनाई पड़ी। उन्होंने जो कुछ देखा, उससे वे भौचक रह गये। स्वामीजी बिना बिस्तर के फर्श पर मुँह नीचे कर लेटे हुए बच्चों की तरह फफक रहे थे और रोदन को दबाने का प्रयास कर रहे थे। विज्ञानानन्द ने धीरे से दरवाजे को धकेला और पंजे के बल चलते हुए स्वामीजी के पास जाकर बैठ गये और फिर धीरे से उन्हें स्पर्श किया। चकित होकर स्वामी जी उठ बैठे और आँसुओं को पोछते हुए लड़खड़ाती आवाज में बोले, “आप अभी तक जाग रहे हैं, मुझे मालूम नहीं था।”

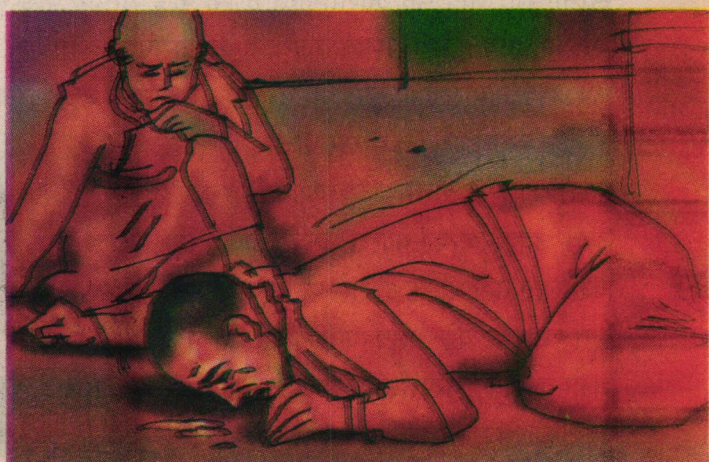
“आप की तबीयत ठीक नहीं है क्या?” विज्ञानानन्द ने चिन्तित स्वर में पूछा। स्वामीजी ने अपने पड़ोसी को आश्वासन देते हुए कहा “मेरे स्वास्थ्य के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है। मैं बिलकुल ठीक-ठाक हूँ।”

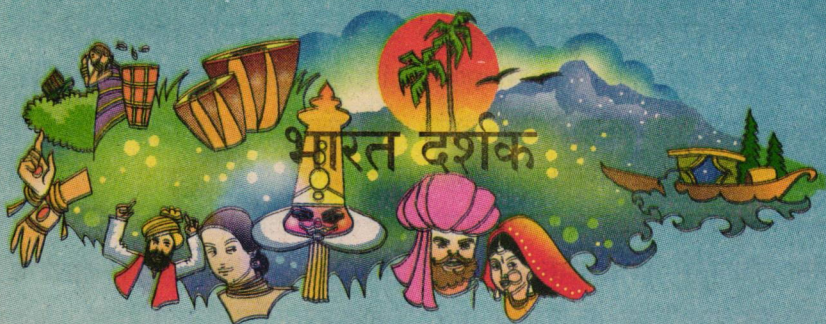
कहने की आवश्यकता नहीं है कि स्वामी जी के इस उत्तर से स्वामी विज्ञानानन्द को सन्तोष नहीं हुआ होगा क्योंकि किसी ने कभी इस सिंह पुरुष समान अपने साहसी नेता को इस प्रकार टूटते नहीं देखा था। स्वामी

जी ने बातचीत में विषयान्तर लाना चाहा परन्तु शीघ्र ही उन्होंने महसूस किया कि बिना सच्चाई जाने पड़ोसी उन्हें नहीं छोड़ेंगे। इसलिए उन्हें अपने दुख का कारण उन्हें बताना पड़ा।

उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान पश्चिम में लोगों को ऐश्वर्य और वैभव में लोटते देखा था। उनका जीवन ऐश व आराम से भरपूर था। भारत में वापस आकर उन्होंने यहाँ के लाखों लोगों को भूख और गरीबी में तड़पते देखा। यह देखकर दिन में कई बार रोने का उन्हें मन करता था, लेकिन वे अपनी भावनाओं को दबा लेते थे। वे अपने दुख दर्द का प्रदर्शन करना नहीं चाहते थे। परन्तु रात में अकेले होने के कारण अपनी भावनाओं को वे दबा न पाये और वे आँसुओं में छलक पड़ीं।

विज्ञानानन्द के पास उन्हें आश्वासन देने के लिए कोई शब्द न था। कुछ देर तक दोनों शान्त भाव से बैठे रहे। फिर स्वामी जी ने मुस्कुरा कर अपने गुरु भाई को रात्रि-विश्राम के लिए विदा किया।





एक आदर्श ग्राम

तमिलनाडु के कोयम्बतूर जिले में, केतनूर ग्राम में १,५०० घर हैं तथा इसकी कुल आबादी ७,००० है। यहाँ का कोई प्रौढ़ न धूम्रपान करता है और न मदिरापान। ग्राम शत प्रतिशत साक्षर है। सभी युवा पुरुष-नारी स्नातक हैं। वहाँ की सभी सड़कें पक्की हैं और साफ-सुथरी हैं। सड़क के किनारों से दुर्गन्ध नहीं आती और उनपर

कहीं कूड़ा-कचरा दिखाई नहीं पड़ता। सड़क की सफाई करनेवाले तरुण और किशोर हैं। यहाँ के सभी बच्चे स्कूल जाते हैं, जहाँ से पिछले १० सालों से किसी के स्कूल छोड़ने की सूचना नहीं मिली है।

खजुराहो के मन्दिर

सामान्यतः लोग यह आशा करते हैं कि कोई शासक कोई स्मारक अपनी राजधानी के नगर में बनायेगा अथवा यथासम्भव राजधानी के आसपास बनायेगा। चण्डेला वंश के वर्तमान मध्यप्रदेश के शासक ने प्रसिद्ध खजुराहो मन्दिरों को राजधानी से बहुत दूर बनवाया। वे ए डी ९५० तथा १०५० के बीच बनाये गये। वे मन्दिर प्राचीन भारतीय वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरणों में से कुछ हैं। उनके आकर्षण का कारण उनके आकार की विशालता नहीं बल्कि दीवारों पर की मूर्तिकला द्वारा सजावट की अलंकरण शैली है। वे एक हजार वर्ष पूर्व के भारतीय जीवन के भिन्न-भिन्न पक्षों का चित्रण करते हैं।



कुएँ में हीरे की अंगूठी

गर्मी के दिन थे। सूर्योदय हो चुका था। सूरज की किरणें आग बरसा रही थीं। कहीं-कहीं पानी के सोते मात्र दिखायी दे रहे थे। नदियाँ रेत से भरी पड़ी दीख रही थीं। कुएँ सूख गये थे। धूप को सहन सकने के कारण दिन में गलियाँ खाली-खाली दीख रही थीं, क्योंकि लोग बाहर आने से डर रहे थे।

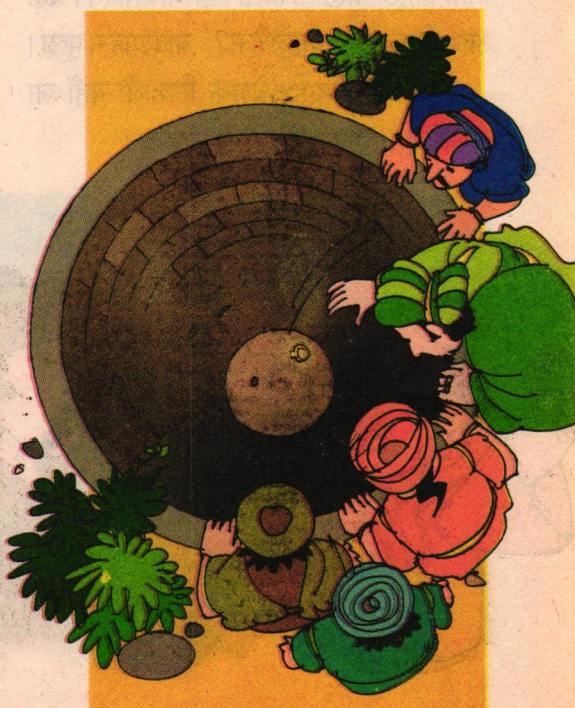
एक दिन सवेरे-सवेरे बादशाह अकबर टहलने निकले। उनके साथ बीरबल सहित कुछ प्रमुख व्यक्ति भी थे। थोड़ी देर तक टहलने के बाद बादशाह ने कहा, “इतने सवेरे ही सूरज आग उगल रहा है। सबके सब कुएँ सूख गये हैं।” यह कहते समय उनकी नज़र पगडंडी के पास ही के एक कुएँ पर पड़ी। “देखें तो सही-इसमें पानी है या नहीं”, कहते हुए उन्होंने झुककर कुएँ में देखा। बाकी व्यक्तियों ने भी झुककर देखा।

“पानी की एक भी बूँद नहीं है”, लंबी सांस खींचते हुए बादशाह ने कहा।

“जब तक बारिश नहीं होगी, तब तक यही स्थिति बनी रहेगी आलमपनाह। कुएँ में कोई चीज़ गिराएँगे और देखेंगे कि वह चीज़ ज़मीन को छूती है या नहीं। जब पानी हो तो यह जान पाना संभव नहीं”, कहते हुए बीरबल ने एक छोटा-सा पत्थर उठाया और कुएँ में फेंका। पत्थर की आवाज़ से लगा कि वह ज़मीन को छू गया।

“एक पत्थर के साथ-साथ दूसरा पत्थर भी फेंकना चाहिए न”, कहते हुए अकबर ने अपनी उँगली में से हीरे की अंगूठी निकाली और कुएँ में फेंकी। बीरबल को इसपर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, “मानता हूँ कि एक पत्थर को फेंकने के बाद दूसरा पत्थर भी फेंकना चाहिये। पर साधारण पत्थर मूल्यवान हीरे के बराबर थोड़े ही हो सकता है।” बीरबल ने कहा।

बादशाह को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने जान लिया कि जल्दबाजी में उनसे यह



गलती हो गयी। वे सोच में पड़ गये। उन्हें लगा कि किसी आदमी को कुएँ में उतरवाकर यह अंगूठी निकाली जा सकती है। पर अचानक उनके दिमाग में एक विचित्र विचार कौंध उठा। “बीरबल, किसी आदमी को कुएँ में उतरवाकर अंगूठी को बाहर ले आ सकते हैं, परंतु...” कहते हुए अकबर रुक गये।

“कहिए, जहाँपनाह”, बीरबल सहित सबने पूछा।

“कुएँ में उतरे बिना ही क्या कोई अंगूठी को बाहर निकाल सकता है?” बादशाह ने पूछा।

“असंभव”, एक वृद्ध प्रमुख ने कहा।

“इसका मतलब यह हुआ कि कुएँ में उतरे बिना अंगूठी बाहर निकाली नहीं जा सकती। यही आप लोग कहना चाहते हैं न?” बादशाह ने पूछा।

“हाँ, जहाँपनाह। बेशक निकाली नहीं जा सकती है।” एक और प्रमुख ने कहा।

“बीरबल, तुम्हारा क्या विचार है?” बीरबल की ओर मुड़ते हुए उन्होंने उससे पूछा।

“इसी को लेकर मैं सोच रहा हूँ, प्रभु”, कहते हुए बीरबल पगड़ी उतारकर खोपड़ी खुजलाने लगा।

“खोपड़ी को खुजलाने मात्र से क्या समस्या सुलझ जायेगी बीरबल”, एक प्रमुख ने व्यंग्य-भरे स्वर में पूछा।

“हाँ, मेरे विषय में ऐसा होता रहता है, शायद आपके विषय में ऐसा होता नहीं होगा”, बीरबल ने गंभीर स्वर में कहा।

“केवल तुम्हारे ही विषय में ऐसा क्यों होता है?” उसी प्रमुख ने पूछा।

“क्योंकि दिमाग है, जो तुममें नहीं है। कोई उपाय सूझ नहीं रहा है, इसीलिए मैं खुजला रहा हूँ। समझे न?” इसपर सबके सब हँस पड़े।

“बताया था न, खोपड़ी को खुजलाने से अवश्य ही उपाय सूझेगा। अब मैं जान गया हूँ

कि उस अंगूठी को कैसे बाहर निकालूँ”, बीरबल ने उत्साह-भरे स्वर में कहा।

बादशाह ने उत्कंठा-भरे स्वर में पूछा, “कहो तो सही, कैसे निकालोगे?”

“उसके लिए थोड़ा-सा वक्रत चाहिये जहाँपनाह। मुझे उम्मीद है कि शाम तक यह



काम हो जायेगा। तब तक उचित यही होगा कि अपनी योजना छिपाकर रखूँ। किसी को नहीं बताऊँ।”

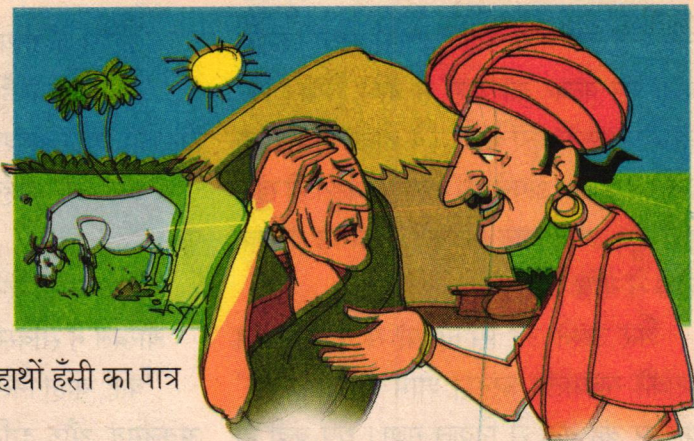
“कहीं धोखे से भरे काम करने पर तुल तो नहीं गये?” उसी प्रमुख ने यह कहा, जो पहले बीरबल के हाथों हँसी का पात्र बना था।

“यह तो मेरे स्वभाव के बिल्कुल विरुद्ध है प्रभु। जब अंगूठी को बाहर निकालने के लिए मेरे पास अच्छा और सही उपाय है, तब भला टेढ़ा मार्ग क्यों अपनाऊँ”, बीरबल ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

“ठीक है, पर बादशाह से मेरी विनती है कि वे दो सैनिकों को यहाँ तैनात करें तो बेहतर होगा। क्योंकि किसी पर पूरा विश्वास करना उचित नहीं है”, उसी प्रमुख ने जोर देते हुए कहा।

“बीरबल पर मुझे पूरा-पूरा विश्वास है। फिर भी, आपकी सलाह को अमल में लाऊँगा।” बादशाह ने कहा। जाते हुए उन्होंने दो सैनिकों को वहाँ तैनात किया और उनसे यह भी कहकर गये कि वे देखते रहें कि कोई भी आदमी कुएँ में न उतरे।

सब लोग चले गये। बीरबल अब अकेला ही रह गया। उसने चारों ओर सरसरी नजर फैलायी। देखा कि थोड़ी ही दूरी पर एक झोंपड़ी है और उसके बगल में ही एक गाय पेड़ के साथ रस्सी से



बन्धी हुई है। बीरबल तुरंत उस झोंपड़ी के पास गया और चिल्लाता हुआ पूछने लगा, “क्या कोई अंदर है?”

झुकी कमरवाली एक बूढ़ी औरत बाहर आयी और बाहर खड़े बीरबल को गौर से देखकर पूछा, “बेटे, क्या चाहिये? तुम कौन हो?”

“माँ जी, मुझे एक मुड़ी भर गोबर चाहिये। आप चाहें तो पैसे भी दूँगा।” कहते हुए बीरबल ने जेब से छुट्टे सिक्के निकाले।

“इतने छोटे से काम के लिए सिक्कों की क्या ज़रूरत है बेटे। जाकर ले लो। गर्मी बहुत तेज़ है”, कहती हुई अंदर चली गयी।

बीरबल ने अपने बायें हाथ में मुड़ी भर कर गोबर लिया। उसे लेकर कुएँ के पास गया और कुएँ के अंदर झाँककर देखा। हीरे की अंगूठी जगमगा रही थी। अंगूठी को निशाना बनाकर उसपर गोबर फेंका। वह अंगूठी पर जाकर गिरा। अब अंगूठी दिखायी नहीं दे रही थी।

इसके बाद बीरबल ने एक छोटे-से पत्थर को

और एक लंबा धागा अपने हाथ में लिया। उसके बाद उसे पत्थर को धागे से बांध दिया। फिर उसने पत्थर को कुएँ के अंदर के गोबर को निशाना बनाकर फेंका। अपने इस काम पर बहुत ही खुश होते हुए उसने धागे को कुएँ के बगल के एक पौधे से बाँध दिया।

फिर उसने उन सिपाहियों से कहा, “तुम इसकी रखवाली करना। शाम को लौटूँगा।” कहकर वह वहाँ से निकल गया। धूप बड़ी ही कड़ी थी। फिर भी बीरबल को लगा कि यह कड़ी धूप मेरी योजना के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होगी।

सूर्यास्त होने में एक और घंटा बाकी था। बीरबल उस समय कुएँ के पास लौटकर आया। जिस धागे को उसने पौधे से बांध रखा था, उसे अपने हाथ से बांध लिया और बड़ी ही सावधानी से उस धागे को कुएँ से बाहर खींचता गया। धागे में बंधा पत्थर और उसके साथ ही धूप में उपले की तरह सूखा गोबर और गोबर के अंदर चिपकी बादशाह की अंगूठी ऊपर आने लगी। बीरबल ने गोबर के उपले को तोड़कर देखा। उसमें हीरे की अंगूठी सुरक्षित थी। उसने अंगूठी को खूब धोया और उसे अपने कपड़ों में छिपाकर बादशाह के पास गया। जब वह राजभवन पहुँचा तब उस समय अकबर के साथ कुछ प्रमुख व्यक्ति भी मौजूद थे।

“शाहंशाह”, कहते हुए उसने झुककर सलाम किया।

“अंगूठी ले आये?” अकबर ने पूछा।

“हाँ, ले आया हूँ, लीजिये” कहते हुए उसने हीरे की अंगूठी बादशाह को दी।

“इसे कैसे बाहर निकाला?” बादशाह ने पूछा।

बीरबल ने सविस्तार विवरण दिया।

बीरबल ने सविस्तार विवरण दिया।

“वाह, वाह! निस्संदेह ही तुम सबसे अधिक अक्लमंद और दानिशमंद हो।” कहते हुए बादशाह ने अशर्फियों से भरी थैली उसे दी।

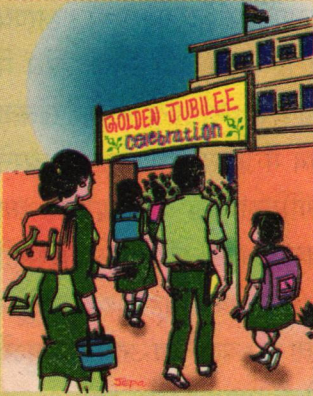
“आप जैसे दयालु और उदात्त गुणवाले बादशाह दूँदने पर भी नहीं मिलेंगे।” उसने फिर बादशाह को एक और बार विनयपूर्वक सलाम किया।



समाचार झलक

हिमालय पर्वत मालाओं में पदचिह्न मिले

लगता है, आखिरकार रहस्यमय यति अथवा घृणा योग्य हिममानव के अस्तित्व की पुष्टि का प्रमाण मिल गया है। एक टी.वी. चैनल से सम्बद्ध जोशुआ गेट्स के नेतृत्व में अमरीकी गवेषकों के एक दल को, एक रिपोर्ट के अनुसार, हिमालय शृंखला के २८५० मी. ऊँचे खुम्बू क्षेत्र से लौटते समय, १२ इंच लम्बे पदचिह्न मिले हैं। दल के सहायक गाइड तुल बहादुर राय ने २८ नवम्बर को सबसे पहले एक पदचिह्न देखा। बाद में, दल के सदस्यों ने ताजे पदचिह्न देखे जो विश्वास के अनुसार यति के मान जाते हैं। उनका फोटोग्राफ लिया गया। एक नमूना भी बनाया गया। मि. गेट्स ने रिपोर्टर को बाताय, “यति एक वास्तविकता है, अब यह कल्पना नहीं है।”



एक साधारण-सा-कीर्तिमान

केरल स्थित पेरिया गवर्नमेण्ट हायर सेकेण्डरी स्कूल २३ दिसम्बर को अपनी स्वर्ण जयन्ती मना रहा था। दिन भर के समारोह में पूर्व छात्रों तथा अन्य लोगों को मिलाकर एक सौ व्यक्तियों ने भाषण दिया जिनमें से प्रत्येक को बोलने के लिए ५ मिनट का समय तथा भिन्न-भिन्न विषय दिया गया, जैसे-शिक्षा, संस्कृति, कला, राजनीति, व्यावसायिक जीवन, केरल तथा भारत के बाहर जिन्दगी, समाचार पत्र-पत्रकारिता, अध्यात्मवाद।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-२ मार्च २००८ उत्तर:

१. जय और विजय; २. वाल्मीकि; ३. दुर्वासा; ४. अदिति, कश्यप मुनि की पत्नी;
५. बृहस्पति तथा शुक्राचार्य क्रमशः; ६. अंगिरस, अत्रि, क्रतु, मारीचि, पुलह, पुलस्त्य, वसिष्ठ; ७. धन के देवता कुबेर; ८. यमराज का सहायक जो मृतकों के पुण्य-पाप का लेखा-जोखा रखता है; ९. दुर्गा, कृष्ण तथा राम क्रमशः; १०. गणेश।

वृद्ध सिंह, जो पकड़ में कभी नहीं आया

बिहार के एक छोटे से राज्य जगदीशपुर का राजा कुँवर सिंह यद्यपि अस्सी साल का बूढ़ा था, परन्तु उसकी रगों में नौजवान का गर्म लहू बहता था। उसकी जवानी की कहानी लोक जीवन के गीतों में बच्चे-बूढ़े सभी गुनगुनाते रहते थे: “दाढ़ी सफेद झुर्रियों से भरा, बूढ़ा है जरूर बाहरी आन-बान; पर दिल और दिमाग में कुँवर से बढ़कर कौन नौजवान?” उसके बुढ़ापे में भी जवानों की दिलेरी और हौसला देखकर कोई आश्चर्य नहीं कि उसे बूढ़ा शेर कहा जाता था। यह कहावत और भी स्पष्ट तब हो गई जब अंग्रेजों को उसके छोटे से राज्य को जीतने में कितनी बार मुँहकी खानी पड़ी। वह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के लिए हो रही लड़ाई का १८५७ का वर्ष था।

अनेक अपमानजनक
पराजयों के बाद

दीर्घ प्रयत्नों के उपरांत ब्रिटिश शासक उसके राज्य पर आक्रमण तो कर पाये, पर बूढ़े शेर को पकड़ने में सफल न हो सके।

जब कुँवर सिंह ने देखा कि अंग्रेजों की सेना का मुकाबला नहीं कर सकते तो वह चन्द बहादुर सिपाहियों को लेकर जंगलों में छिप गया और न सिर्फ जगदीशपुर बल्कि पूरे देश की आजादी के लिए अंग्रेजों से टक्कर लेने का मौका देखने लगा।

स्थानीय पूर्व गाथाएँ बताती हैं कि बिहार के जगदीशपुर का शासक कुँवर सिंह कभी उज्जैन के शासक विक्रमादित्य का वंशज था। अरण्य उसके बहुत ही प्रिय स्थान थे। बाल्यकाल में अपने मित्रों के साथ वह वहाँ आँख मिचौनी खेलता रहता था। यौवन में प्रवेश करने के बाद उसने जंगलों में ही गोरिल्ला युद्ध की पद्धतियों का अभ्यास किया। वह अपने साथियों को दो समूहों में बाँट देता था। और एक समूह अचानक दूसरे समूह पर टूट पड़ता था। यह विद्या उत्तरोत्तर शत्रुओं को हराने में बड़ी ही सहायक सिद्ध हुई।

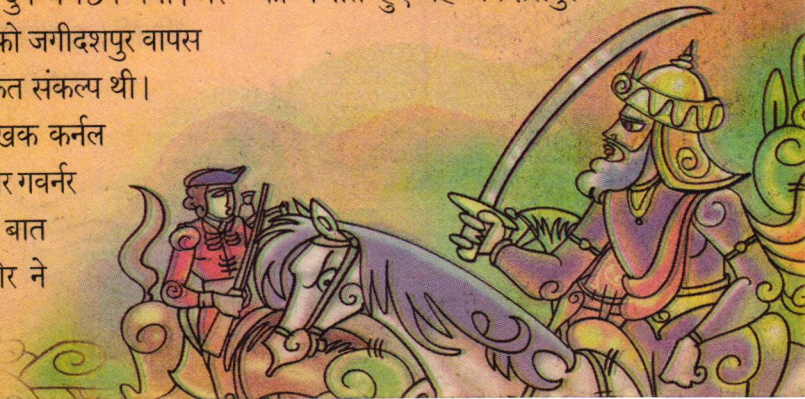


यह वह समय था, जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी एक-एक करके भारत के छोटे-छोटे राज्यों को किसी न किसी बहाने अपने अधीन करती जा रही थी। जगदीशपुर भी उनकी गिद्ध दृष्टि से बच नहीं पाया। फिर भी, उसका शासक कुँवर सिंह अपने चंद विश्वासपात्रों को लेकर पास के जंगल में छिप गया और फिर से आक्रमण करने की तैयारी में जुट गया। वह सही मौके की तलाश में था। इस बीच शत्रु सेनाओं ने राजधानी में प्रवेश कर राजभवन के समूल ध्वंस के साथ मंदिरों को नष्ट कर दिया।

उसे जानकारी मिली कि लखनऊ पर विजय प्राप्त करने के लिए ब्रिटिश सैनिक अवध जा रहे हैं। अपने अनुचरों को लेकर और कुछ क्रांतिकारी शक्तियों का समीकरण करके, उसने ब्रिटिश सेना को अजिमगढ़ दुर्ग से बाहर न आने देने का प्रयत्न किया। उसकी व्यूह-रचना और गोरिल्ला पद्धति अनोखी थी। अक्सर ब्रिटिश सेना को अप्रत्याशित अचरज का सामना करना पड़ता था और उसकी चाल समझ में नहीं आता था। कुँवर सिंह के साथ लड़ाई में अनेक अंग्रेज सिपाहियों को भागकर अपने शिविरों में शरण लेनी पड़ी। खुद अंग्रेज कमाण्डर अजिमगढ़ के दुर्ग में छिप गया। पर ब्रिटिश सेना कुँवर सिंह को जगीदशपुर वापस जाने से रोकने के लिए कृत संकल्प थी।

इण्डियन म्यूटिनी के लेखक कर्नल सी.बी.मेलसन के अनुसार गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग इस बात से आतंकित थे कि शेर ने

अपना जबड़ा बहुत फैला लिया है। कई अवसरों पर बिहार के न केवल पूर्वी और पश्चिमी बल्कि औपनिवेशिक राजधानी कलकत्ता तक को बूढ़े शेर ने हिला दिया। लॉर्ड कैनिंग ने भारतीय सेना के विशेषज्ञ लॉर्ड मार्क केर को तुरन्त अजिमगढ़ मार्च करने तथा अपराजेय बूढ़े शेर को पिंजड़े में बन्द करने का हुक्म दिया। तुरन्त हथियारों से लैस अंग्रेजों की भारी सेना अजिमगढ़ की सीमा पर पहुँच गई और इनकी बन्दूकें और तोप आग उगलने लगे। इस संघर्ष के बीच सबने देखा कि वृद्ध राजा कुँवर सिंह अपने प्रिय सफेद घोड़े पर सवार हाथ में चमकती तलवार लेकर बिजली की गति से शत्रु सेना को गाजर-मूली की तरह काट रहा है और अनुकरणीय दक्षता के साथ अपने सिपाहियों को निर्देश भी दे रहा है। श्रेष्ठ सेना के बावजूद शत्रु सेना घबरा गई और मार्क केर अपने सिपाहियों के साथ रणभूमि से भागने को मजबूर हो गया। उन्होंने मुख्यालय को सूचित किया कि उनकी मदद के लिए भारी हथियारों के साथ और सेना भेजी जाये। जनरल लुगार्ड के नेतृत्व में एक और सेना टुकड़ी अजिमगढ़ की ओर बढ़ने लगी। शत्रु सेनाओं की आँखों से अपने को बचाते हुए वह जगदीशपुर



पहुँचा और दुराक्रमणकारियों को खदेड़ने के लिए एक योजना बनायी। इसके लिए आवश्यक साहसी सैनिकों को उसने सावधानी से चुना और उन्हें सूचित किया कि वे मार्गमध्य के तानु नदी के पुल की रक्षा करें। अजिमगढ़ दुर्ग में बंदी ब्रिटिश सैनिकों को छुड़ाने के लिए जनरल लुगार्ड के नेतृत्व में लड़नेवाली सेना को उस पुल को पार करना था। जनरल लुगार्ड ने सोचा कि कुँवर सिंह की सेना उसकी सेना को नगर में प्रवेश करने मात्र से रोकने के लिए इसे रोक रही है। और इसी के लिए वह प्रयत्नशील है। वह भांप नहीं पाया कि इसके पीछे एक अलग योजना है।

जनरल लुगार्ड और उसकी सेना ने अनेक प्रयत्न किये, पर पदच्युत राजा की थोड़ी सेना को हराकर वे आगे बढ़ नहीं पाये। पर, अकरमात योजना के अनुसार राजा की सेना वहाँ से हट गयी और पुल के उस पार चली गयी। वहाँ एक भी सैनिक को न पाकर वे आश्चर्य में डूब गये।

कुछ सैनिक जब पुल पर उन्हें रोक रहे थे तब

उन्हें जानकारी मिली कि वृद्ध

राजा और उसके सैनिक

शत्रुओं की

आँखों से बचकर गाजी पुर मार्ग से होते हुए गंगा नदी के तट पर पहुँचनेवाले हैं। तुरंत ब्रिगेडियर डगलस के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना उनकी ओर बढ़ी। मार्ग मध्य में कुछ जगहों पर कुँवर सिंह के अनुचरों के गोरिल्ला हमलों का सामना उन्हें करना पड़ा। फिर भी, जल्दी-जल्दी जाकर एक गाँव में ठहरी राजा की सेना को घेर लिया।

निर्विराम यात्रा के कारण वृद्ध राजा कुँवर सिंह थक गया, इसलिए वह उस ब्रिटिश सेना का सामना नहीं कर पाया, जिसने उसे और उसके सैनिकों को हाथियों और भयंकर हथियारों के साथ घेर लिया था। जब स्थिति गंभीर हो गयी और लगा कि अब पराजय निश्चित है, तब वह अपने सहज व्यूहों को अमल में ले आया। सैनिक अनेक जत्थों में बंट गये और उन्हें हुकम दिया गया कि वे एक निर्दिष्ट प्रदेश में निर्दिष्ट समय पर इकट्ठे हो जाएँ।

इतने में जो सोचा, वही हुआ। राजा की सेना गंगा तट के समीप आयी। उन्होंने अनुमान किया कि ब्रिटिश सेना के वहाँ पहुँचने में अधिक समय नहीं लगेगा। कुँवर सिंह की समझ में आ गया कि इतनी छोटी सेना को लेकर, उतनी बड़ी सेना का सामना करना असंभव है और यह विवेक संगत भी नहीं। आवश्यक नावें भी नहीं थीं, इसलिए राजा ने अफ़वाह फैलायी कि राजा



और उसके अनुचर बालिला के समीप हाथियों पर चढ़कर गंगा को पार कर रहे हैं। उन्होंने जैसा अनुमान लगाया था, वैसे ही यह अफवाह ब्रिटिश सेनाधिपति के कानों में पड़ी। वह इस बात पर बेहद खुश हो गया कि विद्रोही नेता को हाथियों सहित गंगा में डुबोने का अच्छा अवसर हाथ में आया। जल्दी-जल्दी वह सैनिकों सहित बालिला तट के पास गया और झाड़ियों के पीछे छिपकर राजा के आने का बैचैनी से इंतजार करने लगा। किन्तु लंबी प्रतीक्षा के बाद भी न ही राजा आया या न ही उसके सैनिक। उन्हें फिर यह समाचार मिला कि उस प्रदेश से सात मील दूर शिवपुर घाट के पास वे नावों में बैठकर नदी पार कर रहे हैं। ब्रिटिश सैनिक तुरंत वहाँ भी पहुँच गये। तब तक राजा की सेना उस पार जा चुकी थी। अंत में उन्हें राजा की वह नाव दिखायी पड़ी, जो बीच नदी में थी और उस पार पहुँचने के लिए तीव्र गति से जा रही थी। शत्रुओं ने गोलियाँ चलायीं तो वह कारतूस राजा के एक हाथ में जा लगा। उस हाथ से रक्त लगातार बहने लगा। राजा ने दूसरे हाथ से तलवार उठाकर कहा, “गंगामाता, अपने लाड़ले पुत्र की इस अंतिम भेंट को स्वीकार करना।” यह कहते हुए उसने उस हाथ को काट डाला और गंगा जल में छोड़ दिया।

इसके बाद वह नदी के उस पार गया और आठ महीने पहले छोड़ी अपनी राजधानी पहुँचकर शासन की बागडोर संभाली। यह खबर आरा में



ठहरे ब्रिटिश सेना के नायक जनरल ल ग्रैण्ड को बहुत ही बुरी लगी। उसकी समझ में नहीं आया कि बलवान ब्रिटिश सैनिकों से बचकर यह वृद्ध राजा कैसे बच पाया और सिंहासन पर कैसे आसीन हो गया। उसके आश्चर्य की सीमा न रही। वह फिर से अपनी सेना को जगदीशपुर ले गया। पर अजेय घायल वृद्ध राजा ने डटकर शत्रुसेना का सामना किया और उनका नाश कर डाला। सन् १८५८ अप्रैल महीने तक पुनः राज्य का शासन पूरी तरह अपने हाथ में ले लिया। कुछ दिनों के बाद, काटे गये हाथ के घाव के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

इसके बाद उसका छोटा भाई राजा अमर सिंह राजा बना जो धैर्य-साहस में, देशभक्ति में वह अपने बड़े भाई से कम नहीं था। वह तब तक ब्रिटिश सेना से लड़ता ही रहा, जब तक उसके दुर्ग का पतन नहीं हो गया। अंत में वह दुर्ग से बच निकला। फिर इसके बाद क्या हुआ, यह किसी को नहीं मालूम है।

(एके डि)

गर्मी और धूल

“कितना बेरिंग!” स्कूल बस में चढ़ते समय शशांक के मुँह से एक आह निकल गई। “एक और इतिहास का पाठ, इस पर्यटन में यही तो होने जा रहा है!”

“मालूम है”, राहुल भी जैसे कराहता हुआ बोला, “और वह भी क्लास रूम में नहीं, तपते हुए रेगिस्तान के बीचोबीच!”

मोहन शान्त रहा। उसे इतिहास प्रिय था और उसे ऐसा नहीं लगा कि यह सैर उबाऊ होगी।

मोहन अहमदाबाद में अपने स्कूल से जा रही अध्ययन यात्रा में शामिल था। वे लोग धोलाविरा के पुरातत्वीय स्थल का भ्रमण कर रहे थे जो सिन्धु घाटी सभ्यता के समय का पाँच हजार वर्ष पुराना आवास स्थान था।

उनके ग्रुप की नेत्री और मार्ग रक्षक उनकी

इतिहास अध्यापिका पूरी यात्रा में सभ्यता के विषय में समझा रही थी। राहुल जंभाई पर जंभाई ले रहा था। शशांक पोटेटो वेफर्स के चबाने की तेज आवाज में अपनी बात को दबाने की कोशिश कर रहा था। केवल मोहन ध्यान लगाकर सुन रहा था।

आखिर वे अपने भ्रमण के गन्तव्य स्थान पर पहुँच गये। बच्चे लुढ़कते हुए बस से बाहर निकले और उनकी अध्यापिका ने उनका मार्ग दर्शन किया। धोलाविरा ग्रेट कच्छ रन में पहाड़ी पौधों के साथ ऊंची भूमि-खादिर द्वीप पर बसा हुआ है। आवासीय परिसर विशाल था और अवशेष किलाबन्द महल के खंडहर जैसे लगते थे। पुरातत्व की खुदाई के टीले पर सबके साथ खड़े मोहन ने उस क्षेत्रपर सर्वेक्षण की नज़र डाली।

‘पर ऐसी सूखी ऊसर भूमि पर कोई क्यों बसना चाहेगा?’ उसे सन्देह हुआ। कुछ दूरी पर रन की चमकती लवण मरुभूमि वह देख सकता था। निश्चय ही कहीं भूल थी! मोहन जानता था यहाँ कोई नदी नहीं थी और यहाँ वर्षा भी नाम मात्र के



लिए होती थी। वह अपने सन्देह का स्पष्टीकरण चाहता था पर थोड़ी हिचक थी। उसके सहपाठियों के चेहरों पर ऊब और अरुचि स्पष्ट दीख रही थी। राहुल अपने जूते की नोक से धरती पर कुछ चित्र खींच रहा था। किसी के पास पूछने के लिए कोई प्रश्न न था। मोहन ने पहल करने का निश्चय किया।

“परन्तु, मैडम, सिन्धु घाटी के लोग यहाँ क्यों बसे? ऐसी सूखी जगह पर जहाँ पानी न हो?”

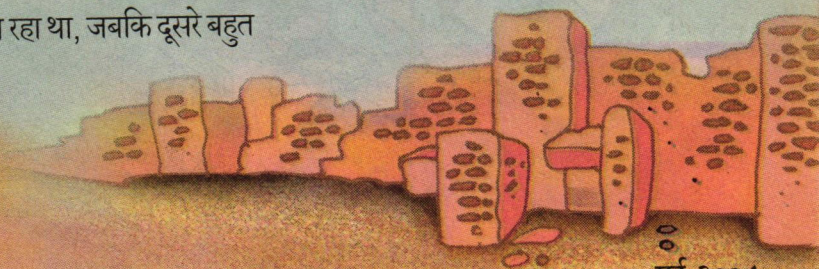
अध्यापिका मुस्कुराई, “यह बड़ा स्मार्ट सवाल है, मोहन!” मोहन गर्व से गुलाबी हो उठा और दूसरे लड़कों की नजरें उस पर घूम गईं। “सबसे पहले तो यह समझो कि ५,००० वर्ष पूर्व धोलाविरा पहुँचना कठिन नहीं था, क्योंकि उस समय ग्रेट रन और लिटल रन अरब सागर की विस्तारित दो भुजाओं के समान थे जिन पर छोटी नावें चल सकती थीं। आज भी यह रन, जो सागर-तल से थोड़ा ही ऊपर है, मौन सून के दिनों में उथले जल भर जाता है। क्योंकि पानी ज्यादातर समुद्र का होता है, सूख जाने पर, यह क्षेत्र, लवण क्रिस्टल्स के गाढ़े निक्षेपण के साथ नमक की मरुभूमि बन जाता है।” बातचीत करते-करते अध्यापिका उन्हें खंडहर से दूर ले गईं। मोहन उसके साथ-साथ चल रहा था, जबकि दूसरे बहुत पीछे थे।

“दूसरी बात यह है कि यह इलाका ५,००० वर्ष पहले बहुत उपजाऊ था”, उसने बात जारी रखी। राहुल और शशांक इस बीच एक दूसरे के साथ उलझ रहे थे, इससे मोहन चिढ़ गया। शशांक ने राहुल को धक्का दे दिया जिससे वह फिसल कर गिर गया। अध्यापिका ने उसे सहारा देकर गिरने से बचा लिया। “राहुल, यदि तुम ५,००० वर्ष पूर्व यहाँ पर गिर जाते तो तुम्हें बचाने के लिए मुझे तैरना पड़ता”, उसने कहा। अब बच्चों ने चकित होकर उसकी ओर देखा। वे लोग सूखे स्थान पर चल रहे थे। मैडम को तैरना क्यों पड़ता!

“यह मन्सर नदी का सूखा तल है, जो कभी पूरे क्षेत्र के लिए ताजे पानी का स्रोत था”, उनके चकित चेहरों को देख मुस्कुराती हुई अध्यापिका बोली। बच्चों ने आश्चर्य के साथ नजरें चारों ओर घुमाईं। नदी? और पानी एक बून्द भी नहीं! “एक दूसरी नदी, मनहर, धोलाविरा से बहती हुई मन्सर से मिलती थी। लोग उन पर पत्थर के बाँध बना कर पानी जमा करते थे जिसे हरप्पा नगर के अन्दर की टंकियों में पहुँचाया जाता था।”

“मन्सर और मनहर नदियों का क्या हुआ?” अब राहुल ने जानना चाहा।

“करीब ५,००० वर्ष पहले सिन्धु घाटी तथा



इसके आस-पास के क्षेत्रों के लोग खेती करने लगे। वक्त के साथ कृषि और मवेशी पालन उनका मुख्य पेशा बन गया। सिंचाई, जलावन, चरागाह तथा अन्य कामों के लिए अधिक जमीनों को खाली करने की आवश्यकता पड़ी। शीघ्र ही जंगल गायब होने लगे। इसलिए इस क्षेत्र में वर्षा कम हो गई। भूजल की सतह नीचे जाने लगी। शीघ्र ही नदियाँ सूख गईं।” अध्यापिका एक मिनट के लिए रुकी। “हवा के साथ सिल्ट उड़कर पूरे क्षेत्र में फैलने लगा। इस प्रक्रिया को ऊसरीकरण कहते हैं। यह, अर्ध-शुष्क भूमि पटल को, पूर्णतया शुष्क बना देता है। धोलाविरा में ऊसरीकरण ३,५०० वर्ष पूर्व हरप्पा काल के अन्त में आरम्भ हुआ। आज यह पूरे विश्व में हो रहा है।”

तभी पास के गाँव का स्थानीय गाइड भोला

लंच के लिए बुलाने आ गया। “इस भूमि को ऊसर होने से बचाने के लिए क्या किसी ने कुछ किया नहीं?” गाइड के पीछे-पीछे जाते हुए मोहन ने जिज्ञासा की। गाँव में लंच इन्तजार कर रहा था। बच्चों को यह देख आश्चर्य हुआ कि खंडहरों के आस-पास के सूखे परिवेश से गाँव बिल्कुल अलग है। यह एक विशाल गाँव था जहाँ की आबादी घनी थी तथा पालतू पशु भरे पड़े थे। इसके अतिरिक्त झाड़ियाँ और कुछ वृक्ष भी थे।

“यह गाँव हराभरा और उपजाऊ लगता है। धोलाविरा की तरह नहीं।” राहुल ने मोहन से धीमे से कहा।

“हाँ, हाँ, है”, भोला बोला। दोनो लड़के खुशी और आश्चर्य से उछल पड़े। उन्हें भोला से उत्तर की आशा नहीं थी। भोला ने आगे कहा, “यदि



हमलोग ध्यान न दें तो यह गाँव भी शीघ्र ही धोलाविरा जैसा सूखा हो जायेगा! परन्तु इसे रोकने के लिए हमलोग कृत संकल्प हैं। कुओं का ताजा जल पीने और घर के काम-काज भर है। खेती में कठिनाई हो रही है। हमलोग मवेशी, भेड़, बकरी, गधे, ऊँट आदि पशुओं को पालते हैं। हमलोगों ने कच्छ के निकट एक सार्वजनिक चरागाह बनाया है। हमलोग गाँव के अन्दर तथा आस-पास की हरियाली को अपने मवेशियों से बचाते हैं। इससे इस स्थान की प्राकृतिक वनस्पतियों की वृद्धि में मदद मिलती है। हमलोगों ने कुछ ऐसी झाड़ियों और पेड़ों को भी रोपा है जो इस स्थान के लिए नये हैं।”

लंच के बाद लड़के भोला के साथ गाँव में घूमते रहे। उन्होंने देखा कि गाँववाले लकड़ी जलाने के बदले उपले को इंधन की तरह उपयोग में लाते हैं। बारिश के पानी का बून्द-बून्द जमा करते हैं। “एक दिन अवश्य ही खेती के लिए पर्याप्त पानी हमारे पास हो जायेगा।” भोला ने लगभग स्वप्नवत् आशा व्यक्त की। गाँववाले अपनी भूमि को उपजाऊ बनाने तथा पानी और हरियाली वापस लाने के लिए कितना संघर्ष कर रहे हैं, बच्चे यह सब देख कर शान्त और गम्भीर हो गये।

जब वे सब शाम को वापस लौटने के लिए बस पर सवार हो रहे थे, तब राहुल और शशांक ने भी स्वीकार किया कि इस सैर ने हमारी आँखें खोल दी हैं। “बोरिंग इतिहास का पाठ नहीं, एह?” मोहन ने मुस्कुरा कर आँखें मिचकाते हुए कहा। कुछ झंपते हुए वे भी मुस्कुरा पड़े।

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

इस महीने की प्रश्नोत्तरी इस क्षेत्र
के जीव जन्तुओं पर केन्द्रित है।



१. घाना पक्षी अभयारण्य कहाँ है?

२. किस पशु के निचले हिस्से के रोएं से ‘कश्मीरी’ ऊन बनाई जाती है?



३. सिंह की औसत आयु अवधि कितनी होती है?

४. भारत में हंसावर कहाँ देखे जाते हैं?



५. भारत में कस्तूरी मृग कहाँ देखे जाते हैं?

६. गोरखर अभयारण्य कहाँ है?



(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

ओलम्पिकः कुछ अल्पज्ञात तथ्य



कुबरटीन की चिन्ता

बैरन पियरे द कुबरटीन को आधुनिक ओलम्पिक खेलों का जनक माना जाता है। क्या तुम्हें मालूम है कि प्राचीन खेलों को पुनर्जीवित करने की प्रेरणा उन्हें कैसे मिली? इस फ्रांसिसी अभिजात ने देखा कि अधिकांश फ्रांसिसी युवक दुर्बल हैं, इसीलिए अंग्रजों के साथ युद्धों में फ्रांस हार जाता है। अतः ओलम्पिक्स की तरह यदि कुछ किया जाये तब इससे उसके देशवासियों को अपने को दुरुस्त-चुस्त रखने का प्रोत्साहन मिलेगा।

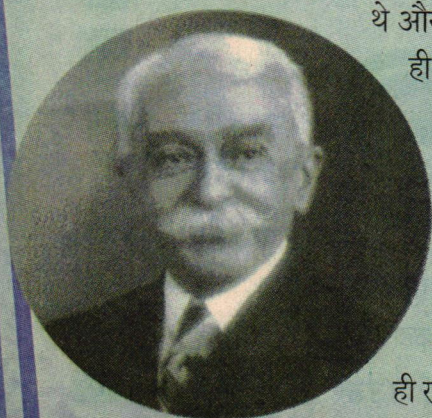
डिनर पार्टी

अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी का गठन एक सम्मेलन तथा डिनर पार्टी के बाद किया गया। पेरिस में कुबरटीन द्वारा आयोजित एक शानदार सम्मेलन में १२ देशों के खेल प्रेमियों ने भाग लिया। सम्मेलन के बाद हुई डिनर पार्टी में २,००० व्यक्ति उपस्थित थे। डिनर के समय युद्ध का संगीत चल रहा था और लोग तलवार बाजी के खेल और नौका विहार के दृश्य का आनन्द ले रहे थे। डिनर के बाद आतिशबाजी की गई। दिन के अन्त तक कमेटी बन गई थी और कुबरटीन इसके सचिव बनाये गये थे।

नो थैंक्स!

जैसा कि तुम सब जानते हो, प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलों का आयोजन एथेन्स में हुआ था। यूनानियों ने जोर दिया कि खेल एथेन्स में ही होंगे जो सभी प्राचीन खेलों का घटना-स्थल रहा है। प्रथम खेल प्रतियोगिता में त्योहार का माहौल अधिक था। यूनान के राजा खेल आयोजन कमेटी के प्रधान

थे और अधिकांश पुरस्कार विजेताओं को स्वयं उनके हाथों से ही दिये गये थे। राजा समापन समारोह में अंतिम भाषण देने के लिए उठे। उन्होंने उन सबको धन्यवाद दिया जिन्होंने शानदार और सफल खेल-समारोह के आयोजन में सहायता की थी। उन्होंने युवराज को विशेषरूप से धन्यवाद दिया जो घटना-स्थल, अनेक देशों से आये प्रतियोगियों की देखभाल तथा उनके आवास और भोजन की व्यवस्था देख रहे थे। पर बैरन द कुबरटीन को धन्यवाद दिये बिना ही राजा बैठ गये। शाही-भुलकड़पन!



चूहे चट कर गये सोने के जेवर!

सौ साल पहले की बात है। राजस्थान में लूनी नदी के किनारे धानी गाँव में लक्ष्मण और मनोहर दो पड़ोसी रहते थे। लक्ष्मण किसान था और खेती से वह अपनी आजीविका चलाता था। मनोहर एक व्यापारी था। दोनों में मित्रवत सम्बन्ध था।

एक वर्ष वर्षा बहुत कम हुई और नदियाँ लगभग सूख गईं। सूखा पड़ने लगा और अकाल की छाया मंडराने लगी। लक्ष्मण और उसकी पत्नी कामिनी ने आपस में विचार-बेमर्श कर यह निश्चय किया कि वे कुछ दिनों के लिए गाँव छोड़कर किसी खुशहाल पड़ोसी गाँव में चले जायेंगे और वहाँ कुछ काम-धन्धा कर लेंगे।

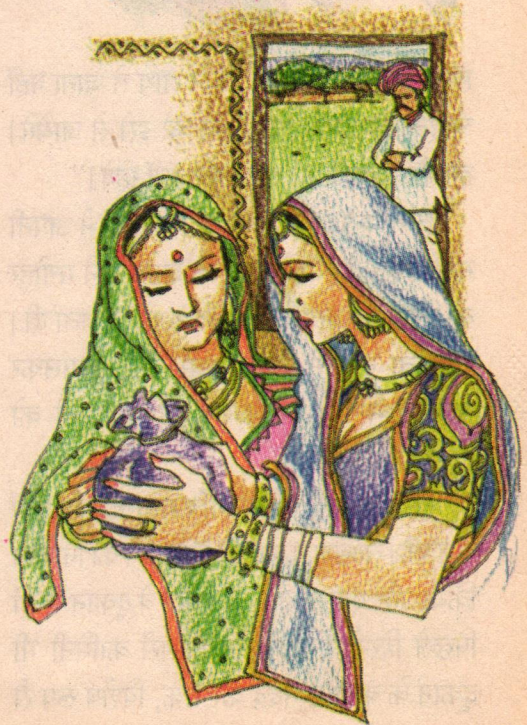
अचानक कामिनी को अपने आभूषणों की याद आई जो उसे अपने घर से विवाह के समय मिले थे। “इन जेवरों को अपने साथ ले जाना सुरक्षित नहीं होगा, पता नहीं कहाँ-कहाँ जाना पड़े।” उसने लक्ष्मण से कहा जो अपने साथ ले जाने के लिए दोने भर आवश्यक सामानों को बाँध रहा था।

लक्ष्मण क्षण भर सोचकर बोला, “कामिनी, तुम जेवरों की एक गठरी बना दो। मैं मनोहर से अनुरोध करूँगा कि वह हमारे वापस लौटने तक इसे अपने पास संभालकर रख ले।”

कामिनी को कोई आपत्ति नहीं हुई, क्योंकि वह जानती थी कि उसके पति का पड़ोसी मनोहर

के साथ मित्रता का सम्बन्ध है। उसने अपने जेवरों की एक गठरी बनाई और अपने पति के साथ मनोहर के घर गई। मनोहर घर पर नहीं था। उसकी पत्नी उनसे मिलने बाहर आई।

“बाई”, कामिनी ने कहा, “मालूम नहीं, गाँव में सूखा कब तक रहेगा, इसलिए हमलोग धानी छोड़कर काम की तलाश में बाहर जा रहे हैं। जब तक हमलोग लौटकर नहीं आते, तब तक के लिए यह गठरी कृपया क्या अपने पास रख लेंगे? इसमें





हमारे जेवर हैं जिन्हें हम अपने साथ ले जाना नहीं चाहते। हमलोग वापस लौट कर इसे ले जायेंगे। हमलोग बहुत दिनों तक बाहर नहीं रहेंगे।”

तभी मनोहर भी आ गया। लक्ष्मण ने अपनी गठरी दिखाकर वही बात, जो कामिनी ने मनोहर की पत्नी को बताई थी, मनोहर को भी बता दी। “चिन्ता न करो, मित्र। हम उन्हें संभालकर रखेंगे,” मनोहर ने लक्ष्मण और कामिनी को विश्वास दिलाया।

अगले दिन वे पड़ोसी गाँव मलारदेश के लिए चल पड़े। लक्ष्मण ने व्यापार आजमाने का निश्चय किया और एक दूकान खोल दी। वे दूकान के ही पिछले हिस्से में रहने लगे जिससे कामिनी भी दूकान के काम में मदद कर सके, विशेष रूप से

उस समय जब दूकान के सामानों की खरीददारी के लिए लक्ष्मण को बाहर जाना पड़ता था।

उन्हें पता न चला कि एक साल कैसे गुजर गया। धानी से लौटनेवालों से मालूम हुआ कि वहाँ थोड़ी-बहुत बारिश हो गई है और सूखे की हालत सुधरने लगी है। फिर भी, लक्ष्मण और कामिनी ने मलारदेश में ही रहने का निश्चय किया। दूसरे साल के अन्त में यद्यपि उसके व्यापार में आशातीत मुनाफा हुआ, उसने दूकान को बेचने का निश्चय किया। ठीक-ठाक चलती हुई दूकान के लिए उसे एक अच्छे ग्राहक से मुँह माँगा दाम मिल गया। नई आशाओं के साथ वे अपने गाँव लौट आये।

इधर मनोहर दो वर्षों में लक्ष्मण के स्वर्णाभूषणों पर नजर गड़ाये था और हड़पने के लिए सोच रहा था। तभी उसे लक्ष्मण के लौटने की खबर मिली। वह लक्ष्मण से मिलने नहीं गया। लक्ष्मण और उसकी पत्नी घर को फिर से ठीक करने में व्यस्त थे, इसलिए उन्हें बुरा न लगा। दूसरे दिन कामिनी मनोहर के घर गई। मनोहर घर पर नहीं था। कामिनी ने उसकी पत्नी से कहा, “बाई, क्या मैं अपने जेवरों को वापस ले सकती हूँ?”

अचानक बाई रोने लगी। कामिनी भौचक-सी रह गई। “क्या हुआ बाई?” उसने पूछा।

“क्या कहूँ, बहन?” बाई ने रोना-धोना बन्द कर अपने आसुओं को पोंछा और यह कहते-कहते फिर सिसकने लगी, “बहन जी, तुम्हारी पूरी गठरी चूहे खा गये। हमलोग शर्मिन्दा थे, इसीलिए मेरा पति तुम्हारे घर जाने में संकोच कर रहा था।”

कामिनी को काठ मार गया। वह आँसू पीकर रह गई। और चुपचाप घर लौट गई। लक्ष्मण जब खेत पर से लौटा तो कामिनी से इस खबर को सुन कर अवाक रह गया। उन दोनों ने सपने में भी ऐसा नहीं सोचा था। उनकी एक मात्र सम्पत्ति यून ही क्षण भर में लुट गई। लक्ष्मण ने, फिर भी, पड़ोसी से झगड़ा करना अच्छा नहीं समझा और इसका बदला लेने के लिए किसी मौके का इन्तजार करने का निश्चय किया। लक्ष्मण भी कुछ दिनों तक मनोहर से मिलने नहीं गया।

दो वर्ष गुजर गये। मनोहर और उसकी पत्नी प्रसन्न थे कि उनकी चाल कामयाब हो गई और पड़ोसी ने अपने सोने के जेवर के लिए हाथ-तोबा नहीं मचाया।

एक दिन लक्ष्मण मनोहर से मिलकर कहने लगा, “क्या मैं आप से एक अनुरोध करूँ, भाई जी?” लक्ष्मण इस प्रकार बोला मानो वह पिछली बातों को भूल चुका है और अब उसे कोई शिकायत नहीं है।

मनोहर यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ मानो वह लक्ष्मण को मदद करने के लिए उत्सुक हो। वह बोला, “कहो, कहो, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?”

“कामिनी की तबीयत ठीक नहीं है और मुझे एक रात के लिए बाहर जाना है। मेरे लौटने तक क्या आप मेरे फार्म की रखवाली करने के लिए अपने बेटे को भेज सकते हैं?”

मनोहर को कोई आपत्ति नहीं थी। उसने अपने छोटे बेटे को लक्ष्मण के साथ बे झिझक भेज दिया। लक्ष्मण ने उस लड़के को अपने एक सम्बन्धी के घर ले गया और उसे वहीं ठहरने के लिए बोला। उसका बेटा वहाँ खुशी से ठहर गया, क्योंकि वहाँ उसके साथ खेलने के लिए अनेक लड़के थे। लक्ष्मण भी एक दिन एक रात के लिए गाँव से बाहर ठहरा और दूसरे दिन अपने घर वापस चला गया। पर मनोहर का बेटा उसके साथ नहीं लौटा। इसे देखकर मनोहर और उसकी पत्नी चकित हुए।

फिर भी वे दोनों दो दिनों तक प्रतीक्षा की पर उनका बेटा कहीं दिखाई नहीं पड़ा। अन्त में वे लक्ष्मण के घर गये और अपने बेटे के बारे में पूछताछ की।

अब रोने-बिलखने की कामिनी की बारी थी। “क्या कहूँ बहन जी, छोटे को एक बहुत बड़ा गरुड़ उठाकर ले गया! मेरा पति इससे इतना



शर्मिन्दा था कि उसे इस दुखद घटना की खबर देने की हिम्मत नहीं हुई।”

मनोहर और उसकी पत्नी यह सुनकर कुछ क्षणों तक निष्प्राण-से हो गये। फिर मानो उन्हें क्रोध आ गया हो, वे लक्ष्मण के आने की प्रतीक्षा किये बिना सीधे गाँव के मुखिया के पास चले गये और इस घटना की शिकायत की। मुखिया को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। “एक दस वर्षीय बालक को गरुड़ उठा कर ले गया? यह मजाक-सा लगता है। चलो, हम लोग उससे मिल कर पूछते हैं कि क्या हुआ और कैसे हुआ।” मुखिया बोला और मनोहर तथा उसकी पत्नी के साथ लक्ष्मण के घर गया।

लक्ष्मण ने आदर के साथ मुखिया का अभिवादन किया। फिर मुखिया ने लक्ष्मण से पूछा, “मनोहर के बेटे के साथ क्या हुआ? और कैसे गरुड़ उठा कर ले गया? क्या यह सच है?”

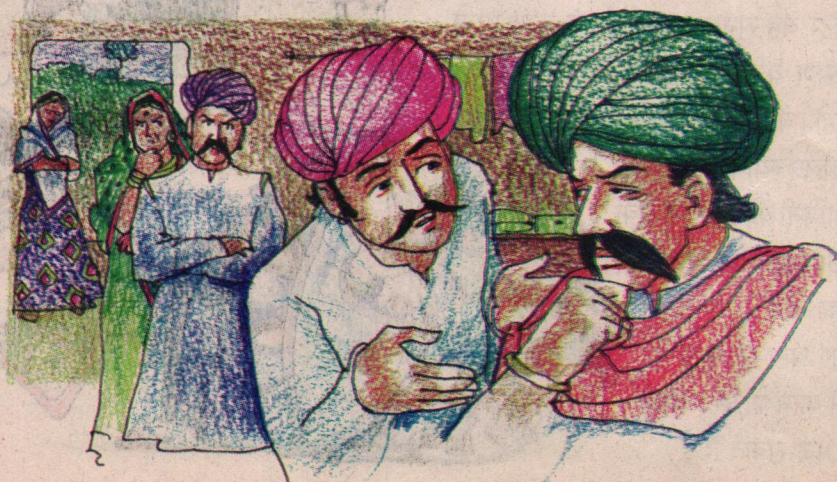
“मुखिया साहेब,” लक्ष्मण ने बिना आश्चर्य किये कहा, “क्या आपको विश्वास होगा कि चूहे

सोने के जेवर खा जायेंगे। यदि यह सम्भव हो सकता है तो लड़के को गरुड़ उठाकर ले जाये, इसमें क्या आश्चर्य की बात है!”

“मैं समझा नहीं लक्ष्मण, इसे ठीक से समझाओ।” मुखिया बोला।

लक्ष्मण ने तब मुखिया को जेवरों की गठरी के बारे में बताया जो उसने मनोहर के पास उस पर विश्वास करके अमानत रखा था, किन्तु वह गठरी उसने यह कह कर नहीं लौटाई कि उसे चूहे खा गये। मुखिया ने मनोहर से इसका जवाब माँगा। कुछ देर तक मनोहर और उसकी पत्नी मौन रहे। पर उसकी पत्नी ने कहा, “मुखिया जी, मैं अभी वह गठरी ले आती हूँ। वह मेरे घर में सुरक्षित पड़ी है।” वह तुरन्त अपने घर की ओर दौड़ी।

“उनका बेटा भी हमारे रिश्तेदार के घर सुरक्षित है। मैं अभी जाकर उसे ले आता हूँ।” लक्ष्मण ने कहा। जाने से पहले मुखिया ने मनोहर से कहा, “याद रखो, बुराई के बीज से अच्छाई के फल नहीं निकलते।”



चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-४

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION, Bangalore

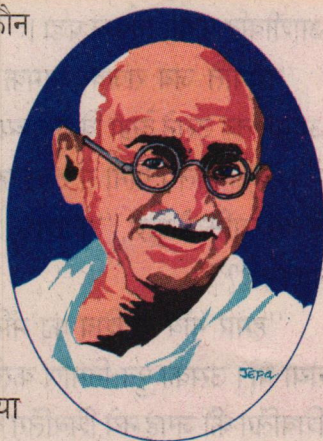
जो सही उत्तर देंगे,
उनमें से एक को २५० रुपये
दिये जायेंगे।*

स्वाधीनता आन्दोलन-इस माह की
प्रश्नोत्तरी विदेशी शासन से भारत की
स्वाधीनता के संग्राम के कुछ चित्रों
की याद दिलाती है।

*यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से
अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों
में से प्रत्येक को रु. ५० की
राशि मिलेगी।

तुम्हें जो करना चाहिये: १. एक कागज पर सारे उत्तर लिख लो; २. अपना नाम, उम्र तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-४ लिखो; ४. तुम्हारी प्रविष्टि ३१ मई २००८ से पूर्व हमलोगों को मिल जानी चाहिये। उत्तर जुलाई २००८ के अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

- जब भारत को आजादी मिली, उस समय कांग्रेस अध्यक्ष कौन थे?
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का १८८५ में आयोजित प्रथम सत्र कहाँ हुआ था? बैठक की अध्यक्षता किसने की?
- कांग्रेस के तीन अध्यक्ष बाद में देश के राष्ट्रपति बने। वे कौन-कौन थे?
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष कौन थी?
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक कौन थे? इसके प्रथम अध्यक्ष कौन थे? किसने 'कांग्रेस' नाम रखने का परामर्श दिया था?
- गाँधीजी को पहली बार कहाँ गिरफ्तार किया गया था?
- गाँधीजी ने भारत छोड़ो आन्दोलन किस नगर से आरम्भ किया था? और कब?
- कांग्रेस के किस सत्र में पूर्ण स्वराज्य को स्वाधीनता संग्राम के उद्देश्य के रूप में घोषित किया गया?





पशुपति निष्कर

दस साल की उम्र में पशुपति हरिधाम की पाठशाला में वेद सीखने के लिए प्रविष्ट हुआ। जब वह बीस साल की उम्र का हो गया, तब किसी गाँव में पुरोहित बनने के लिए गुरुओं का आशीर्वाद पाकर निकल पड़ा।

पशुपति जब राजवर नामक गाँव के पास आया, तब उसने देखा कि एक व्यक्ति अपने हाथ में शिवलिंग लिये पानी में उतर रहा है। पशुपति ने उस व्यक्ति से पूछा, “महाशय, आप क्या करने जा रहे हैं?”

“हमारे गाँव के शिव का मंदिर शिथिल हो गया था। उसका पुनःनिर्माण करके उसमें पुराने शिवलिंग की जगह नये शिवलिंग को प्रतिष्ठापित करने के लिए, काशी से यह शिवलिंग ले आया हूँ। पर, प्रतिष्ठापन के समय तक मैं नहीं आ पाया। इसलिए गाँववालों ने पुराने शिवलिंग का ही

प्रतिष्ठापन कर दिया। इसी कारण से इस शिवलिंग का जल-निमज्जन कर रहा हूँ”, चिंता-भरे स्वर में उस आदमी ने कहा।

“महाशय, काशी से लाया हुआ शिवलिंग सर्वथा पूजा करने योग्य है। एक ही मंदिर में कितने भी लिंग हो सकते हैं। वेदों का भी यही कहना है। पुराने लिंग के साथ इसका भी प्रतिष्ठापन कीजिये। दो शिवलिंगों के मंदिर के नाम से यह गाँव प्रख्यात होगा। शायद यही दैव संकल्प भी होगा। आपके ग्रामीणों को मैं समझाऊँगा। चलिये, गाँव में चलते हैं”, पशुपति ने कहा।

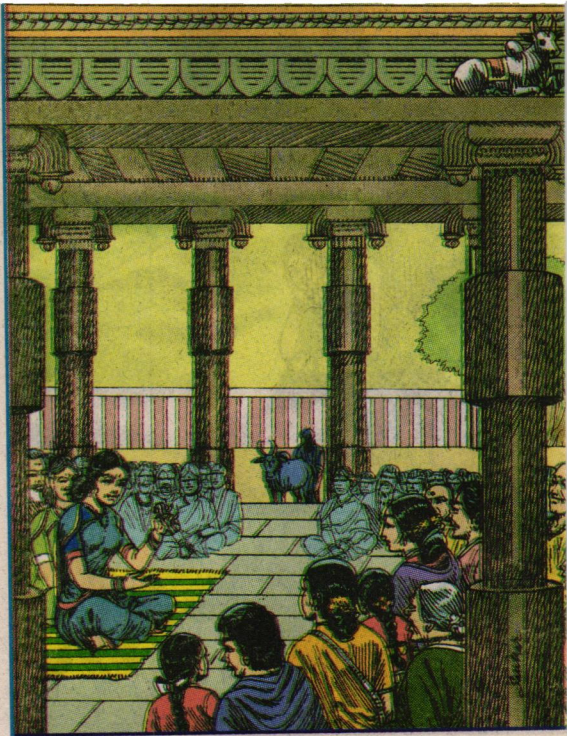
पशुपति की राय को सब ग्रामीणों ने स्वीकार किया। दो शिवलिंगों के प्रतिष्ठापन के बाद नया मंदिर बहुत ही आकर्षक लगने लगा। प्रतिष्ठापन के समय पशुपति ने वेद मंत्रों का उच्चारण किया। जनता को उसके पढ़ने की पद्धति बहुत ही अच्छी

मार्कंडेय

लगी। उन सबने चाहा कि वह उसी गाँव में रह जाए। काशी से जो व्यक्ति शिवलिंग ले आया था, उसका नाम भूषण था और वह बहुत बड़ा भूस्वामी था। उससे लाये गये शिवलिंग को गाँव के मंदिर में ही प्रतिष्ठापित करने में सफलता मिली, पशुपति के कारण। इसलिए उसने एक एकड़ का उपजाऊ खेत उसे दान में दिया जिससे वह उसी गाँव में बस जाए। पशुपति का अपना कोई नहीं था, इसलिए उसने भी उसी गाँव में बस जाने का निर्णय किया।

शिवलिंग के प्रतिष्ठापन के बाद पाँच दिनों तक उत्सव हुए। उस दौरान शिवालय के पुजारी की बेटी दुर्गा ने शिव लीलाओं को लेकर कथा गान किया, जो भक्तों को बेहद पसंद आया। अंतिम दिन उसने नंदीश्वर की कथा सुनायी। उसे सुनकर बसवेश्वर नामक गाँव के एक प्रमुख व्यक्ति ने कहा, “कहते हैं कि कथा सुननेवाले को दूध देनेवाली गाय, और जो कथा सुनाते हैं, उन्हें एक गाभिन गाय दान में देनी चाहिये। इसलिए पुजारी की बेटी को एक गाभिन गाय दान में दे रहा हूँ।”

दान में दी गयी गाय ने थोड़े ही समय के बाद जुड़वें बछड़ों को जन्म दिया। यह जानकर लोग कहने लगे कि नंदीश्वर ने बछड़ों के रूप में जन्म लिया और बछड़ों को भक्तिपूर्वक प्रणाम किया। लोगों ने नंदीश्वर के प्रतिरूपों के इन बछड़ों को शिवार्पण करके दागकर सांड बनाकर मुक्त कर दिया, जिससे वे गाँव में जहाँ चाहें, जा सकें।



जब नादियावालों को यह बात मालूम हुई, तब गाँव के प्रमुखों को नमस्कार करते हुए उन्होंने कहा, “महाशय, शिव नृत्य-प्रिय हैं। हमारे नादिया खेल पर वे प्रसन्न हुए होंगे। अपने एक बछड़े को हमारे सुपुर्द कीजिये। इसे खेल सिखाएँगे और हर शिवरात्रि उत्सव के समय इसे यहाँ ले आयेंगे।”

परंतु, वहाँ उपस्थित पशुपति ने कहा, “यह तो चार साल के बाद की बात है। तभी जाकर ये बछड़े बड़े होंगे। तिसपर ये पुजारी के हैं। उनकी भी राय तो लेनी चाहिये न?” सबने पशुपति की बात का समर्थन किया।

दूसरे दिन शाम को पशुपति जब नदी के किनारे बैठा हुआ था, तब पास के गाँव में जाते हुए नादियावाले दिखायी पड़े। उनके साथ चार-



“कहने के लिए क्या रखा है? यह सब तो हम लोगों का ही काम है। देवलोक के लिए यह कामधेनु है तो यह भूलोक की पशु संपदा है। यह फसलों का मूल आधार है। हमारे पूर्वज इन्हें दैव समान मानते थे। इनकी पूजा करते थे। कुछ लोग तो भगवान को गायों में देखते हैं। दागकर छोड़ा गया सांड इसी संप्रदाय का है। दाग कर छोड़े गये बछड़े को सब लोग नंदीश्वर समझते थे। घर के आंगन में आ जाए तो छाज में चावल भरकर देते थे। वह फसल चरे भी तो उसे मारते नहीं थे। किन्तु अब स्थिति भिन्न होती जा रही है। पशुओं से अपने स्वार्थ वश अधिक से अधिक काम लेते हैं और उसकी देखभाल ठीक से नहीं करते। सांडों के प्रति धार्मिक भावना भी खत्म होती जा रही है। हमलोग बहुत निर्दय हो गये हैं। लगता है, उस सांड को किसी ने खूब पीटा। नादियावाले भी खेल सिखाने के लिए उसे खूब सताते हैं, उसे मारते-पीटते हैं। जब तक बछड़ा खेल नहीं सीखता, तब तक उसे भूखा रखते हैं। इनकी दयनीय दशा को देखकर दया आती है।” दुखी स्वर में पशुपति ने कहा।

“हाँ, आपने बिलकुल ही ठीक कहा। आप तो वेद पंडित हैं। इस दुःस्थिति से इन्हें उबारने के लिए आपने अवश्य ही कुछ सोचा होगा”, कहती हुई दुर्गा वहाँ से निकली।

पशुपति सोच में पड़ गया। सवैरे तक वह एक निर्णय पर आया और गाँव के प्रमुखों से मिलकर कहा, “भूषणजी ने दान में जो खेत दिया,

पाँच नादिया सांड भी थे। उनके साथ एक बछड़ा भी था, जो लंगड़ाते हुए जा रहा था। उस बछड़े को देखकर उसका मन खिन्न हो उठा। पशुपति को लगा कि वह उसी की ओर बड़ी ही दीनता के साथ देख रहा है। थोड़ी देर बाद उसने एक सांड को खेत में चरते हुए देखा। वह उसके पास गया और उसे गौर से देखते हुए उसकी पीठ को थपथपाया। फिर वह नदी के किनारे पर आ गया। वह सांड उसके पीछे-पीछे चला आया।

नदी के किनारे एक बड़ा बरगद का पेड़ था। चूँकि वह शनिवार का दिन था, पुजारी की बेटी दुर्गा बरगद के पेड़ की पूजा करने वहाँ आयी हुई थी। पुजारी की बेटी ने देखा कि उस सांड के शरीर पर चोटें हैं। उसने पशुपति से पूछा, “ऐसा कैसे हुआ?”

उसे पशु पोषण के लिए उपयोग में ले आना चाहता हूँ। गाँव में घूमते रहनेवाले सांडों की जरूरतों की देखभाल करते हुए गोशाला का प्रबंध करना चाहता हूँ और उस किसान को वह खेत दे देना चाहता हूँ जो पशुओं की देखभाल अच्छी तरह से करेगा।”

“तब अपनी जीविका के लिए क्या करोगे?” गाँव के एक प्रमुख ने पूछा।

“मैंने नहीं सोचा था कि वह खेत मुझे दिया जायेगा। यह भगवान की दया से प्राप्त हुआ है, जिसकी मुझे आशा नहीं थी। उस खेत को नंदीश्वर की सेवा में समर्पित करूँगा। मैंने जो वेद विद्या सीखी, वही मेरे जीवन-निर्वाह का कोई मार्ग दिखायेगा। इसलिए मैंने निर्णय किया है कि मैं उस खेत को समर्पित कर इस गाँव को छोड़ आज ही मैं कोई और गाँव चला जाऊँगा”, पशुपति ने कहा।

उसका यह निर्णय सुनकर लोगों को बहुत दुःख हुआ। वे लोग नहीं चाहते थे कि पशुपति उनका गाँव छोड़कर कहीं जाये।

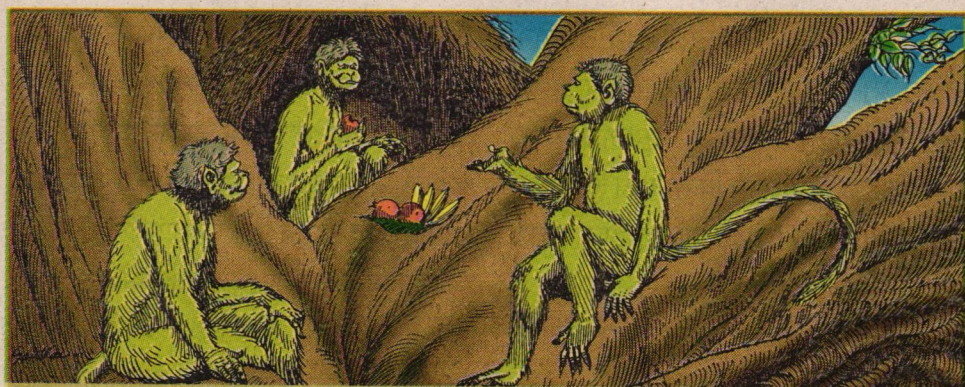
वहाँ उपस्थित शिवालय के पुजारी ने उसकी बातें सुनकर कहा, “पुत्र पशुपति, वेद मंत्रों के साथ-साथ पशु संपदा पर तुम्हारा जो प्रेम और श्रद्धा है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है। तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो तुम जैसे उत्तम व्यक्ति से अपनी इकलौती बेटी दुर्गा का विवाह कराना चाहता हूँ। यदि तुम्हें स्वीकार हो तो इसे अपना सौभाग्य समझूँगा। तुम्हें कहीं और जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमारे ही साथ रहो, पुरोहित का काम संभालो और सुखी जीवन बिताओ।”

“आपकी पुत्री को यह स्वीकार हो तो अपना भाग्य समझूँगा, क्योंकि उसे सरस्वती की कृपा प्राप्त है।” पशुपति ने मुस्कुराते हुए कहा।

अच्छे मुहूर्त पर गाँव के प्रमुखों के समक्ष दुर्गा-पशुपति का विवाह निराडंबर संपन्न हुआ।

वधू-वर ने निश्चय किया कि बसवेश्वर के दिये गये गाय-बछड़ों की देखभाल का भार स्वयं उठायेंगे। उनके निर्णय की प्रशंसा गाँववालों ने की। पशु-पोषण के लिए उसने जो निष्कर दिया, इसलिए पशुपति निष्कर कहलाने लगा।





कर्म का फल

ब्रह्मदत्त काशी राज्य पर शासन करते थे। उन दिनों बोधिसत्व ने एक वानर के रूप में जन्म लिया। उस का नाम नन्दीय था। नन्दीय का एक छोटा भाई था। वे दोनों हिमालय में अस्सी हजार वानरों के नेता थे। नन्दीय की अंधी माँ की देखभाल की जिम्मेदारी उसी पर थी।

नन्दीय और उसका छोटा भाई प्रतिदिन फलों के बागों से मीठे और रसीले फल तोड़कर लाते और उन्हें दल के सेवकों के द्वारा अपनी माँ के पास भेजा करते थे।

एक दिन नन्दीय अपनी माँ को देखने आ पहुँचा। उसे देखकर नन्दीय अचरज में आ गया और पूछा, “माँ, तुम कितनी कमजोर हो गई हो? हम रोज तुम्हारे पास अच्छे-अच्छे फल भेजते हैं। क्या तुम उन्हें नहीं खाती? तुम्हारी सेहत का ध्यान रखना हमारे लिए सब से बढ़कर है।”

“नहीं बेटा, मेरे पास एक भी फल नहीं पहुँचा।

अगर फल मिल जाते तो मैं यों सूखकर कांटा क्यों बन जाती? मैं जानती हूँ कि तुम अपनी माँ के लिए जान भी दे सकते हो फिर यह तो फलों की बात है।” माँ ने कहा।

नन्दीय ने सोचा-विचारा। सच्ची बात उसकी समझ में आ गई। उसी वक्त वह हिमालय पहुँचा। अपने छोटे भाई को सारा हाल सुनाकर कहा, “भैया, मैं घर पर रहकर माँ की देखभाल करूँगा। तुम यहीं पर रहकर इस दल का नेतृत्व करो।”

“भैया, मैं भी तुम्हारे साथ घर पर रहकर माँ की देखभाल करूँगा।” छोटे भाई ने कहा।

इस प्रकार दोनों एकमत होकर घर पर पहुँचे। अपनी माँ के वास्ते एक पीपल पर अच्छा निवास बनाकर आँख की पुतली की भांति उसकी देखभाल करने लगे।

उन्हीं दिनों एक ब्राह्मण तक्षशिला नगर में एक प्रसिद्ध गुरु के यहाँ विद्याभ्यास कर रहा था। विद्या

जातक कथा

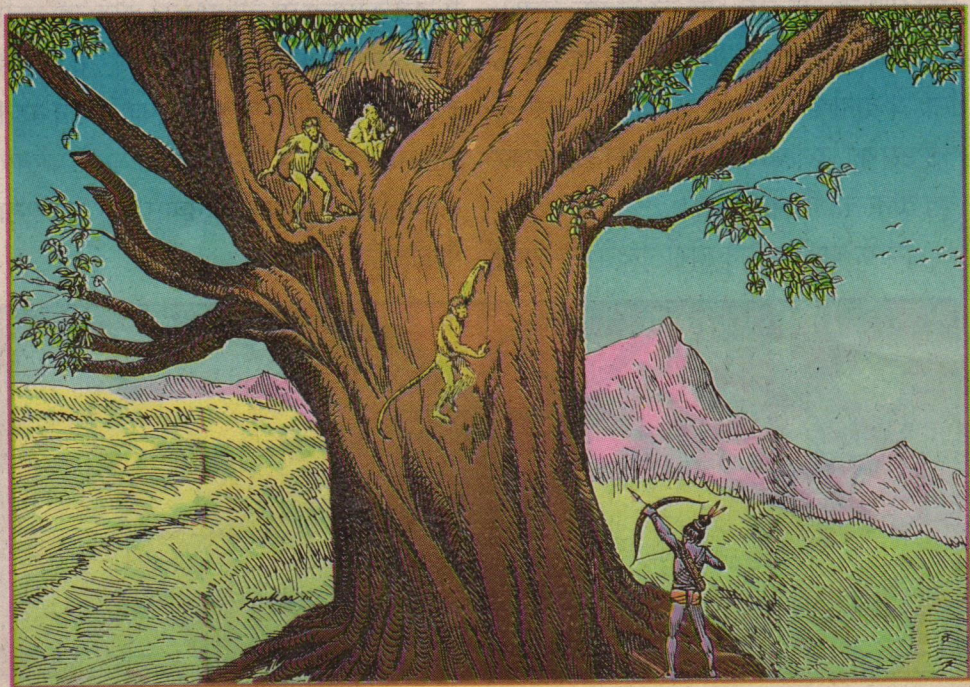
के समाप्त होने के बाद उसने अपने आचार्य से घर लौटने की अनुमति माँगी। उन्होंने शिष्य को समझाया, “बेटा, तुमने अपनी शिक्षा पूरी कर ली है। यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है। तुम उद्वण्ड प्रकृति के हो। जल्दबाजी में आकर कभी कोई अनुचित काम न करना। बाद में पछताने पर भी कोई लाभ न होगा। यह मेरा उपदेश है।” यह कहकर उसको आशीर्वाद दिया।

ब्राह्मण युवक अपने आचार्य से अनुमति लेकर काशी नगर पहुँचा। विवाह करके गृहस्थ बन गया। पेट भरने का कोई उपाय नहीं सूझा। इसलिए धनुष-बाण लेकर बहेलिये का पेशा अपना लिया। वह जानवरों और पक्षियों का शिकार बेचकर अपने परिवार का पालन-पोषण

करने लगा। ब्राह्मण के लिए शिकार पाप के समान है, यह जानते हुए भी उसने यह पेशा अपनाया। गृहस्थी चलाने की मजबूरी ने उसे लाचार कर दिया।

एक दिन सारे जंगल में उसे कोई जानवर हाथ न लगा। निराश होकर घर लौटते हुए उसने एक पेड़ की ओर देखा। उस समय नदीय और उसका छोटा भाई अपनी माँ को फल खिलाकर बैठे हुए थे। उन लोगों ने बहेलिये को देखा।

बहेलिये ने सोचा कि खाली हाथ घर कैसे लौटे! यों विचार कर उसने बूढ़ी वानर की ओर तीर का निशाना लगाया। इसे नन्दीय ने देख लिया। तुरन्त उसने अपने छोटे भाई से कहा, “लो देखो, बहेलिये ने हमारी माँ की ओर तीर का



निशाना लगाया है। मैं उसके प्राण बचाने के लिए तीर के सामने आ जाऊँगा। मेरे मरने के बाद तुम्हें माँ का पालन-पोषण करना होगा।” यह कहकर वह जल्दी-जल्दी पेड़ से उतरकर नीचे आ गया।

उसने बहेलिये से कहा, “भाई, तुम मेरी माँ को मत करो। वह बूढ़ी है। उस की जगह तुम मुझे मार डालो।”

इसपर कठोर हृदयवाले बहेलिये ने “अच्छी बात है” कहकर नन्दीय पर बाण चलाया।

पर वह अपने वचन पर टिका नहीं।

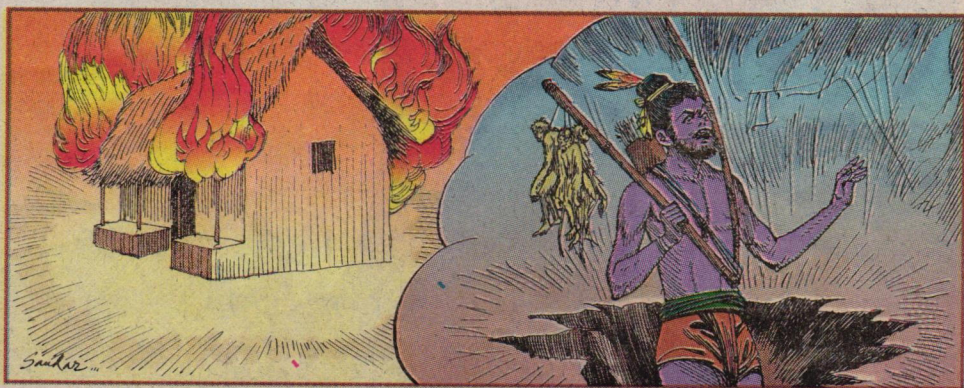
नन्दीय के मरते ही उसने वृद्ध वानर पर अपने बाण का निशाना लगाया। उसे देखकर छोटा वानर पेड़ से उतर आया और उसने भी वही बात दोहराई जो नन्दीय ने कही थी। बहेलिये ने उसकी बात मान ली और छोटे भाई को भी मार डाला।

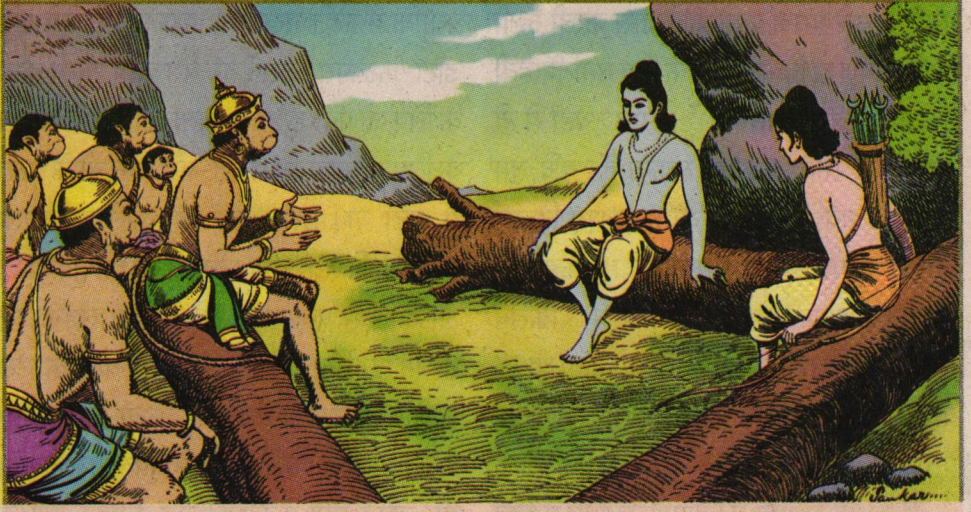
बहेलिये ने सोचा, ‘मेरे और मेरे परिवार के लिए ये दोनों बन्दर पर्याप्त हैं।’ लेकिन दूसरे ही पल उस का दिल बदल गया। उसने निर्दय होकर वृद्ध वानर को भी मार डाला।

इस के बाद वह उन तीनों बन्दरों की लाशों

को अपने कन्धे पर लटका कर घर की ओर चल दिया। गाँव की सीमा पर पहुँचते ही उसे यह खबर मिली कि उस का घर जल गया है और उसकी पत्नी और बच्चे घर के अन्दर फँस गये हैं।

यह खबर पाकर वह छाती पीटता हुआ घर की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ पहुँचकर वह घर के अन्दर घुसा, पर वह जहाँ पर खड़ा था, वहाँ की जमीन अचानक फट गई और वह अन्दर धंसने लगा। इसपर पाताल में जाते हुए उसने अपने आचार्य के उपदेश का स्मरण किया, ‘मेरे आचार्य ने उसी दिन बताया था कि क्रूर कर्म नहीं करना चाहिए। इसके बाद पछताने पर भी कोई फायदा नहीं है। मैंने जो पाप किये, उनका प्रायश्चित्त कर रहा हूँ। मैंने व्यर्थ में ही निरपराध वानरों को सताया। यदि मैं उन्हें न मारता तो मेरी तो कोई हानि नहीं होती पर उन बेचारों की जानें बच जातीं।’ यों सोचते हुए वह नरकलोक में चला गया, जहाँ उसने बहुत कष्ट सहे। उसके बुरे कर्मों का फल उसके परिवार को भी मिला। बुरे कर्म करनेवाले का अन्त ऐसा ही होता है।





रामायण

सम्पाति ने भाई की मृत्यु का दुखद सम्वाद सुनकर, आँसू बहाते हुए कहा, “जटायु को मारनेवाले उस दुष्ट रावण से बदला भी लेना चाहूँ तो मैं नहीं ले सकता, क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ। मेरे पंख भी नहीं हैं। क्या कर सकता हूँ? पहले वृत्रासुर के वध के दिनों में हम दोनों, एक दूसरे से होड़ करते हुए आकाश में गये। दुपहर की गरमी जटायु सह न सका और वह बेहोश-सा हो गया। तब मैंने उसको अपने पंखों की छाया दी थी। इस कारण ही मेरे पंख जल गये और मैं इस विंध्या पर्वत पर गिर गया। इतने दिन यहीं रहा और मुझे मेरे भाई का समाचार ही न मिला।”

यह सुन अंगद ने कहा, “यदि तुम जटायु के भाई हो, तो बताओ वह रावण कहाँ रहता है?

यहाँ से वह कितनी दूर है। उसने सीता को कहाँ रखा है? सीता किस स्थिति में होगी? क्या तुम यह सब बता सकते हो?”

“बेटा, सचमुच मुझे राम का ही काम करना चाहिए था। पर बूढ़ा हूँ, कमजोर हूँ। इसलिए कम से कम मुख से ही सहायता करूँगा। यह सच है कि रावण सीता को ले गया है। वह लंका में रहता है। वह द्वीप यहाँ से एक सौ योजन दूरी पर समुद्र में है। लंका द्वीप में लंका नगरी भी है। उसका निर्माण विश्वकर्मा ने किया है। वहाँ उसने सोने के दरवाजे, सोने के प्रांगण और प्राकार बनाये। सोने की उस लंका में ही रावण के अन्तःपुर में, सीता राक्षस स्त्रियों के बीच में दुखी बैठी है। राक्षस स्त्रियाँ रावण के आदेश पर सीता का मन बहलाती

किष्किन्धा काण्ड - ७

रहती हैं, उसे प्रसन्न करने का प्रयास करती रहती हैं और रावण से विवाह करने के लिए मनाती रहती हैं। क्योंकि गृध्र जाति का हूँ, इसलिए यहाँ से ही रावण और सीता को देख सकता हूँ। यदि तुम तुरंत वहाँ गये, तो तुमको सीता अवश्य दिखाई देगी।” सम्पाति ने आश्वासन देते हुए कहा।

तब जाम्बवन्त ने सम्पाति से पूछा, “किसने रावण को, सीता को उठाकर ले जाते देखा था?” बाकी वानर, सम्पाति की बातों को सुनने की प्रतीक्षा करने लगे।

“वह भी सुनाता हूँ। सुनो। क्योंकि मैं हिल डुल नहीं पाता हूँ इसलिए रोज मेरा लड़का नियमित रूप से मेरे लिए कुछ खाने को लाता रहता है। परन्तु वह एक दिन सूर्यास्त के बाद सिर्फ देरी से ही नहीं आया बल्कि, खाली हाथ भी आया।

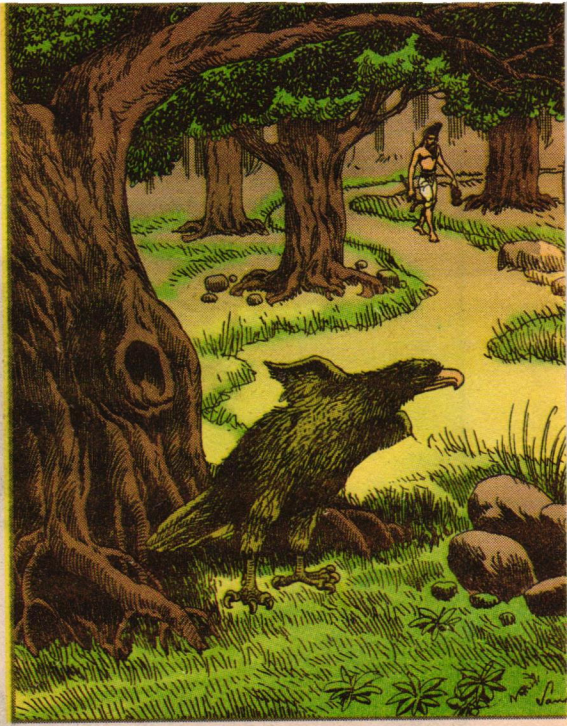
क्योंकि मैं बहुत भूखा था, इसलिए मैंने उसे खूब डाँटा-फटकारा। उसने तब मेरा क्रोध शान्त करने के लिए जो कुछ हुआ था, बताया। वह मेरे भोजन के लिए महेन्द्र पर्वत में बड़े-बड़े जन्तुओं के रास्ते में खड़ा था। उस समय एक काले शरीरवाला सूर्योदय की तरह चमकनेवाली स्त्री को लेकर वहाँ आया। उस पुरुष और स्त्री को मेरा लड़का मेरे भोजन के लिए लाना ही चाहता था, कि उस काले पुरुष ने बड़ी नम्रता से रास्ता देने के लिए कहा। यह देख कि उसने विनयपूर्वक रास्ता माँगा था, उसने मार्ग दे दिया। यह देखकर वहाँ के मुनियों ने सुपार्श्व से कहा, ‘आज तुम भाग्य से जीवित निकल गये हो। तुम से रास्ता माँगनेवाला और कोई नहीं रावण था और वह राम की पत्नी सीता को उड़ा ले जा रहा था।’ यह सब हो गया



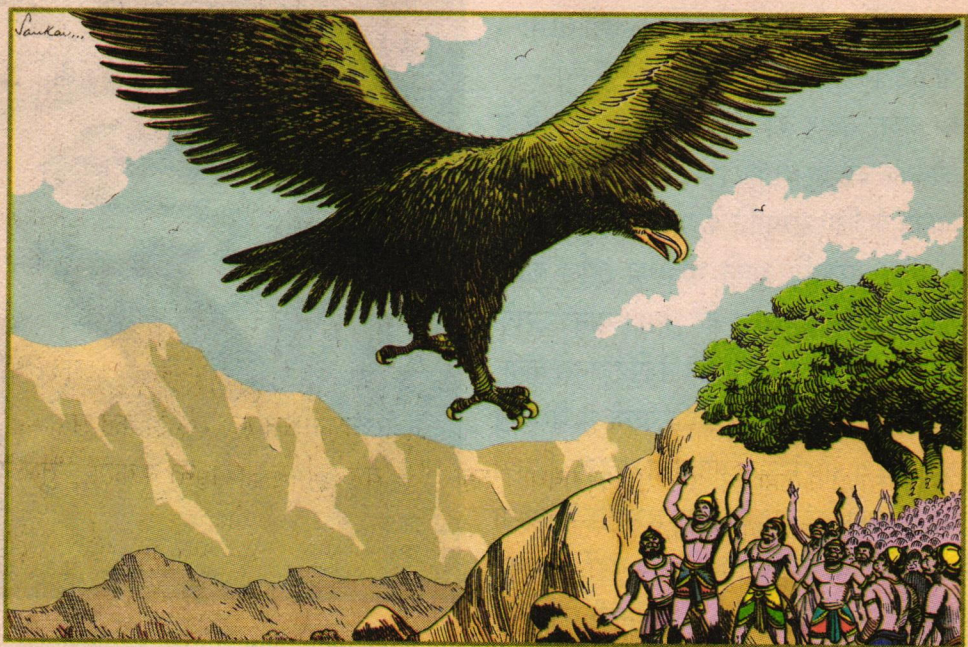
था, इसीलिए ही वह मेरे लिए भोजन नहीं ला पाया था। उसने बताया...।”

वानर रावण का पता और सीता के बारे में जानकर बड़े प्रसन्न हुए। वे और भी विस्तार से जानने के लिए सम्पाति के पास बैठे रहे।

फिर सम्पाति अपने भाई का तर्पण करके स्नान करके एक जगह बैठ गया। वानर उसके चारों ओर बैठ गये। सम्पाति ने फिर उनसे कहा, “मैंने बताया था कि सूर्य की गर्मी से मेरे पंख जल गये थे और मैं यहाँ गिर गया था। छः दिन मैं बेहोश रहा। फिर बाद में मालूम हुआ कि मैं विंध्या पर्वत श्रेणियों में गिर गया हूँ। तब यहाँ, निषाकर महर्षि का आश्रम था। वे बड़े तपस्वी थे। पहले से ही मैं और जटायु उस महर्षि को जानते थे। मैं धीमे-धीमे घिसटता-घिसटता उनके आश्रम के पास गया और उनके दर्शन के लिए एक पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद, महर्षि स्नान करके उस तरफ आये। वे सीधे आश्रम गये, फिर वापस आकर उन्होंने पूछा कि मैं किस काम पर आया हूँ। उन्होंने मेरी दुस्थिति का कारण पूछा। उन्होंने मुझे पहचाना भी। मैंने उनसे जो कुछ गुजरा था, वह बताया। मैंने उनसे यह भी कहा कि मैं आत्महत्या करना चाहता हूँ। मैं अपना दुख रोक न सका। फिर उन्होंने आँखें मूँदकर, ध्यानस्थ होकर कहा, ‘आत्म-हत्या न करो। निराश न हो, धैर्य रखो। तुम्हारे पंख फिर आ जायेंगे। भविष्य में दशरथ नाम का एक राजा होनेवाला है। उसका लड़का राम पत्नी के साथ



वनवास के लिए आयेगा। जब वे जनस्थान पर होंगे, तो रावण नामक राक्षस राजा उसकी पत्नी को उठा ले जायेगा। राम द्वारा वानरों को उनको खोजने के लिए भेजने पर वे तुम्हारे पास आयेंगे। तुम उनको सीता के बारे में बताओ। क्योंकि तुम कहीं जा नहीं सकते हो, इसलिए तुम यहीं रहो।’ यह सब आठ हजार साल पहले की बात है। मुझे यह बतानेवाले महर्षि सौ साल बाद इस शरीर को छोड़ गये। मैं दुविधा में पड़ गया। रावण बलशाली हो, तो हो, परन्तु जब मेरे लड़के ने बताया कि वह सीता को उठाकर ले जा रहा था, तो मैंने उसे डाँटा कि क्यों नहीं उसने सीता को छुड़ाने के लिए रावण से युद्ध किया। मेरे भाई ने इस काम में रावण से लड़ते हुए अपने प्राण छोड़ दिये, पर मेरे लड़के ने कुछ भी नहीं किया। मैंने अपने लड़के



को डाँटते हुए कहा कि इसमें सन्देह नहीं कि रावण बड़ा पराक्रमशाली है। पर तुम भी कम नहीं हो। तुम्हें सीता को उसके चंगुल से छुड़ाना चाहिये था, उलटा उसे जाने के लिए मार्ग दे दिया। सुग्रीव ने अच्छे ही लोगों को चुनकर भेजा है। तुम लोग शूवीर हो। लंका जाकर सीता को देख आओ! सीता अवश्य दिखाई देगी। फिर राम और लक्ष्मण के बाणों से रावण अवश्य मारा जायेगा। मेरे भाई को मारने का बदला भी इस तरह निकल जायेगा।”

जब सम्पाति, वानरों से यह कह रहा था, तो उसके नये पंख आने लगे। इसे देखकर सम्पाति ने खुश होकर कहा, “देखा, निषाकर महर्षि ने जो कहा था, वह बिलकुल ठीक निकला। उन्होंने यह भी बताया था कि जिस काम पर तुम जा रहे हो, वह भी अवश्य होगा। इसलिए तुम अपने कार्य

में जरूर सफल होंगे।” कहता, वह आकाश में उड़ गया।

वानर भी सोत्साह दक्षिण की ओर निकल पड़े। सीता का पता मालूम हो गया था, इसलिए वे खुश होकर चिल्लाये, उछले-कूदे। वे चलते-चलते दक्षिण समुद्र के किनारे पहुँच गये।

तब विशाल समुद्र को देखकर, वानरों को भय हुआ। उस समुद्र में एक सौ योजन दूर लंका नगरी है, उसको कैसे पार किया जाये? सब बड़े-बड़े वानर सागर की उमड़ती लहरों को देखते हुए इस समस्या पर विचार करने लगे।

अंगद ने बड़े-बड़े वानरों की सभा बुलाकर कहा, “हम इस समुद्र को बिना पार किये, सीता को नहीं देख सकते। उनको देखे बगैर वापस जाने से तो अच्छा यही है कि हम यहाँ उपवास

करें। समुद्र को देखकर डरने से कोई फायदा नहीं है। हमें कम से कम एक निश्चित जानकारी तो मिल गई है। अब हम अन्धेरे में नहीं भटक रहे हैं। हमें इसके लिए सम्पाति का कृतज्ञ होना चाहिये। और आगे के काम की योजना बनानी चाहिये। अब यह बताओ तुम में से कौन-कौन कितनी कितनी दूर उछल सकता है। समुद्र को पार कर लँका पहुँचनेवाले पर ही हम सब का क्षेम निर्भर है।

गज ने कहा कि वह दस योजन कूद सकता है। गगक्ष ने कहा कि बीस योजन। गवय ने कहा कि तीस योजन, शरभ ने कहा कि चालीस योजन। गन्धपादन, कैन्द, द्विविद ने क्रमशः कहा, पचास, साठ और सत्तर। सुषेण ने कहा कि वह अरसी योजन कूद सकता है।

जाम्बवन्त ने कहा, “एक समय था कि जब मैं कितनी भी दूर कूद सकता था। त्रिविक्रम ने जब वामन का अवतार लेकर, तीनों लोकों को तय कर लिया था, तब मैंने उनकी प्रदक्षिणा की थी। अब बूढ़ा हूँ। नब्बे योजन से अधिक नहीं कूद सकता।”

तब अंगद ने कहा, “मैं आसानी से सौ योजन दूर कूद सकता हूँ। पर वापस आ सकूँगा कि नहीं यह निश्चित रूप से नहीं कह सकता।”

यह सुनकर जाम्बवन्त ने कहा, “तुम हम में से एक को लँका भेज सकते हो। पर हम तुम्हें कैसे भेज सकते हैं? यह नहीं हो सकता।”

“जब मैं नहीं भेजा जाऊँगा और आप में से भी कोई जा नहीं सकता है तो उस हालत में हमें



यहीं उपवास करना पड़ेगा। इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है,” अंगद ने कहा।

थोड़ी देर तक सब वानर चुपचाप ही सोचने लगे। जाम्बवन्त को अचानक हनुमान की याद आई। “अरे, हनुमान कहाँ है? उससे तो पूछा वह नहीं?” वह बोला और इधर-उधर नजर दौड़ाने लगा। हनुमान कुछ दूरी पर अकेला बैठा था। जाम्बवन्त को पूरा विश्वास था कि हनुमान इस काम को सफलतापूर्वक कर सकता है। इसलिए उसने हनुमान की ओर इशारा करते हुए अंगद से कहा, “इस बात पर तुम कुछ न सोचो। हम में से सफलतापूर्वक काम करनेवाला, देखो, वह दूर चुपचाप अकेला बैठा है।”

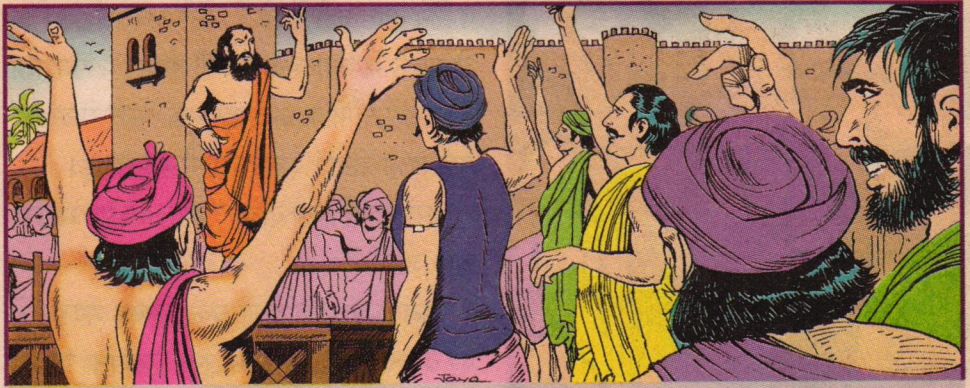
उसने हनुमान के पास आकर कहा, “हम सब यहाँ माथापच्ची कर रहे हैं और तुम इस तरह यहाँ बैठे हो, जैसे कुछ नहीं हो रहा हो। तुम तो पैदा होते ही सूर्य को फल समझकर, उसको निगलने के लिए आकाश में उड़े थे न? यदि तुम इस महासमुद्र को नहीं पार कर सकोगे, तो और कौन कर सकेगा? तुम्हारा चातुर्य देखने के लिए ये सब

वानर प्रतीक्षा कर रहे हैं। तो उठो, अपनी शक्ति दिखाओ।”

ये बातें सुनकर, हनुमान का शरीर फूलने लगा। उसका शरीर विशाल होने लगा। अंग-प्रत्यंग बढ़ने लगे। सिर की ऊँचाई आसमान को छूने लगी। हनुमान के शरीर को फूलता देख वानर जयजयकार करने लगे। उनकी प्रशंसा को सुनते-सुनते हनुमान की शक्ति भी बढ़ती गई। उसने जोश में कहा, “हाँ, मैं इस समुद्र को यूँ पार कर जाऊँगा। चाहो, तो मैं सूर्य के साथ पूर्व से पश्चिम तक पहुँचकर, दुपहर को फिर सूर्य का सामना कर सकता हूँ। शुभ शकुन दिखाई दे रहे हैं। मैं अवश्य रावण की लंका में जाकर सीता देवी को देखकर आऊँगा। इतना ही नहीं, राम की कृपा से रावण का दर्प भी तोड़कर आऊँगा। तुम सब दुखी न हो।”

यह सोच कि जब वह भूमि से उड़ेगा, तो भूमि काँप उठेगी, वह महेन्द्र पर्वत के शिखर पर जा चढ़ा। जब वह वहाँ चल रहा था, तो उसके पैर पड़ते ही बड़ी-बड़ी चट्टानें चूर-चूर हो गयीं और महेन्द्रगिरि के जीव-जन्तु डरकर चारों ओर भागने लगे।





सारंग का वैराग्य

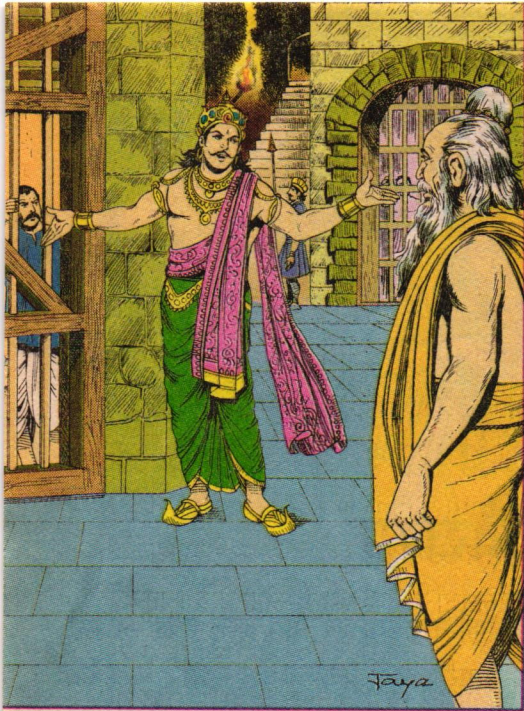
सुदुर्भ देश में सब प्रकार की कुरीतियाँ फैली थीं। छुआछूत था। हरिजन गाँव से दूर बसाये गये थे। दहेज देने पर ही कन्याओं के विवाह संपन्न हो सकते थे। अधिकारी घूस लेते थे। गरीब व अमीर सभी लोग दारू पीने के आदी हो गये थे। धन के साथ स्वास्थ्य भी खो बैठते थे।

उसी देश में सारंग नामक एक महात्मा थे। उन्होंने निश्चय किया कि देश से कुरीतियों का दूर करना है तो जनता में व्याप्त अशिक्षा के भूत को दूर भगाना है। इसलिए उन्होंने साक्षरता के प्रचार तथा कुरीतियों का निर्मूल करने के लिए भारी पैमाने पर आन्दोलन चलाया। अनेक लोगों ने उनके आन्दोलन चलाया। अनेक लोगों ने उनके आन्दोलन का विरोध किया, फिर भी युवकों ने अधिक संख्या में उनका समर्थन किया। राजा ने उस आन्दोलन को दबाने का प्रयत्न किया।

सैनिकों ने जनता का साथ देकर राजा को गद्दी से उतारा। सारी प्रजा ने एक स्वर में कहा कि सारंग ही देश का शासन अपने हाथ में ले और वह राजा बन जावे।

मगर सारंग राज्य की कामना नहीं रखते थे। उन्होंने अपने मुख्य अनुचर चरितार्थ को राजा बनाया और उसे हिदायत दी कि वह जनता में कुरीतियाँ फैलाने से रोके। तब वे तपस्या करने के ख्याल से जंगलों में चले गये। उन्होंने जंगल में आश्रम बनाकर पंद्रह साल तक तपस्या की। इसके बाद उनके मन में सुदुर्भ देश का हाल जानने की इच्छा हुई। सारंग ने चरितार्थ के पास अपने शिष्य को भेजकर उसके द्वारा अपनी यह इच्छा प्रकट की कि वह एक बार देश की हालत देखना चाहते हैं। यह खबर मिलते ही चरितार्थ स्वयं एक रथ पर सवार हो सारंग को देखने आया।

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी



कठिन दण्ड नहीं दे रहे हैं। ऐसे अपराधों के लिए छे महीने से ज्यादा दण्ड नहीं होता। मैं समझता हूँ कि इन लोगों के बन्दी हुए एक बफते से ज्यादा नहीं हुआ होगा।” चरितार्थ ने समझाया।

सारंग चौंककर बोले, “क्या अब हम यहाँ से चले जायें?”

इसके बाद वे दोनों एक विवाह मण्डप में पहुँचे। चरितार्थ समझाने लगा “वर्णांतर विवाह करनेवाले लोगों के लिए ही इस मण्डप में सुविधाएँ दी जाती हैं। वर्णांतर विवाहों को प्रोत्साहित करने के हेतु हमने इस मण्डप का निर्माण कराया है। अब तक मण्डप में एक सौ से ज्यादा विवाह हो चुके हैं। प्रत्येक विवाह के लिए हम एक हजार सिक्कों का पुरस्कार दिया करते हैं। दस दिन पहले इसमें अंतिम विवाह संपन्न हो गया है...” ये बातें सुन सारंग ने अपनी आँखें पोंछ लीं। चरितार्थ ने सोचा कि सारंग की आँखों से आनंद बाष्प छलक आये हैं। वहाँ से वे दोनों क्रीड़ा स्थल पर पहुँचे जहाँ पर कई लोग खेल रहे थे।

चरितार्थ ने उत्साह में आकर कहा, “महात्मा, देखते हैं न, आप जो परिवर्तन चाहते थे, वह इस देश में कितने शीघ्र हो गया है।”

“वह कैसा परिवर्तन है?” सारंग ने पूछा।

“यहाँ पर खेलनेवालों में उच्च वर्णों के लोगों के साथ निम्न जाति के लोग भी हैं।” चरितार्थ ने उत्तर दिया।

“आप कैसे जानते हैं कि इन में निम्न वर्ण के लोग भी हैं?” सारंग ने पूछा।

सारंग अपने आश्रम को शिष्यों के हाथ सौंपकर चरितार्थ के रथ पर चल पड़े।

सुदर्भ देश में सारंग का भव्य स्वागत हुआ। सारंग जब देश का भ्रमण कर रहे थे तब चरितार्थ भी उनके साथ था। सारंग सीधे कारागार में पहुँचे और वहाँ के अपराधियों को देख विवरण पूछा। उनमें दहेज लेनेवाले, शराबी, घूस लेनेवाले अधिकारी और अन्य अपराधी भी थे।

चरितार्थ ने समझाया, ‘राजभटों ने कुशलता पूर्वक अपराधियों का पता लगाकर उन्हें बन्दी बनाया है, इस कारण अपराध करके बच जाना उसके लिए कठिन होता जा रहा है।’

“ये लोग कब से कारागार में हैं?” सारंग ने पूछा।

“आप के आदर्शों को दृष्टि में रखकर हम

“यहाँ पर उच्च वर्ण तथा निम्न जाति के लोगों को मिलकर खेलना है। इसी के वास्ते इस क्रीड़ा स्थल का प्रबंध करके छुआछूत का निर्मूलन कर रहे हैं। इसका पता आसानी से लगाने के हेतु उच्च वर्णवाले नीले रंग की पोशाकें तथा निम्न जाति के लोग हरे रंग की पोशाकें पहनकर खेलते हैं।” चरितार्थ ने समझाया।

इस पर सारंग की आँखों में जल भर आया और उनकी दृष्टि धुंधली पड़ गई।

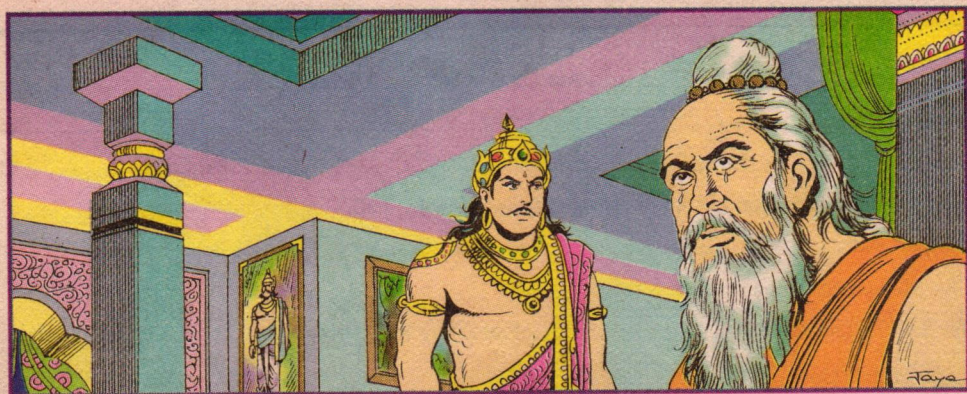
“कल हम देश का पर्यटन शुरू करेंगे!” चरितार्थ ने कहा।

“हमने जो कुछ देखा, वही पर्याप्त है! पर्यटन करने की मेरी इच्छा जाती रही। मेरी वापसी यात्रा का प्रबंध कीजिए।” सारंग ने कहा।

“आप यह क्या कहते हैं गुरुदेव?” चरितार्थ ने आश्चर्य में आकर पूछा।

“मैंने सोचा था कि इस देश में निम्न जाति की बात कहीं सुनाई तक न दे। यहाँ पर तो छुआछूत का पता जनता को अब तक लग रहा है और उनके साथ मिलकर रहने में बड़प्पन की बात समझी

जाती है। यदि वर्णांतर विवाहों के लिए राज्य की तरफ से पुरस्कार का प्रबंध है तो इसका मतलब है कि जनता ने अब तक ऐसे विवाहों का प्रारंभ तक नहीं किया है। दहेज, घुसखोरी, दारू पीना वगैरह कुरीतियाँ अब तक जनता में मिटी नहीं हैं। इसलिए उन्हें दण्ड दिये जा रहे हैं। राजा होकर भी आप इस रहस्य को समझ न पायें, मगर इस बात का गर्व कर रहे हैं कि आप ने कुछ साथ लिया है। कुरीतियाँ कानूनों के द्वारा खत्म नहीं होतीं। जनता के मन में परिवर्तन लाना होगा। मेरे प्रशिक्षण में आप जनता के नेता बने हैं, आप के शासन की यह हालत है, तो किसी दूसरे के राजा बनने पर वह और अधिक साध लेगा, इस बात की जरा भी मुझे आशा नहीं है। मैंने आप को जनता का सही नेता समझा, मेरा यह निर्णय गलत निकला। एक बार मैंने भूल की है तो इस बात पर भरोसा क्या है कि मैं फिर भूल नहीं करूँगा। इसलिए मेरे मन में वैराग्य का उदय हो गया है। आप अपनी इच्छा के अनुसार शासन कीजिए, मैं अपने आश्रम को लौट जाता हूँ।” सारंग ने अपने विचार स्पष्ट बताये।



CALL IT A MAGAZINE PLUS!



**MUCH MORE
THAN A MAGAZINE
FOR TINY-TOTS –
TO KINDLE YOUR
YOUNG ONE'S
IMAGINATION**



**A one year
subscription will be
an ideal birthday gift
to your dear ones.**

The young and the old
react thus:

The info-park pages are very
useful as they help us to know
various facts about different
topics. (January 2008)

- S. Athreya Uppili (8), Bangalore

The page for Parents and Teachers is a
wonderful addition to the unique
Junior Chandamama. Very often, I see
my son poring over the pages when he runs to me for
a meaning, explanation or clarification. (January 2008)

- Kamaljit Arora, Chandigarh

For your gift subscriptions, send the coupon below along with the remittances.

Name of child Age Class School

Home Address

Pin Code

Please enter 1 year subscription (12 issues delivered at door) for Rs. 170/-

DD / Cheque* No.....on.....Bank for Rs.....enclosed.

* Add Rs. 90/- on outstation cheques.

M.O. for Rs. 170 sent from Post Office Receipt No. Date

Cheque / DD / MO in favour of Chandamama India Ltd.

Mail to : Chandamama India Ltd., JVL Plaza, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet

Chennai - 600 018. Note : Allow 4 weeks for the first copy to arrive by post.

Date

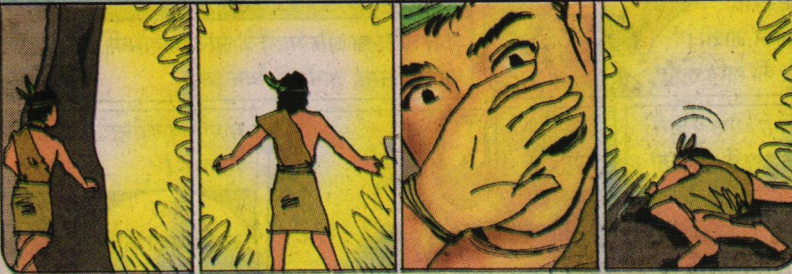
Signature

अपराजेय गरुड़



आदित्य के जंगली मार्ग-रक्षक ने उसे गुफा मन्दिर के मार्ग में स्थित गिरिजा माता का मन्दिर दिखाया। वह अन्दर जाकर ध्यान करता है। उसे एक आवाज सुनाई पड़ती है और प्रतिमा गरुड़ का आकार ग्रहण करती दिखाई पड़ती है। वह आकार उसे सुरक्षा और सफलता का आश्वासन देता है।

जंगली मार्ग-रक्षक मन्दिर के चतुर्विध व्यास दीप प्रकाश को देखकर बेहोश हो जाता है।



मन्दिर के अन्दर...



हे प्रभु!
कितना
परिवर्तन है!



आदित्य वरदान में मिली सभी शक्तियों को धारण कर लेता है।



वह ध्यान से उठकर बाहर आता है और एक चील को मन्दिर के चारों ओर मंडराते देखता है।

वह चील उड़कर उसके कंधे पर आकर बैठती है।



अब मैं शैतान की खबर ले सकता हूँ।

जंगली युवक होश में आता है और मन्दिर के अन्दर प्रवेश करता है।



राजकुमार यहाँ नहीं है।

जंगली युवक अपने सरदार के पास जाता है।



क्या हुआ?
राजकुमार कहाँ है?

मार्ग में उसने हमलों का मन्दिर देखा और वह अन्दर चला गया। वहाँ एक तेज प्रकाश था। मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ा। और मैं बेहोश हो गया।



बाद में वह अदृश्य हो गया।

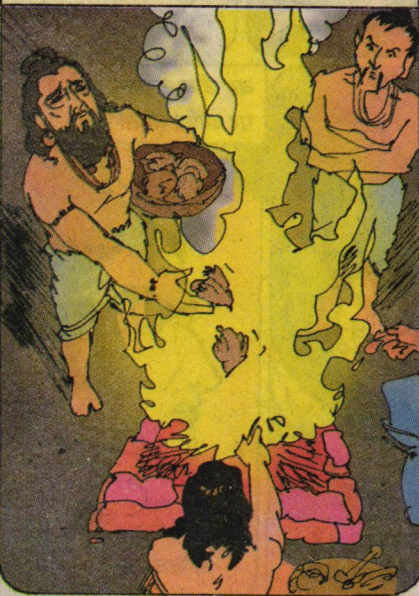


अपने ढेर सारे आदमियों को ले जाओ। उसे किसी प्रकार की हानि न हो!



शीघ्र ही धनुष और भालों के साथ आदमियों का एक समूह जाने को तैयार था।

गुफा मन्दिर में बलि-यज्ञ जारी है। एक पुजारी अग्नि कुण्ड में चिंगनों को फेंक रहा है। जैसे ही अग्नि ज्वाला ऊपर उठती है...



...वह उन्माद के वश में चिल्लाता है।



हमलों का शत्रु आ रहा है। उसे मन्दिर में प्रवेश न होने दो।

आमपुरुष रवीन्द्रदेव की ओर देखता है।

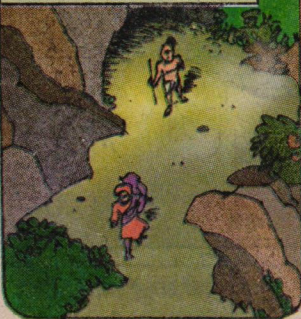


कुछ स्वयंसेवकों को ले जाओ और उसे रोको।

कौन? आदित्य? वह यहाँ है!

उसे पकड़ लो। बलि के लिए उसके हाथ-पाँव बाँध दो।

रवीन्द्रदेव स्वयंसेवकों को लाने के लिए बाहर आता है।



आमपुरुष को आघात लगता है।



यह ज्योतिर्मय आकार क्या है जो मेरी ओर आ रहा है?

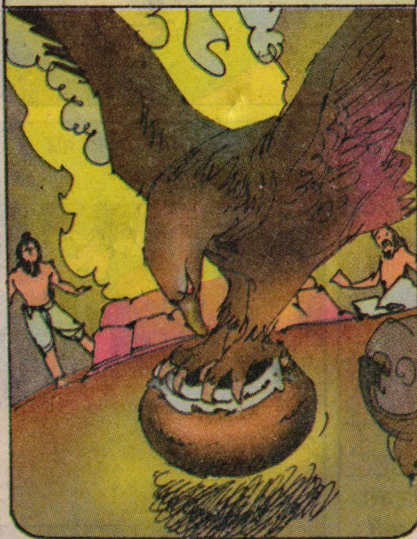
अचानक चील उड़ जाती है...



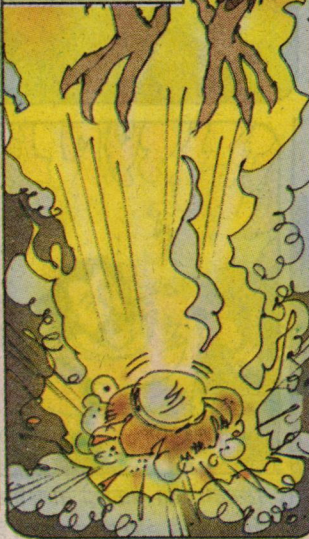
...वृत्त में मंडराती है...



...नागबन्धु की भस्मी के कलश को पंजे में उठा लेती है...



...और यज्ञ कुण्ड में गिरा देती है।



बहरा कर देनेवाली आवाज से वहाँ के लोग डर जाते हैं।



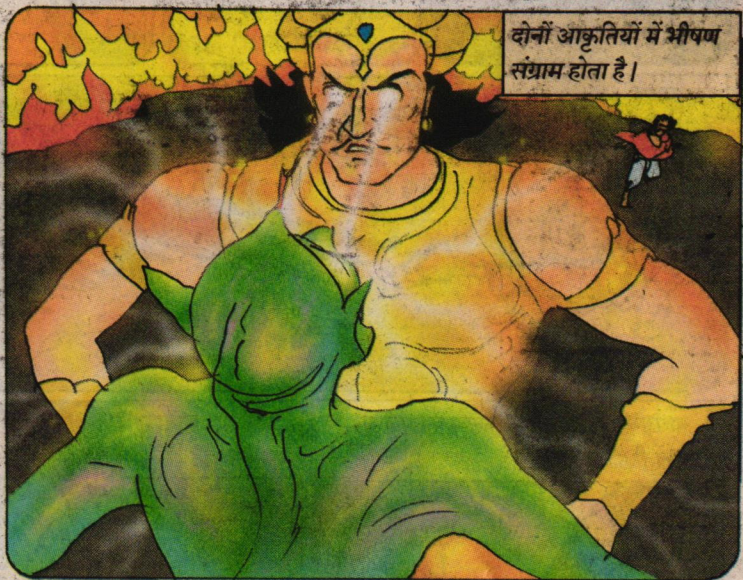


अग्निकुण्ड से एक विकराल आकार उठता है।



वह आकार ज्योतिर्मय आकृति के निकट आया है

तुम! मेरे शत्रु!



दोनों आकृतियों में भीषण संग्राम होता है।

नरेन्द्रदेव आवाजें सुनता है और मन्दिर से चिह्छाता है।

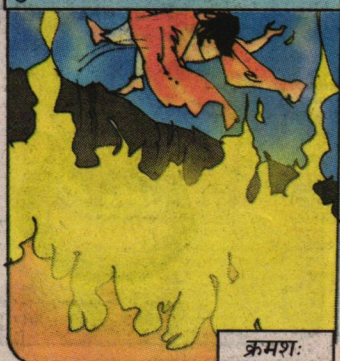


यह संग्राम किनके बीच?



नरेन्द्रदेव हका-बका हो जाता है और उस संग्राम से दूर चला जाना चाहता है, तभी...

... वह लड़खड़ा जाता है और यज्ञ कुण्ड में गिर जाता है।



क्रमशः

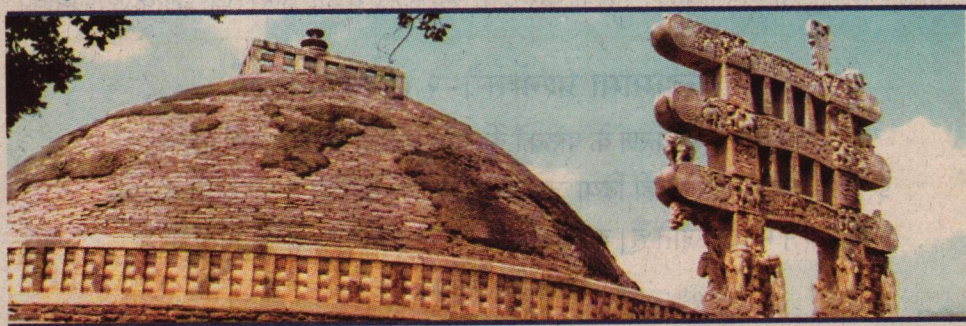
साँची स्तूप

साँची भोपाल से लगभग ४५ कि.मी. दूर है। वहाँ का स्तूप भारत के बौद्ध तीर्थ स्थानों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। बौद्ध धर्म के हजारों अनुयायी विशेष रूप से बुद्ध जयन्ती के अवसर पर जो मई महीने में आता है, वहाँ दर्शनार्थ आते हैं।

सम्राट अशोक (२७३-२३६ बी.सी.) जिन्होंने बुद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था, विदिषा की राजकुमारी से विवाह किया। उन्होंने निकटवर्ती साँची में १२ मी. से अधिक ऊँचा पत्थर का स्तम्भ बनाने का निश्चय किया जिस पर अपने फरमान खुदवाये। स्तम्भ के पास, लकड़ी की रेलिंग से घिरे ईंट के स्तूप को बी.सी. की दूसरी और पहली शताब्दी में सुंग वंश द्वारा बड़ा किया गया। यही साँची में प्रधान स्मारक है। गोलाकार गुम्बज का व्यास ३६.६ मीटर तथा ऊँचाई १४.४६ मी. है। गोलक के चारों ओर चार विशाल तोरण हैं जो सुसज्जित उत्कीर्णन द्वारा अलंकृत हैं। प्रत्येक तोरण में दो स्तम्भ हैं जिन पर तीन समस्तोय छड़ हैं। छड़ों तथा स्तम्भों पर उत्कीर्ण की गई नक्काशी में बुद्ध के पूर्व जन्मों (जातक) का वर्णन है।

साँची में सुंग काल के दो और स्तूप हैं। परवर्ती वर्षों में स्तूपों के इर्द-गिर्द मन्दिरों, मठों तथा महलों के निर्माण किये गये, जिनमें से अधिकांश उपेक्षित और भग्नावशेष के रूप में १८१८ तक बचे रहे, जब तक एक अंग्रेज, जनरल टेलर की उस पर नजर न पड़ी। उसके आदेश पर बड़े पैमाने पर वहाँ खुदाई की गई। अन्ततः १९१२ और १९१९ के मध्य सर जॉन मार्शल ने स्मारकों को वर्तमान रूप में प्रस्तुत किया।

साँची स्तूप स्मारकों को विश्व धरोहर स्थल के रूप में स्वीकार करते हुए, यूनेस्को ने “चारों तोरणों पर अलंकृत मूर्तिकला की समृद्धि” का विशेष रूप से वर्णन किया है और कहा है कि अपनी “आयु और गुणवत्ता” के कारण साँची के भवन भारत में अद्वितीय हैं।



समाचार पत्रों में बच्चे

बाल लेखक



क्या तुम विश्वास करोगे? अर्चना श्री रामुलु (६) को, जो चेटीनाड विद्याश्रम, चेन्नई की प्रथम कक्षा में पढ़ती है, अपनी प्रथम पुस्तक 'मेरी जापान यात्रा' की लेखिका होने का गौरव प्राप्त है। यह यात्रा विवरण उसने जापान की यात्रा करने के बाद लिखा, जहाँ उसके पिता सेवारत हैं। वह "जहाँ जहाँ गई, सभी स्थानों को पसन्द किया, खास कर डिस्नी लैण्ड, जहाँ मैंने और मेरे भाई ने अनेक खेल खेले, इनो जू शिनागवा एक्वैरियम, मेरीन म्यूजियम आदि।" उसकी शिक्षकों का कहना है कि उसका चित्रण सजीव है और उसने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में शब्दों और शैली का चुनाव ईमानदारी से किया है।

प्रश्नोत्तरी का चैम्पियन

भारत में जन्मा डेविड वर्गिज (१०) बी बी सी प्रश्नोत्तरी शो-जूनियर मास्टमाइण्ड का सबसे कम उम्र का चैम्पियन है। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में शामिल होते समय अपने विशेष विषय के रूप में उसने जुरासिक पार्क ट्रिलॉजी चुना था। अन्तिम परीक्षाओं के लिए स्टार वार्स के डायरेक्टर जॉर्ज लुकास का जीवन और कृति उसने चुना। अन्तिम परीक्षा में अपनी पसन्द के विषय में १५ अंक प्राप्त कर तथा सामान्य ज्ञान में १६ अंक प्राप्त कर उसने तीन अन्य लड़कों को हराया। उसकी सफलता का राज के बारे में पूछने पर उसने प्रश्नोत्तरी के संचालक जे.आर.आर.टोकियन को कहा, "रीडिंग, रीडिंग, रीडिंग।" उसकी पसन्द के लेखक हैं एच.जी. वेल्स तथा इसाक आसिमोव।



चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-२ (मार्च २००८)

हमारे हिन्दी संस्करण के पाठकों की कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पाई गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। पाठकों के हित में प्रश्नोत्तरी के उत्तर पृष्ठ ३५ में दिये जाते हैं। चन्दामामा की सभी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहिये।

आप के पन्ने

विज्ञान तुम्हारे लिए

एक चिपकू सवाल

यदि टेफ्लोन के साथ कुछ नहीं चिपकता तो वे टेफ्लोन को तब से कैसे चिपकवाते हैं? टेफ्लोन रासायनिक रूप से किसी चीज से नहीं बंधता, पर इसे यांत्रिक रूप से छोटे कोनों और दरारों में दबाया जा सकता है। इस आश्चर्यजनक पदार्थ का आविष्कार अमेरिका के डॉ. रॉय प्लंकेट द्वारा किया गया।

टेफ्लोन दुनिया का सबसे अधिक फिसलने-वाला पदार्थ है। वैज्ञानिक ने १९३८ में एक शीतलक गैस तैयार करते समय संयोगवश इसका आविष्कार किया। गैसों के भिन्न-भिन्न सम्मिश्रणों के साथ प्रयोग करते हुए उन्होंने एक प्रकार के सम्मिश्रण को एक पात्र में रात भर छोड़ दिया। अगले दिन उसने देखा, गैस उड़ गये थे और एक फिसलनदार मोम-सा ठोस पदार्थ बच गया था। यह क्षयकारी रसायनों में मिलाने पर भी उसका रूप ज्यों का त्यों बना रहा। आज पूरी दुनिया में टेफ्लोन कोटिंग का प्रयोग प्रचुर रूप से प्रचलित है।



CHANDAMAMA

May 2008 and VCD
Combo Pack

Enjoy 60 minute
fulfilled programme

Magic by

Milind Mohare



Storytelling by

Jeeva Raghunath

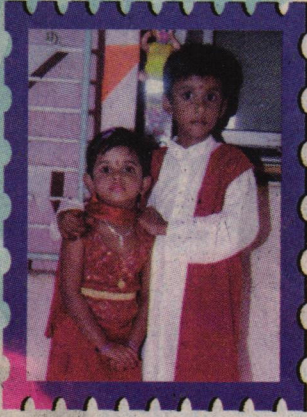


Watch the worlds of
wizardry and fantasy
come together



Caution: This Video CD cannot be played on any Audio CD players.
This VCD can be played back on any VCD, DVD players, Multimedia
systems and PPC with MPEG card interactive.

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता



P. RAJALAKSHMI

क्या तुम
कुछ शब्दों में
ऐसा चित्र
परिचय बना
सकते हो,
जो एक दूसरे से
संबंधित चित्रों के
अनुकूल हो?



K. BALU



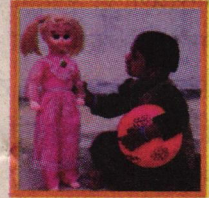
चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

जे वि एल प्लाज़ा, छठी मंजिल, नं. ६२६ (पु.नं. ५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का
पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

हर्षिता यादव
c/o श्री प्रदीप यादव
१०२, राइट गंज
गाजिया बाद (उ.प्र.)

विजयी प्रविष्टि



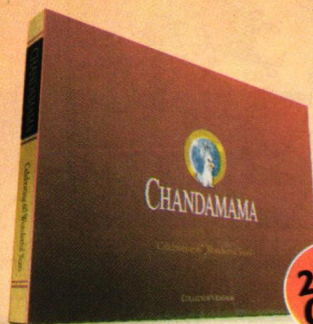
मेरा गुड़डा मुझे डराये।
मेरी गुड़िया खूब हँसाये ॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. भरतपुर, राजस्थान; २. तिब्बती हिरण; ३. २० और ३० के बीच;
४. कच्छ का रन, गुजरात; ५. कश्मीर; ६. कच्छ का छोटा रन।

VALOUR & ADVENTURE HUMOUR & MYSTERY MORALS & HEROES

Enthralling stories of six decades come together
in one incomparable collection



The Chandamama
60th Anniversary Collectors Edition

Limited Copies!

HARDCOVER

Cover Price: Rs 449

**20%
OFF!**

You pay: Rs 360 only!
Includes shipping and handling



COLLECTORS EDITION

Take a trip down memory lane with the magazine's oldest editors,
discover the beginnings of Chandamama and view some of the most
memorable cover art across the decades.

Just fill in and mail the order form below to avail of a **20% DISCOUNT** on the 60th Anniversary Collectors Edition

I want a copy of the Chandamama Collectors Edition.

Name

Address

City State Pin

Telephone Mobile Email

Enclosed Cheque/DD for Rupees

Cheque/DD no Favours **Chandamama India Ltd**
on bank. (Send At-Par cheques or add Rs 60 for non-Chennai cheques)

Please mail the order form to :

Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai – 600 018.

Tel: (044) 24334455 Telefax: 24322103 Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

*This offer is valid until 31st May '08 only. Allow 3 weeks for delivery.



बुब्बा के कारनामे



तीन लड़के फटे हुए अग्निशामक बम्बे के पास खुशी से नाच रहे हैं।



हा! ही!! हा!!!

फटे हुए बम्बे की मरम्मत के लिए आते हुए प्लमर मिस्त्री को लड़कों ने नहीं देखा।



वह उन्हें भगा देता है।



शू! भागो यहाँ से!

वह काम में लग जाता है। लड़कों के चेहरे लटक जाते हैं।



मजा किरकिरा हो गया!

लड़कों ने बुब्बा को कार के हुड पर बैठे देखा।



मुझे इनको उत्साहित करना चाहिये।

उधर देखो, बुब्बा!

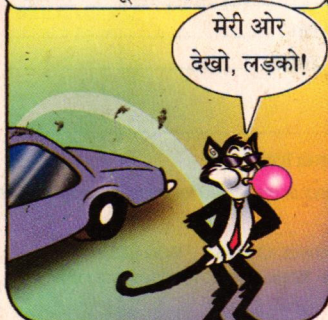
बुब्बा उनके पास बुब्बालू के पैकेट्स फेंकता है। वह स्वयं एक बबबल गम मुँह में डालता है।



खुश हो जाओ, लड़को! जूसी मस्ती का मजा लो!

धन्यवाद, बुब्बा!

बुब्बा कूद कर नीचे आता है और एक बबबल फूँकता है।



मेरी ओर देखो, लड़को!

बबबल फट जाता है! उससे एक गुलाबी झरना बहने लगता है।



जूसी मस्ती!

अब लड़कों के पास उनके बबबल गम से बाहर बहते हुए जूसी मस्ती के झरने हैं।



आह! जूसी मस्ती!